ADDITIONAL®
PRACTICE

हिंदी 9

कोर्स–'बी'

mRrjekyk

DNA education
New Delhi-110002

स्पर्श : भाग 1 – गद्य खंड

पाठ–1

दुख का अधिकार

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं क्योंकि पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। पोशाक ही मनुष्य के लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती हैं। कभी-कभी यही पोशाक बंधन और अड़चन बन जाती है, जब हम थोड़ा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणी के लोगों की अनुभूति को समझना चाहते हैं।

उत्तर (ii) पोशाक अड़चन तब बन जाती है जब हम थोड़ा नीचे झुककर समाज कीं निचली श्रेणी के लोगों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को एक-एक ज़मीन पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोकती है।

उत्तर (iii) वायु पतंग को एकाएक भूमि पर नहीं गिरने देतीं।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बेचने के लिए रखे जान पड़ते थे। ऐसा इसलिए जान पड़ता था कि खरबूज़ों के समीप ही एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। जो खरबूज़ों की मालकिन ही लगती थी। खरबूज़ों को कोई भी खरीदने के लिए आगे नहीं आ रहा था, क्योंकि पास में बैठी महिला कपड़े में मुँह छिपाए फफक-फफक कर रो रही थी।

उत्तर (ii) अधेड़ स्त्री इसलिए रो रही थी कि पड़ोस की दुकानों के तख़्तों पर बैठे या बाज़ार में खड़े लोग घृणापूर्वक उस स्त्री के संबंध में बातें कर रहे थे। उनकी बिना वास्तविकता को समझे की जाने वाली हृदयहीन बातें ही उसके रोने का कारण थी।

उत्तर (iii) उस स्त्री को फफक-फफक कर रोते देख लेखक के मन में एक व्यथा-सी उठी और मन रोने का कारण जानने के लिए उत्सुक हो उठा।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) एक आदमी खरबूज़े बेचने वाली स्त्री की ओर घृणा से थूकते हुए कह रहा था, "अब क्या ज़माना आ गया है! अभी इसी के जवान बेटे को मरे हुए पूरा दिन भी नहीं बीता है और यह चली आयी बाज़ार में दुकन लगाने।" लोगों में अब गैरत नाम की कोई चीज़ नहीं रह गई है।

उत्तर (ii) फुटपाथ पर खड़ा व्यक्ति स्त्री की ओर तिरस्कार से देखते हुए कह रहा था, "इन लोगों का क्या दीन-ईमान है! ये रोटी के टुकड़े के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इनके लिए खसम-लुगाई, बेटे-बेटी के रिश्तों की कोई अहमियत नहीं है। इनका धर्म और ईमान सब रोटी ही है।"

उत्तर (iii) बुढ़ियाँ को उसके जवान बेटे के मरने के बावजूद दुकान लगा लेने को लोग अपराध बता रहे थे।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) लेखक एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। जब उन्हें बुढ़ियाँ की वास्तविक स्थिति का पता चलता है तो उन्हें गत वर्ष पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुखी माता की बात याद आती है और वे सोचने लगता है- वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक बिस्तर से उठ न सकी थी। और प्रत्येक 15-20 मिनट पर उसे मूर्च्छा आ जाती थी। मूर्च्छा न आने की स्थिति में उसकी आँखों से निरंतर आँसू गिरते रहते।

उत्तर (ii) लेखक के पड़ोस की महिला के पुत्र के मृत्यु हो जाने के कारण उसके दुख को देख पूरे शहर के लोग दुखी हो उठे थे। उनके प्रति सबकी सहानुभूति थी। इस बुढ़िया की भाँति कोई टीका-टिप्पणी करने वाला नहीं था। केवल इसलिए कि यह घटना एक संभ्रांत परिवार में घटित हुई थी।

उत्तर (iii) लेखक यह अंतर देख किंकर्तव्य विमूढ़-सा हो गया था। उसकी सोच की गति रुक गई थी। ऐसी दशा में वह लोगों से ठोकरें खाता आगे बढ़ता जा रहा था।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) बुढ़िया के विषय में पूछने पर पता चला-परसों बुढ़िया का एकमात्र बेटा खरबूज़ों की बेल से पके खरबूज़े तलाश रहा था कि एकाएक उसका पाँव बेलों के नीचे विश्राम कर रहे साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डँस लिया। बुढ़िया ने बहुत प्रायत्न किए, ओझे बुलवाए, झाड़-फूँक करवाई पर उसका लड़का न बच सका।

उत्तर (ii) घर में भगवाना ही एकमात्र सदस्य था। जिसपर बूढ़ी माँ, बीवी और बच्चों के भरण-पोषण का भार था। भगवाना को साँप डँस लेने पर जो कुछ घर में जमा-पूँजी थी, सब उसको बचाने में लग गई। जो आकी-बाकी जमा-पूँजी थी भगवाना के क्रिया-कर्म में लग गई। दूसरे दिन घर में खरबूज़े के सिवाय अन्न का एक कण भी नहीं बचा था जिससे बच्चों का पेट भरा जा सके। विवश होकर बुढ़िया को खरबूज़े लेकर बैठना पड़ा।

उत्तर (iii) भूख से बिल-बिलाते बच्चों को बुढ़िया ने खाने के लिए खरबूज़े दिए।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. भगवाना के घर में उसकी बूढ़ी माँ, पत्नी और एक बेटा-बेटी थे।

उत्तर 2. भगवाना की मृत्यु साँप के डँस लेने के कारण हुई।

उत्तर 3. अब बेटे की मृत्यु हो जाने के कारण उसे कुछ उधार भी न मिलने वाला था।

उत्तर 4. खरबूज़े बेचनेवाली से कोई खरबूज़े नहीं खरीद रहा था क्योंकि वह अपना मुहँ ढँककर फफक-फफक कर रो रही थी।

उत्तर 5. उस स्त्री को रोता देखकर लेखक के मन में एक व्यथा-सी उठी।

उत्तर 6. लेखक के बुढ़िया के पास न बैठने का कारण लेखक द्वारा धारण की गई पोशाक थी।

उत्तर 7. समाज में प्राय: मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा सहूलियत और दुखी होने के अधिकार द्वारा निश्चित है।

उत्तर 8. फुटपाथ पर, डलिया में और ज़मीन पर बिकने के लिए खरबूज़े रखे थे।

उत्तर 9. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री का लड़का 23 वर्ष का था।

उत्तर 10. संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु हो गई थी। पुत्र-शोक के आघात से उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट पर मुर्च्छा आ जाती थी।

उत्तर 11. लड़का अपने घर का निर्वाह खेती करके करता था।

उत्तर 12. संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद ढाई मास तक पलंग से नहीं उठ पाई।

उत्तर 13. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बेटे का नाम भगवाना था।

उत्तर 14. लड़के का पैर साँप पर पड़ गया था।

उत्तर 15. सर्प के विष से भगवाना का बदन काला पड़ गया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक आस-पास के दुकानदारों द्वारा खरबूज़ा बेचने वाली स्त्री के विषय में तिरस्कारपूर्ण कथन और उसके फफक-फफक कर रोना देखकर व्यथित हो उठा। उसके मन में उस स्त्री के प्रति जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा उठी, परंतु वह उसके पास बैठ नहीं सकता था क्योंकि उसके पोशाक उसके पास बैठने में बाधक बन रहा था।

उत्तर 2. साँप डँस लेने के बाद बुढ़िया भगवाना को बचाने के लिए बावली होकर ओझा बुला लाई। उसकी झाड़-फूँक कराई। बहुविध नाग देव की पूजा कराई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा भी दिए। घर में जो आटा-दाल-अनाज था, दक्षिणा में चला गया। सब संभव प्रयत्न करने पर भी बुढ़िया उसे न बचा सकी।

उत्तर 3. बाज़ार में बैठी बुढ़िया खरबूज़ा बेचकर दूसरे के धर्म-ईमान को हानि पहुँचा रही थी। इसका कारण था उसके घर 13 दिन का सूतक लगना। जिसके घर किसी की मृत्यु हो जाए, उसके घर 13 दिन तक सूतक हो जाता है। सूतक के दिनों में

किसी को कुछ दिया नहीं जा सकता। बुढ़िया तो उसी दिन से खरबूज़ा बेचना शुरू कर दिया था। ऐसा कर वह खरीदने वाले के धर्म को नष्ट कर रही थी।

उत्तर 4. हिंदू धर्म के अनुसार जन्म और मृत्यु के बाद कुछ निर्धारित दिनों तक होने वाला अशौच, जिनमें सभी प्रकार के धार्मिक कृत्य संपन्न करना वर्जित है। सूतक एक तरह का अशुद्ध वातावरण माना गया है जिसके दौरान प्रकृति संवेदनशील हो जाती है। ऐसे समय अनहोनी होने की आशंका अधिक होती है।

उत्तर 5. प्रस्तुत पाठ में निम्न वर्ग का जीवन बहुत ही दयनीय बताया गया है। उच्च वर्ग के लोगों के बीच निम्न वर्ग की भावनाओं, पीड़ा का कोई मूल्य नहीं होता। प्रस्तुत पाठ में भगवाना की माँ पुत्र-शोक की पीड़ा को हृदय में छिपाए और किन परिस्थितियों में बाज़ार में खरबूज़ा क्यों और किन परिस्थितियों में बेचने चली आई, इस बात को समझने की फुर्सत उच्च वर्गीय लोगों के पास नहीं है। उसका एकमात्र कारण है उसका निम्न वर्ग का होना।

उत्तर 6. मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाक व्यक्ति के व्यक्तित्व, रुचि और सामाजिक स्तर को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। पोशाक व्यक्ति के रुचि, उसकी प्रकृति का परिचय देने में बहुत मदद करता है। पोशाक ही व्यक्ति के आर्थिक स्तर का प्रथम परिचय देने का माध्यम है।

उत्तर 7. बुढ़िया के दुख को देखकर और उसके प्रति आस-पास के लोगों द्वारा कही गई बातें और तिरस्कार पूर्ण व्यवहार देखकर लेखक को संभ्रांत महिला के पुत्र-शोक की घटना याद आ गई और वह दोनों में तुलना करने लगा। एक के पुत्र-शोक में पूरा शहर संतप्त हो उठा था, और बुढ़िया के पुत्र-शोक में लोगों की हृदय-शून्य बातें। लेखक को निम्न वर्ग और उच्च वर्ग का अंतर स्पष्ट दिखाई देने लगा।

उत्तर 8. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान सका क्योंकि उस स्त्री के पास बैठने में उसके पोशाक बाधक बन गए थे।

उत्तर 9. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने इसलिए चली गई कि उसके घर में अन्न के एक कण नहीं बचे थे जिससे वह घर में दो अबोध बच्चों, बुखार से तपती बहू को खाने को कुछ दे सके। घर में जो आटा-दाल था, वह भगवाना के दवा, पूजा-पाठ और क्रिया-कर्म में खर्च हो चुका था। उदर पूर्ति के लिए यह सब करना उसकी विवशता थी।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जब लेखक को भगवाना की मृत्यु, उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति का पता चलता है तो उसका मन व्यथित हो उठता है। उससे भी ज़्यादा पीड़ा लेखक को बाज़ार में आस-पास के लोगों द्वारा बुढ़िया के लिए प्रयुक्त कटूक्तियाँ सुनकर होती है। यह सामाजिक वर्ग-भेद देखकर लेखक को अपने पड़ोस की पुत्र-शोक से दुखी एक महिला की याद आ जाती है जिनके पुत्र-शोक में पूरा शहर शामिल था। लेखक यह सोचने लगता है- गम मनाने के लिए भी 'सहूलियत' चाहिए और दुखी होने का भी एक अधिकार होता है, जो कम-से-कम निम्न वर्ग के पास नहीं ही होता।

उत्तर 2. हिंदी में एक प्रचलित कहावत है- "जाके पाँव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर-पराई।" यह कहानी 'दुख का अधिकार' इसकी पुष्टि करती है। आज जब अमीर वर्ग के ऊपर कोई कष्ट आता है तो उसकी पीड़ा को समझा जाता है, परंतु यदि वह कष्ट एक निर्धन असहाय के ऊपर पड़ता है तो तरह-तरह की संवेदनहीन बातें की जाती है। जैसा कि पुत्र-शोक से ग्रस्त बुढ़िया जब खरबूज़ा बेचने बाज़ार में आती है तो उसके लिए बनाते हैं। कोई भी उसकी परिस्थितियों पर विचार नहीं करता कि आखिर वह क्यों खरबूज़ा बेचने आयी है जबकि कल ही उसका जवान बेटा मरा है। यह बात संभ्रांत वर्ग की हृदय-हीनता की पोल खोलती है।

उत्तर 3. उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से अमीर वर्ग द्वारा गरीब वर्ग की मजबूरियों और विवशताओं का उपहास उड़ाया गया है। जिनका पेट भरा होता है, उन्हें रोटी की अहमियत नहीं मालूम होती। वे रोटी को एक साधारण आवश्यकता समझते हैं। वास्तविकता यह है कि रोटी बहुत महत्वपूर्ण वस्तु है। यद्यपि उपर्युक्त कथन एक अमीर द्वारा बुढ़िया के प्रति घृणा व्यक्त करने के लिए कहा गया है, परंतु सत्य पर आधारित है। रोटी के लिए बड़े-बड़े राजा-महाराजा झुके हैं, भूख की पीड़ा में बेटे के हाथ से रोटी छिनने का ऐतिहासिक प्रमाण है। लेकिन अमीर वर्ग अपने साधन संपन्न होने के अहंकार में सब कुछ भूल जाता है और गरीब का उपहास उड़ाता है।

उत्तर 4. प्रस्तुत पाठ में लेखक पुत्र-शोक से ग्रस्त बुढ़िया के प्रति अमीर लोगों की संवेदनहीन कटूक्तियाँ सुनकर बहुत व्यथित होता है। उसे अपने पड़ोस की एक संभ्रांत महिला के पुत्र-शोक की घटना याद आ जाती है जिसके दुख में पूरा शहर शरीक हो गया था। यह अंतर देख-लेखक सोचने लगता है- दुखी होने का अधिकार भी सीमित है। यह सबके पास नहीं होता। यह केवल अमीर वर्ग के पास होता है। गरीब वर्ग के पास तो बिलकुल नहीं होता।

उत्तर 5. बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली के विषय में तरह-तरह की बातें कह रहे थे और उसकी गरीबी और बेबसी का उपहास कर रहे थे। उसकी मन की पीड़ा व परिस्थिति को समझने के लिए कोई नहीं तैयार था। लोग कह रहे थे- "अब क्या जमाना आ गया है! अभी लड़के को मरे दो दिन भी नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगाने चली आई है।" तो दूसरे साहब कह रहे थे, "अरे जैसी नीयत होती है, अल्ला वैसी ही बरकत देता है।" एक तीसरे सज्जन कह रहे थे- "अरे ऐसे लोगों का क्या! ये लोग रोटी के लिए दीन-ईमान, बेटा-बेटी, खसम-लुगाई सब कुछ दे सकते हैं, केवल इन्हें रोटी चाहिए।" इसी तरह कोई कह रहा था- "इसके यहाँ सूतक है परंतु इन्हें दूसरे के धर्म-ईमान से क्या लेना। इनका स्वार्थ पूरा होना चाहिए।"

उत्तर 6. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता चला कि बुढ़िया का एक 23 साल का लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन लेकर उसमें कचियारी का काम करता था और परिवार का खर्च चलाता था। एक दिन जब वह खरबूज़ा तोड़ने खेत में गया तो उसे साँप ने डँस लिया। बुढ़िया ने झाड़-फूँक और साँप की पूजा आदि सभी उपाय किए। घर में जो जमा-पूँजी थी सब लगा दिए परंतु लड़के को न बचा सकी। घर का आटा, अनाज सब दक्षिणा में चला गया। किसी तरह मृत बेटे का संस्कार किया। घर में अन्न का एक कण नहीं था। बहू बूखार से तप रही थी। बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे। बेटे के मर जाने से उधार भी नहीं मिलने वाला था। अब उसे बाज़ार में आकर खरबूज़े बेचने के सिवा कोई चारा नहीं रह गया था।

उत्तर 7. भगवाना की माँ एक गँवार बूढ़ी महिला थी जो पूरी तरह से अंधविश्वास को ही सत्य मानती है। उसी का परिणाम था कि भगवाना को साँप के डँस लेने के बाद वे उपचार स्वरूप ओझा को बुलाती हैं, झाड़-फूँक करवाने एवं नाग-पूजा में विश्वास करती हैं। वे पूरी तरह अनपढ़ हैं परंतु ममता और अपनत्व का प्रवाह पढ़ी-लिखी स्त्री की अपेक्षा उनमें अधिक है। यही कारण है। कि पुत्र-शोक से आहत होने पर भी वे भगवाना के बच्चों की भूख नहीं बर्दाश्त कर पाती और खरबूज़ा लेकर बाज़ार में बेचने निकल पड़ती हैं और बाज़ार में आस-पास के शब्द बाण का शिकार बनती हैं।

उत्तर 8. लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाज़ा उसके मुँह ढँककर फफक-फफक कर रोने से लगाया और जब वह बुढ़िया के रोने का कारण जाना तो उस पुत्र वियोगिनी के दुख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले वर्ष अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई महीने तक बिस्तर से न उठ सकी। उसे प्रत्येक 15-15 मिनट बाद मूर्च्छा आ जाती तथा मूर्च्छा न आने की अवस्था में उनके नेत्रों से आँसू हरदम गिरते रहते। उनके सिरहाने हरदम दो डॉक्टर बैठे रहते। लेखक सोचता, आखिर इस बुढ़िया का भी जवान पुत्र मरा है। पुत्र के वियोग में उसे भी अपार पीड़ा होगी परंतु अंतर निम्न वर्ग और उच्च वर्ग का है।

उत्तर 9. इस पाठ का शीर्षक 'दुख का अधिकार' पूर्ण रूप से सार्थक सिद्ध होता है क्योंकि यह अभिव्यक्त करता है कि दुख प्रकट करने का अधिकार व्यक्ति की परिस्थिति के अनुसार होता है। यद्यपि दुख करने या दुखी होने का अधिकार सभी का है। गरीब बुढ़िया और संभ्रांत महिला- दोनों का दुख एक समान ही था। दोनों के पुत्रों की मृत्यु हो गई थी, परंतु संभ्रांत महिला के पास सहूलियतें थीं, समय था इसलिए वह बहुत दिनों तक दुख मना सकी। बुढ़िया गरीब थी, वह इतना लंबा शोक नहीं मना सकती थी क्योंकि उसके पास इतनी सहूलियतें नहीं थीं। इसलिए पाठ का शीर्षक सर्वथा सार्थक है।

पाठ–2
एवरेस्टः मेरी शिखर यात्रा

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) जब एवरेस्ट यात्रा अभियान दल पैरिच पहुँचा, हमें हिमस्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुखद समाचार मिला। यह हिमस्खलन खुंभु हिमपात पर जाने वाले अभियान दल के रास्ते के बाई तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ़ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। जिससे सोहर शेरपा कुलियों के एक दल में एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए।

उत्तर (ii) यात्रा अभियान दल के नेता कर्नल खुल्लर ने अभियान दल के चेहरे पर आए अवसाद को देखकर स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उत्तर (iii) प्रेमचंद 26 मार्च को पैरिच लौट आए।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) बेस कैंप में पर्वतारोहियों सें मिलने तेन जिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ मिलने आए। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। लेखिका ने जब उन्हें अपना पहला परिचय दिया तो अपने को नौसिखिया बताया और कहा कि यह मेरा पहला अभियान है। यह सुन वह हँस पड़े।

उत्तर (ii) बचेंद्री ने उन्हें अपना पहला परिचय नौसिखिया के रूप में दिया और एवरेस्ट अभियान मेरा पहला अभियान है। बचेंद्री की बात सुन तेन जिंग हँस पड़े और उससे बोले कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है।

उत्तर (iii) आनेवाले व्यक्ति तेन जिंग थे जिन्होंने बचेंद्री से अपनी एवरेस्ट यात्रा का अनुभव बाँटा, क्योंकि बचेंद्री भी एवरेस्ट की यात्रा पर थी।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) विशालकाय हिमपुंज एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और विशाल गर्जना के साथ नीचे तेज़ ढलान की तरफ़ तेज़ी से लुढ़क कर नीचे आकर पर्वतारोहियों के कैंप को तहस-नहस कर दिया। यद्पि इस हिमखंड से हमारे सभी साथियों को चोट लगी थी परंतु कैंप पूरी तरह से नष्ट हो गया था।

उत्तर (ii) लोपसांग अपनी स्विस छुरी के माध्यम से हमारे तंबू का मार्ग साफ़ करने में सफल हो गए और प्लूम से हमें बचाने की कोशिश में लग गए। यदि वे थोड़ी भी देर कर देता तो निश्चित रूप से मृत्यु संभव थी। लोपसांग ने बड़े-बड़े हिमपिंडों को कठिनाई से हराते हुए और कड़े बरफ़ की खुदाई करके मुझे बरफ़ की कब्र से बाहर निकालने में सफल हो गए।

उत्तर (iii) लोपसांग ने स्विस छुरियों की सहायता से तंबू का रास्ता साफ़ किया।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) लेखिका की साँस रुकने का कारण था दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। तेज़ हवा के झोके में बर्फ़ के भुर-भुरे कण उड़ने के कारण दृश्यता समाप्तप्राय हो गई थी। कई बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम नीचे सीधा चला गया है। उन्हें लगा, वे शिखर की चोटी पर पहुँच गई हैं। यह सोच उनकी साँस रुकती-सी प्रतीत हुई। उन्हें लगने लगा था, सफलता बहुत निकट है।

उत्तर (ii) लेखिका 23 मई, 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सवा मिनट पर एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली विश्व की प्रथम महिला बनीं। उन्होंने इतिहास में एक नया कीर्तिमान रच दिया।

उत्तर (iii) दृश्यता का अर्थ है– दिखाई देना। एवरेस्ट चोटी के ऊपर बरफ़ के कण के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। दृश्यता समाप्त हो गई थी।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कार, साहस, धैर्य और कर्मठता होती है। लेखिका की इस अभूतपूर्व सफलता के पीछे उनके माता-पिता द्वारा प्रदत्त अच्छे संस्कार ही थे जिनके बल पर वे विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित करने में सफल हुईं। इसलिए उन्होंने हिमालय के सर्वोच्च पर अपने माता-पिता का ध्यान किया।

उत्तर (ii) एवरेस्ट के शिखर पर पहुँच जाने के बाद वहाँ जगह की कमी के कारण सर्वप्रथम लेखिका ने सुरक्षित खड़ा होने के लिए फावड़े से खुदाई करके सुरक्षित स्थान बनाया।

उत्तर (iii) लेखिका ने शिखर पर ही घुटने के बल बैठे-बैठे अपने झोले से दुर्गामाता का चित्र, हनुमान चालीसा निकली उसे लाल वस्त्र में लपेटकर पूजा-अर्चना की और वहीं बरफ़ में दबा दिया।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) नेपालियों में एवरेस्ट 'सागरमाथा' नाम से प्रसिद्ध है। लेखिका ने सर्वप्रथम नमचे बाज़ार जो कि शेरपा लैंड का सबसे अधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है, वहीं से सर्वप्रथम एवरेस्ट पर्वत शिखर के दर्शन किए।

उत्तर (ii) एवरेस्ट की तरफ़ गौर से देखने पर लेखिका को एक भारी बरफ़ का बड़ा फूल (प्लूम) दिखाई दिया जो पर्वत शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आस-पास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था। बरफ़ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था।

उत्तर (iii) लेखिका एवरेस्ट के प्रति विशेष रूप से आकर्षित थी।

गद्यांश - 7

उत्तर (i) लेखिका के बेस कैंप पहुँचने से पहले ही उसे रसोई सहायक की मृत्यु का समाचार मिला। इसकी मृत्यु का कारण था जलवायु का अनुकूल न होना। निश्चित रूप से उस समय वातावरण अनुकूल स्थिति में नहीं था।

उत्तर (ii) बर्फ़ की चट्टानों के गिरने का मुख्य कारण ग्लेशियर हैं। अत्यधिक हिमपात के कारण ग्लेशियर के बहने से प्रायः बरफ़ में हलचल हो जाती थी जिससे बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गिर जाया करती हैं। बरफ़ की चट्टानों के गिरने के और भी कारण थे जिससे स्थिति बहुत भयावह हो उठती थी।

उत्तर (iii) लेखिका के प्रवास के दौरान हिमपात प्रतिदिन लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को छूता था।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरातमक प्रश्न

उत्तर 1. लेखिका में एवरेस्ट शिखर के प्रति आकर्षण था।

उत्तर 2. बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट की तरफ़ भारी बरफ़ का बड़ा-सा फूल (प्लूम) देखा।

उत्तर 3. लेखिका को सफलता के क्षण में अपने माता-पिता की याद आई।

उत्तर 4. अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद का रहा था।

उत्तर 5. लेखिका को 'सागरमाथा' नाम इसलिए अच्छा लगा कि यदि सागर के पैर नदियाँ हैं तो सबसे ऊँची चोटी उसका मस्तक है।

उत्तर 6. हिमस्खलन से सोलह शेरपा कुलियों में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

उत्तर 7. रसोई सहायक की मृत्यु का कारण जलवायु का अनुकूल न होना था।

उत्तर 8. कैंप चार 29 अप्रैल को 7900 मीटर की ऊँचाई पर साउथ कोल में लगाया गया।

उत्तर 9. एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से रवाना हुआ।

उत्तर 10. अग्रिम दल को पहले भेजने का उद्देश्य था, हिमपात के कारण दुर्गम रास्ते को साफ़ करना ताकि बेस कैंप आसानी से पहुँचा जा सके।

उत्तर 11. नमचे बाज़ार शेरपा लैंड का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है।

उत्तर 12. भारी बरफ़ का बड़ा फूल (प्लूम) पर्वतशिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था।

उत्तर 13. बरफ़ का ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी अधिक हो सकता था।

उत्तर 14. शेरपा कुली की मृत्यु हिमस्खलन के कारण हुई थी।

उत्तर 15. उपनेता प्रेमचंद 26 मार्च को पैरिच लौट आए।

उत्तर 16. 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले लेखिका को एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुखद समाचार मिला।

उत्तर 17. रीता गोंबू और व बचेंद्री पाल वॉकी-टॉकी के माध्यम से अपने प्रत्येक कदम की जानकारी बेस कैंप को भेज रही थीं।

उत्तर 18. कैंप-एक पर पहुँचने वाली महिला थीं- बचेंद्री पाल और रीता गोंबू।

उत्तर 19. 'बेस कैंप' में बचेंद्री पाल ने अपने को नौसिखिआ कहकर परिचय दिया।

उत्तर 20. शिखर पर पहुँचने से पहले तेन जिंग को सात बार एवरेस्ट जाना पड़ा था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. एवरेस्ट अभियान प्रारंभ होने से पहले हमें एक शेरपा कुली की मृत्यु का समाचार मिला उसकी मृत्यु हिमस्खलन के कारण हुई थी खुंभु हिमयात पर जानेवाले अभियान दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बरफ़ की चट्टान नीचे खिसक आई थी।

उत्तर 2. तेन जिंग नॉरगे एक प्रसिद्ध नेपाली पर्वतारोही थें जिन्होंने एवरेस्ट चोटी पर सर्वप्रथम पैर रखने में सफलता प्राप्त की थी। केदारनाथ पर भी इन्होंने सर्वप्रथम पहुँचने में सफलता पाई थी। उन्होंने बचेंद्री पाल के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा– "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच पाना चाहिए।"

उत्तर 3. बचेंद्री पाल की एवरेस्ट यात्रा में दल के नेता कर्नल खुल्लर, उपनेता प्रेमचंद, शेरपा फुलियों का दल, रीता गोंबू, अंगदोरजी, लोपसांग और भगन मीनू आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कर्नल खुल्लर दल की हौसला आफजाई करते रहे। अंगदोरजी के प्रोत्साहन ने ही लेखिका को एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने का साहस दिया।

उत्तर 4. कर्नल खुल्लर लेखिका की सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने बधाई देते हुए कहा– "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। इसके आगे उन्होंने कहा– 'देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।'

उत्तर 5. अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे उपनेता प्रेमचंद 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने मार्ग में आने वाली सबसे बड़ी बाधा खुंभु के हिमपात के विषय में जानकारी दी, साथ ही यह भी बताया कि उनके दल ने 6000 मीटर स्थित कैंप- एक जो कि क हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। यह भी बताया कि पुल बनाकर रस्सियाँ बाँधकर तथा झाड़ियाँ लगाकर रास्ता चिह्नित कर दिया गया है।

उत्तर 6. डॉ. मीनू मेहता ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं–

(i) अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पूलों का बनाना।

(ii) लट्ठों और रस्सियों का उपयोग करना।

(ii) बरफ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्स्यिों को बाँधना।

(iv) अग्रिम दल के आभियांत्रिक कार्यो की जानकारी दी।

उत्तर 7. लेखिका को अगले दिन की और जय के साथ ही आगे चढ़ाई करनी थी। मीनू मेहता से जानकारी मिलने पर लेखिका उनकी सहायता के लिए नीचे बढ़ीं। जय उन्हें जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उससे लेखिका के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए चाय पी। वह लेखिका को आगे जाने के लिए रोकने की कोशिश की पर वे न मानीं। थोड़ा आगे जाने पर उसे ही मिला। लेखिका को वह हक्का-बक्का रह गया।

उत्तर 8. लोपसांग ने अपनी स्विस छुरी की सहायता से तंबू का रास्ता साफ़ किया और तीव्रता से लेखिका को बचाने के प्रयास में लग गए। क्षण-क्षण कीमती था। थोड़ी-सी देर करने का अर्थ था सीधी मौत। उन्होंने बड़े-बड़े हिमखंडों को मुश्किल से हटाते हुए मेरे चारों ओर जमी हुई कड़ी बरफ़ को खोदकर लेखिका को बरफ़ की कब्र से बाहर निकालनने में कामयाब हुए।

उत्तर 9. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका अपने अगले दिन की महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने कुकिंग गैस, खाना तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर एकत्र किए। कल की यात्रा में साथ जाने वाले की, जय और मीनू अभी पीछे थे जो लेखिका की चिंता का विषय थे।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. प्लूम अर्थात भारी बरफ़ का बड़ा फूल ऊँचे पर्वत शिखरों पर लहराता एक ध्वज-सा प्रतीत होता है। जब शिखर की ऊपरी सतह के आस-पास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलती है तब यह दृश्य बनता है। इसका कारण है सूखी बरफ़ का हवा की तेज़ गति के कारण उड़ना। बरफ़ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता है।

उत्तर 2. एवरेस्ट शिखर पर चढ़ाई करना एक खतरनाक और रोमांचपूर्ण कार्य है। इसमें पग-पग पर मृत्यु या गिरकर घायल होने की संभावना बनी रहती है। इस प्रकार के साहसपूर्ण और रोमांच भरे अभियान में मृत्यु की संभावना के साथ ही कदम

आगे बढ़ाना चाहिए। उपर्युक्त कथन प्रसंगानकूल है। महान कार्य करने पर महान उपलब्धियों के साथ-साथ महान क्षति होने की भी संभावना होती है। इस तथ्य को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

उत्तर 3. बचेंद्री पाल को शिखर पर पहुँचने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पहली घटना 15-16 मई, 1984 को ल्होत्से की बर्फ़ीली ढलान पर लगे कैंप-3 में घटी। उस दिन बुद्धपुर्णिमा थी। लेखिका ढलान पर लगे नाइलॉन के तंबू में थी। कैंप में 10 व्यक्ति और थे। सभी लोग सो रहे थे कि रात को करीब 12:30 बजे बरफ़ की एक बड़ी चट्टान ग्लेशियर से टूटकर आ गिरी। इस घटना में सभी लोग चोटग्रस्त हो गए। ईश्वर की कृपा से सबकी जान बच गई। चढ़ाई के समय ठंडी बर्फ़ीली हवाएँ भी बाधा खड़ी कर रही थीं परंतु आरोही दल सब पर विजय पाता अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा।

उत्तर 4. सम्मिलित अभियान में लेखिका की सहयोग एवं सहायता की भावना उनके निम्नलिखित कार्य से प्रकट होती है- लेखिका साउथ कोल कैंप पहुँच गई परंतु उनके सहयोगी आरोही की, जय और मीनू अभी पीछे रह गए थे जिससे वे चिंतित थीं। कल लेखिका को उन्हीं के साथ चढ़ाई करनी थी। उन्होंने चाय और जूस थरमस में भर लिए और उनकी खोज में जाने के लिए निकल पड़ी। बाहर निकलते ही उन्हें मीनू मिल गई। की और जय अब भी पीछे थे। वह नीचे उतर रही थीं कि वे जेनेवस्पर की चोटी के ठीक नीचे जय मिले। लेखिका ने जय को चाय पिलाया। वह उन्हें कृतज्ञता व्यक्त करते ही नीचे जोने को मना किया परंतु लेखिका को की के विषय में जानकारी लेती थी और नीचे उतरने पर उन्हें की मिल गया। की लेखिका के इस कार्य से हक्का-बक्का रह गया और बोला- 'बचेंद्री! तुमने इतना बड़ा जोखिम क्यों लिया।' लेखिका ने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया- "मैं भी औरो की तरह एक पर्वतारोही हूँ इसलिए इस दल में आई हूँ। मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए?"

उत्तर 5. बरफ़ पिंड के गिरने का वर्णन इस प्रकार है- 15-16 मई, 1984 की रात। उस दिन बुद्धपुर्णिमा थी लेखिका ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप-3 में सो रही थी। कैंप में 10 लोग और थे रात के करीब 12:30 बजे लेखिका के सिर से कोई कठोर चीज़ टकराने से उसकीं नींद खुल गई साथ ही एक जोरदार धमाका हुआ तभी लेखिका को महसूस हुआ कि एक बहुत ठंडी, भारी वस्तु उसके शरीर पर से कुचलते हुए चल रही है। एक लंबा बरफ़ पिंड कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूट कर आ गिरा और एक विशाल हिमपुंज बन गया। हिमखंडों, बरफ़ के टुकड़ों तथा जमी हुई बरफ़ के इस विशालकाय पुंज ने एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी के समान तेज गति से भीषण गर्जना के साथ सीधी ढलान से नीचे आते हुए लेखिका के कैंप को तहस-नहस कर दिया था।

उत्तर 6. लेखिका को देखकर की हक्का-बक्का रह गया। इसका कारण था इन जोखिम भरे बर्फ़ीले मार्ग से चलकर ऊपर पहुँचा हुआ व्यक्ति अपने साथी की चिंता में पुन: नीचे आए, यह अद्भुत व्यवहार था लेखिका को जिसे देख वह आश्चर्यचकित हो गया और लेखिका से पूछ बैठा- 'तुमने इतनी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?' लेखिका ने कहा- 'क्या पर्वतारोहियों को एक दूसरे की सहायता करना गलत है! हम लोग एक साथ हैं तो प्रत्येक का एक दूसरे का सहायता करने का दायित्व है।' लेखिका की बात सुनकर हँस पड़ा।

उत्तर 7. एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल चार कैंप लगाए गए थे। इस प्रकार बेस कैंप को लेकर कुल पाँच कैंप थे। बेस कैंप पैरिच में लगा था। कैंप एक 6000 मीटर की ऊँचाई पर जो हिमपात के ठीक ऊपर है, लगाया था। इसके बीच में ग्लेशियर है। कैंप-3 ल्होत्से की बर्फ़ीली ढलान पर लगाया गया था। जहाँ लेखिका के साथ प्राण घातक घटना घटी थी। कैंप-चार 7900 मीटर की ऊँचाई पर साउथ कोल में लगाया। ल्होत्से में हुई घटना के बाद सभी लोग कैंप दों में पहुँचे। वहाँ से घायलों को बेस कैंप में ले जाया गया।

पाठ-3

तुम कब जाओगे, अतिथि

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) लेखक घर पर आए अतिथि को कैलेंडर दिखाकर तारीख बदलते हैं जिससे अतिथि को याद आ जाए कि उनके आए यहाँ कितने दिन हो गए हैं। आतिथ्य के अनुसार अतिथि को अतिथि की ही भाँति रुकना चाहिए। भारत में आतिथ्य परंपरा के अनुसार अतिथि को एक-दो दिन से अधिक नहीं रहना चाहिए।

उत्तर (ii) लेखक अतिथि की तुलना अंतरिक्ष यात्री से करते हुए बता रहे हैं कि वे भी चाँद पर इतने दिनों तक नहीं रहे जबकि लाखों मील की यात्रा करके गए थे। हे अतिथि! तुम तो बहुत छोटी-सी यात्रा करके आए हो और इतने दिन तक रुके हो।

उत्तर (iii) अतिथि चार दिनों से लेखक के यहाँ रह रहा है।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) अतिथि के आने पर लेखक ने आतिथ्य-सत्कार अपने स्तर से उठकर किया और उच्च मध्यम वर्ग के समान रात्रिभोज दिया था, क्योंकि उन्हें भरोसा था कि अतिथि तो भूले-भटके आते हैं और तुरंत चले जाते हैं। इस उद्देश्य से लेखक ने मेहमान के स्वागत में रात्रिभोज में दो सब्ज़ियों तथा रायते के अतिरिक्त मिष्टान्न भी दिया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक ही आशा थी कि अतिथि अपने दिल में मेहमान नवाजी की छाप लिए दूसरे दिन चले जाएँगे।

उत्तर (ii) मेहमान का स्वागत लेखक ने इस आशा से किया था कि वह दूसरे दिन मेहमान नवाजी की छाप अपने दिल में लिए चला जाएगा। यद्यपि लेखक अतिथि से रुकने का औपचारिक आग्रह करेगा परंतु एक अच्छे अतिथि की भाँति चला जाएगा।

उत्तर (iii) लेखक ने बताया कि मेहमान के स्वागत का अंतिम छोर दूसरे दिन भोज के साथ रात्रि में सिनेमा दिखाना है। इससे अधिक मेहमान नवाजी लेखक ने नहीं की है।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) लेखक अतिथि से कहता है, हे अतिथि! तुम्हारे अतिथि की भाँति रुकने की सीमा पार कर जाने के बाद तुम्हारे नव आगमन के समय फूल पड़ने वाली मुसकुराहट अब धीरे-धीरे फीकी पड़कर लुप्त हो गई है। कल तक इस कमरे में ठहाकों के जो रंगीन गुब्बारे उड़ते थे अब दिखाई नहीं पड़ते। आपस के सभी उत्साहपूर्ण वार्तालाप बंद हो गए हैं। अब तुम मैगज़ीन के पन्ने पलट रहे हो और मैं उपन्यास बढ़ रहा हूँ। सारे शब्दों के लेन-देन समाप्त हो गए और चर्चा के विषय समाप्त हो गए।

उत्तर (ii) लेखक और अतिथि के बीच अनेक विषयों पर चर्चा हुई थी, जैसे- परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, फ़िल्म, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परियोजना, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया गया था।

उत्तर (iii) ज़िक्र - चर्चा

शनैः-शनैः - धीरे-धीरे।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) अतिथि ने प्रातः लेखिका से जब किसी धोबी के विषय में पूछा और बोले- 'मैं कपड़े धोने के लिए धोबी को देना चाहता हूँ।' यह बात सुन लेखक को ज़बरदस्त आघात लगा। लेखक को तो अपेक्षा थी कि अतिथि परंपरा के अनुसार अतिथि आज आतिथ्य की छाप हृदय में धारण किए प्रस्थान करेंगे, परंतु यह तो धोबी को कपड़े धोने के लिए पूछ रहे हैं। इससे लेखक को आघात लगा जो अप्रत्याशित था।

उत्तर (ii) अतिथि जब अतिथि की भाँति चला आता है और आतिथ्य ग्रहण का आतिथ्य की ही भाँति चला जाता है तब वह अतिथि देवता की तरह होता है और जब वह अतिथि परंपरा के विपरीत अधिक दिनों तक रहने के लिए सोचने लगता है तब वह राक्षस की तरह लगने लगता है।

उत्तर (iii) अतिथि के सामीप्य की वेला की तुलना लेखक ने रबर से की है।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) कुछ बरस पूर्व लेखक ने पत्नी की बड़ी-बड़ी आँखें देख अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त का बिस्तर खोल दिया था। कहने का आशय है कि लेखक पत्नी की बड़ी-बड़ी आँखें देखकर विमुग्ध हो गया था और एकसूत्र में बँधने का निर्णय कर लिया था। परंतु अब जब पत्नी की आँखें बड़ी होने लगती हैं तो लेखक का मन छोटा होने लगता है।

उत्तर (ii) लेखक अतिथि के विषय बता रहा है कि जब वह अतिथि की मर्यादा को तार-तार कर यहाँ से न टलने का इरादा व्यक्त करने लगा है, तब से चेहरे की सारी प्रसन्नता गायब हो गई है। लाण्ड्री से आए कपड़े धारण करने पर भी तुम्हारे इस नियति को देखकर मन छोटे होने लगता है। तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुसकराहट अब लुप्त होती जा रही है।

उत्तर (iii) अतिथि के न जाने पर लेखक के चेहरे पर आई प्रसन्नता फीकी पड़ती हुई अब लुप्त हो गई है।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) कल की किरण के विषय में बताया गया है कि कल वो तुम्हारे बिस्तर पर आएगी। वह तुम्हारे यहाँ आने के बाद पाँचवाँ दिन होगा अर्थात पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। अतिथि, आशा है वह किरण तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय लोगे। वह हमारी सहनशक्ति की अंतिम सीमा होगी।

उत्तर (ii) लेखक को लगता है कि अतिथि अभी जाने वाला नहीं है, अभी और ठहरेगा। इसी आशंका से भयभीत है। इसीलिए उसे बताने का प्रयत्न कर रहा है कि कल जो सुबह की किरण वह देखेगा, उसके आगमन की पाँचवीं सुबह होगी। अब आतिथ्य सत्कार की सीमा समाप्त हो रही है अत: आप यहाँ से प्रस्थान करें।

उत्तर (iii) अतिथि देवता का देवत्व उसके वापस चले जाने पर ही सुरक्षित रहता है।

गद्यांश - 7

उत्तर (i) लेखक अतिथि को आगाह करते हुए कह रहा है कि अब हमारे अतिथि सत्कार की सीमा समाप्त हो रही है। सत्कार में डिनर से चले थे। अब खिचड़ी पर आ गए हैं। यदि आप ऐसे ही रहे तो उपवास तक करना पड़ सकता है। हमारे-तुम्हारे रिश्ते एक संक्रमण से गुजर रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरमक्षण है। अत: तुम जाओ अतिथि।

उत्तर (ii) होम को स्वीट-होम कहा ही इसलिए गया है कि दूसरे लोग किसी के घर की स्वीटनेस को काटने न दौड़े अथात् किसी के घर की सुख-शांति न छीन लें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, यह मैं समझ रहा हूँ। परंतु ज़रा सोचो- शराफत भी कोई चीज़ है। गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है। परंतु मैं अभी आपकी शराफत देख रहा हूँ।

उत्तर (iii) अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. इसलिए कि अतिथि शानदार मेहमान नवाजी की छाप अपने हृदय में लेकर जाए।

उत्तर 2. लेखक मेहमान के आने से परेशान है क्योंकि वह एक अतिथि की भाँति वापस नहीं लौटा।

उत्तर 3. कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं।

उत्तर 4. पति-पत्नी स्नेह भरी मुसकराहट के साथ अतिथि से गले मिले थे।

उत्तर 5. दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की।

उत्तर 6. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने कहा- 'मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।'

उत्तर 7. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक अतिथि के लिए डिनर से चलकर खिचड़ी पर आ गए थे।

उत्तर 8. अतिथि के आगमन के चतुर्थ दिवस पर लेखक के मन में घुमड़ने वाला प्रश्न है- 'उफ़! तुम कब जाओगे! अतिथि?'

उत्तर 9. लेखक का हृदय किसी अज्ञात आशंका से उस दिन धड़क उठा था जिस दिन अतिथि का आगमन हुआ था।

उत्तर 10. उच्च-मध्यमवर्गीय डिनर में अतिथि को दो सब्ज़ी रायता के साथ मिष्ठान्न परोसा गया था।

उत्तर 11. लेखक ने अतिथि के विषय में ऐसा इसलिए कहा कि अतिथि मेहमान नवाजी प्राप्त कर लेने के बावजूद जाने का नाम नहीं ले रहा था।

उत्तर 12. घर की स्वीटनेस तब समाप्त होने लगती है जब उसका स्वाद लेने के लिए दूसरे लोग न आ टपकें।

उत्तर 13. अतिथि का व्यक्तित्व किस अदृश्य गोंद से लेखक के घर से चिपक गया है, यह भेद लेखक सपरिवार नहीं समझ पा रहा है।

उत्तर 14. लेखक ने उपवास की बात इसलिए की है क्योंकि अतिथि यहाँ से जाना नहीं चाहता।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक के मन में अतिथि को गेट ऑउट कहने की बात इसलिए आई कि अतिथि लेखक के यहाँ अतिथि की भाँति न आकर कई दिनों तक रुकने का संकेत देने लगा। अतिथि एक दिन का होता है परंतु जब वह कई दिन रुकने की ठान ले तो बोझ बन जाता है। इसीलिए अतिथि को गेट आउट कहने की बात लेखक के मन में आई।

उत्तर 2. लेखक अतिथि से बता रहा है कि लाखों किलोमीटर की यात्रा कर एक अंतरिक्ष यात्री (एस्ट्रानॉट्स) चंद्रलोक पर जाकर भी चार दिन में वापस आ जाता है। तुम तो थोड़ी दूर की यात्रा कर ही यहाँ आए हो, फिर भी आतिथ्य स्वीकार कर जाने का नाम ही नहीं ले रहे हो।

उत्तर 3. लेखक अतिथि को कैलेंडर की तारीखें दिखाकर इसलिए बदल रहा था कि वह जान ले कि उसे यहाँ आए कितने दिन हो गए कि अतिथि के परंपरा का उल्लंघन है। लेखक अतिथि को यह अनुभूति कराना चाहता है कि मेहमान नवाजी एक दिन की होती है, जीवन भर की नहीं। अतः तुम जागरूक हो जाओ और वापस जाओ।

उत्तर 4. लेखक का सौहार्द बोरियत में बदल गया, वह इसलिए कि लेखक अतिथि का आतिथ्य दो दिनों तक इस प्रकार करता है कि वह अपने हृदय में आतिथ्य-सत्कार की छाप ले कर वापस चला जाए, परंतु आतिथ्य जब जाने का नाम नहीं लेता। तब लेखक को अतिथि के प्रति बोरियत होने लगता है।

उत्तर 5. अतिथि-परंपरा का उल्लंघन करते हुए अतिथि लेखक के यहाँ चार दिनों से रुककर उन्हें अपरोक्ष रूप से पीड़ा दे रहा है। मेहमान नवाजी के चक्कर में लेखक की दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई है। उसका प्रतिमाह होने वाला घरेलू खर्च प्रभावित हो रहा है जिससे उसे परेशानी हो रही है।

उत्तर 6. लेखक अतिथि को राक्षस इसलिए कहना चाह रहा है कि यह सामाजिक सिद्धांत है एक दिन का अतिथि देवतुल्य होता है, परंतु जब वह अधिक दिनों तक रुकने की सोचता है तब राक्षस प्रतीत होने लगता है।

उत्तर 7. लेखक के अनुसार अतिथि ऐसा हो जो अतिथि की भाँति आए, आतिथ्य-सत्कार ग्रहण करे और उसकी छाप अपने हृदय में सँजोए वापस चला जाए। वही अतिथि देवतुल्य होता है और अच्छा लगता है।

उत्तर 8. लेखक अतिथि को इस प्रकार विदा करने चाहता था कि वह अपने हृदय शानदार मेहमान नवाजी की छाप लिए एक अच्छे अतिथि की तरह वापस चला जाए। इसीलिए लेखक ने अतिथि के आने पर उच्च मध्यमवर्ग का डिनर व लंच प्रदान कर उसका सम्मान किया। वह चाहता था कि वह अतिथि को रुकने का आग्रह करे, पर एक अच्छे अतिथि की भाँति वह सम्मान प्राप्त कर वापस चला जाए।

उत्तर 9. **(क)** लेखक अतिथि के आने के दिन की बात बताते हुए कह रहा है कि जिस दिन तुम आए, हमें घर के अतिरिक्त खर्च होने की चिंता सताने लगी। किसी अतिधि के आने पर उसके स्वागत-सत्कार में काफ़ी खर्च होता है। इसी बात को लेखक ने उक्त कथन में व्यक्त करना चाहा है। किसी नए विशेष मेहमान के आ जाने पर घर का प्रतिदिन होने वाला कार्य प्रभावित होता है।

(ख) हमारी भारतीय परंपरा में अतिथि देवतुल्य माना गया और अतिथि का स्वागत-सत्कार भी देवता की भाँति किया जाता है। परंतु यह सब विधान अतिथि के लिए हैं। लेकिन जब अतिथि के रहने की सीमा पार कर जाए तो वह राक्षस होने लगता है और भार लगने लगता है।

उत्तर 10. इस पाठ के माध्यम से लेखक यह संदेश देता है कि किसी के यहाँ भी अतिथि बनो तो उसके आतिथ्य-सत्कार का सम्मान करते हुए उसके यहाँ एक दिन से अधिक रहने का प्रयत्न मत करो। उसके यहाँ डेरा डालने का प्रयत्न करने पर सिवाय अपमान के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। अतः एक अच्छे अतिथि के रूप में किसी के यहाँ जाना चाहिए।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. आए हुए अतिथि के चार दिनों तक न जाने पर लेखक के व्यवहार में कटुता और ऊब ने स्थान लेना प्रारंभ कर दिया। वह अतिथि के सामने ही कैलेंडर की तिथि बदलने लगा जिससे अतिथि को यह याद आ जाए कि उसे यहाँ आए कितने दिन हो गए और अब उसे जाना चाहिए, अतिथि के आने पर लेखक ने जो अंतरगता दिखाई थी, खुले मन से जो आपस में चर्चा होती थी, वह सब लुप्त हो गई है। लेखक अतिथि से बातचीत करने के स्थान पर उपन्यास पढ़ रहा है और अतिथि फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहा है। अब अतिथि घर के वातावरण में बोरियत का सृजन कर रहा है। अतिथि के प्रति मन में दुर्भावनाएँ जन्म लेने लगी हैं।

उत्तर 2. प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' में रचनाकार ने ऐसे व्यक्तियों को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है, जो अपने परिचित या रिश्तेदार के घर बिना किसी पूर्व सूचना के चले जाते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते। ऐसे लोग इस प्रकार विचार शून्य होते है कि एक बार भी नहीं सोचते कि उनके इस तरह पाँव तोड़ कर बैठ जाना मेजबान पर कितना भारी पड़ रहा है। लेखक के अनुसार अच्छा अतिथि वह है जो आने से पूर्व अपने आने की सूचना देकर आए और एक-दो दिन मेहमानी करके वापस चला जाए। वह अतिथि नहीं हो सकता, जिसके आगमन के बाद मेजबान वह सब कुछ सोचने पर विवश हो जाए, जो इस पाठ का मेजबान निंरतर सोचते रहे।

उत्तर 3. अपने घर को स्वीट-होम की संज्ञा केवल इसलिए दी गई है कि लोग अपने घर पर रहें उसे सँवारें और दूसरे के स्वीट-होम की स्वीट-नेस नष्ट करने न पहुँचें। अपने घर की महत्ता पर इसीलिए प्रकाश डाला गया है क्योंकि अपना घर अपना ही होता है। अपने घर में स्वतंत्रता, स्वच्छंदता होती। दूसरे के घर में वह स्वच्छंदता नहीं संभव है। परंतु कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें दूसरे का घर ही अच्छा की स्वतंत्रता और स्वच्छंदता का ध्यान नहीं रखते केवल अपनी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं। ऐसे लोग लज्जाहीन होते हैं।

उत्तर 4. लेखक अतिथि को बताने का प्रयत्न करता है कि तुम्हें आए आज चार दिन हो गए हैं। अब तक तुम्हारा सतत आतिथ्य का यह चौथा भारी दिन है लेकिन तुम इतने संवेदनहीन हो गए हो कि हमारी परेशानी का तुम्हें ध्यान ही नही है। तुम अब भी यहाँ से जाने का नाम नहीं ले रहे हो। अब तुम आतिथ्य की सीमा का अतिक्रमण कर चुके हो। एक छोटी-सी यात्रा कर जब से तुम यहाँ आए हो, इतने दिनों में अंतरिक्ष यात्री लाखों किलोमीटर की लंबी यात्रा कर चंद्र-लोक जाकर वापस लौट आए और एक तुम हो जो अब तक यहीं बने हुए हो। तुम एक बार भी हमारी परिस्थिति की ओर ध्यान नहीं देना चाहते।

उत्तर 5. लेखक के यहाँ अतिथि को आए तीन दिन हो गए हैं। जब लेखक अतिथि के वापस जाने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा है, उस समय अतिथि ने लेखक से पूछता है- 'मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।' अतिथि द्वारा कहा गया यह वचन लेखक के हृदय पर आघात-सा प्रतीत होता है। अतिथि के वापस जाने की संभावनाओं पर यह कथन धूल डालने जैसा लगा। यह एक मार्मिक चोट थी क्योंकि लेखक यह कदापि नहीं सोच रखा था कि अतिथि अभी यहाँ और रुकेगा। लेखक यह सोचने पर विवश हो गया कि अतिथि सदैव देवता ही नहीं होता, वह मानव और कुछ अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

उत्तर 6. प्रस्तुत पाठ में वर्णित अतिथि के व्यवहार के समान व्यवहार संबंधों में संक्रमण उत्पन्न करने में सहायक होते है। ऐसे अतिथि से मेजबान सदैव घबराते हैं और प्रार्थना करते हैं कि फिर ऐसे अतिथियों का आतिथ्य करने का दुर्योग न प्राप्त हो। ऐसे अतिथि संवेदनहीन होते हैं। इन्हें केवल अपनी तुष्टि का ध्यान होता है। ये एक नंबर के आलसी और कर्महीन होते हैं। इन्हें कभी भी अपना घर प्रिय नहीं लगता। ऐसे लोग दूसरे के घर में सुख और आनंद की तलाश करते हैं इसीलिए हरदम अतिथि बनने के लिए लालायित होते है। ऐसे लोगों से संबंध स्थापित करने से लोग घबराते हैं।

पाठ-4

वैज्ञानिक चेतना के वाहक : चंद्रशेखर वेंकट रामन्

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) रामन् का जन्म 7 नवंबर सन् 1888 को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर में हुआ था।

उत्तर (ii) गणित और भौतिकी विषयों के ज्ञान ने रामन् को जगत-प्रसिद्ध बनाया।

उत्तर (iii) कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने पहले ए.बी.एन कॉलेज तिरुचिरापल्ली से और फिर प्रेसिडेंसी कॉलेज मद्रास से की।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) रामन् की खोज से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया।

उत्तर (ii) इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी एक मुश्किल तकनीक है और इसमें गलतियों की संभावना बहुत अधिक है। रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देती है।

उत्तर (iii) पदार्थों का संश्लेषण प्रयोगशाला में करना और अनेक उपयोगी पदार्थों के कृत्रिम रूप से निर्माण को संभव करने के लिए।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) रामन् प्रभाव की खोज से रामन् विश्व के चोटी के वैज्ञानिकों की पंक्ति में आए। पुरस्कारों और सम्मानों की तो झड़ी-सी लगी रही।

उत्तर (ii) रामन् को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है—1929 में 'सर' की उपाधि, विश्व का सर्वोच्च नोबेल पुरस्कार, रोम का मेत्युसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूज पदक, फिलोडेल्फिया इंस्टिट्यूट का फ्रेंकलिन पदक, अंतरराष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार और 1954 में 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया।

उत्तर (iii) वे नोबल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय थे। उन्होंने भारत को एक नया आत्मसम्मान और आत्मविश्वास दिया। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में नयी भारतीय चेतना को जाग्रत भी किया।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) भारतीय संस्कृति से रामन् का गहरा लगाव था। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा अक्षुण्ण रखा।

उत्तर (ii) रामन् का पहनावा दक्षिण भारतीय था। वे कट्टर शाकाहारी थे और मदिरा से सख्त परहेज करते थे।

उत्तर (iii) रामन् का शराब पीने से इनकार करने पर एक आयोजक ने परिहास में कहा कि— "जब अल्कोहल पर रामन् प्रभाव का प्रदर्शन कर हमें आह्लादित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो रामन् पर अल्कोहल के प्रभाव का प्रदर्शन करने से परहेज क्यों?"

गद्यांश - 5

उत्तर (i) भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए रामन् ने इंडियन जनरल ऑफ फिजिक्स नामक शोध-पत्रिका प्रारंभ की।

उत्तर (ii) रामन् के शोध-छात्रों ने आगे चलकर काफ़ी अच्छा काम किया। उनमें से कई छात्र बाद में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए।

उत्तर (iii) रामन् प्रभाव केवल प्रकाश की किरणों तक ही सिमटा नहीं था; उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रकाश की किरणों से पूरे देश को आलोकित और प्रभावित किया।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) रामन् वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे।

उत्तर (ii) उन्होंने हमेशा ही यह संदेश दिया है कि अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन हम एक वैज्ञानिक दृष्टि से करें।

उत्तर (iii) हमें रामन् के जीवन से यह प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति अपने जीवन में जो भी करना चाहता है उसे कर सकता है। यदि उसमें उस काम को करने की लगन तथा इच्छा शक्ति हो।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी, देशभक्त और एक सफल वैज्ञानिक थे।

उत्तर 2. समुद्र को देखकर रामन के मन में दो जिज्ञासाएँ उठीं। पहली जिज्ञासा थी कि समुद्र का रंग नीला क्यों होता है। दूसरी जिज्ञासा थी कि समुद्र का रंग कुछ और क्यों नहीं होता है।

उत्तर 3. रामन के पिता ने उनमें गणित और भौतिकी की सशक्त नींव डाली।

उत्तर 4. रामन् की दिली इच्छा थी कि वे अपना सारा जीवन शोधकार्यों को पूरा करने में लगाएँ, लेकिन इसे करियर के रूप में अपनाने की उनके पास कोई खास व्यवस्था नहीं थी।

उत्तर 5. रामन् साधारण-सी प्रयोगशाला में कामचलाऊ एवं मामूली से उपकरणों की सहायता से केवल अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर ही भौतिक विज्ञान समृद्ध बनाने के लिए कटिबद्ध रहने लगे, इसलिए हठयोग से तुलना की गई है।

उत्तर 6. समुद्र यात्रा के दौरान जहाज़ के डेक पर खड़े रामन् ने देखा कि समुद्र का नीला जल दूर-दूर तक फैला है। यह जल नीला ही क्यों दिखाई देता है? यह जिज्ञासा उनके मन में बलवती हो उठी और वे इसका जवाब पाने के प्रयास में जुट गए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. पाठ में इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस प्रयोगशाला को अद्‌भुत कहा गया है, क्योंकि इस संस्था को कलकत्ता के एक डॉ. महेंद्रलाल सरकार ने वर्षों की कठिन मेहनत और लगन के बाद खड़ा किया था। इस संस्था का उद्‌देश्य देश में वैज्ञानिक चेतना का विकास करना था। लेकिन इसके पास औज़ारों की बहुत अधिक कमी थी। रामन् इस प्रयोगशाला में कामचलाऊ औज़ारों का प्रयोग करते हुए अपने अनुसंधान के कार्य करते थे।

उत्तर 2. रामन् नौकरी से बचे समय में अपनी इच्छाओं और स्वाभाविक रुझान के कारण कलकत्ता के बहू बाज़ार में आते और डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार द्‌वारा स्थापित प्रयोगशाला में शोधकार्य में जुट जाते थे। वे अपनी इच्छाशक्ति से भौतिक विज्ञान को समृद्‌ध करने का प्रयास करते थे। इसलिए वे अपना पूरा समय अध्ययन, अध्यापन और शोध में बिताते थे।

उत्तर 3. रामन् की खोज भौतिकी के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी, क्योंकि प्रकाश की प्रकृति के बारे में जो आइंस्टाइन के विचार थे उसका प्रमाण प्रयोग के साथ मिल गया। पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की बनावट के अध्ययन के लिए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाने लगा। जोकि पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक सही-सही जानकारी देती है। इससे कई पदार्थों का कृत्रिम संश्लेषण भी संभव हो पाया।

उत्तर 4. परंपरागत तौर पर पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कॉपी से किया जाता था जिसमें गलती की संभावना बहुत अधिक होती थी। जबकि रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर, पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की एकदम सटीक जानकारी देती है। इस जानकारी के कारण पदार्थों का संश्लेषण प्रयोगशाला में करना और अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम निर्माण संभव हो गया।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. रामन् भले ही विश्व प्रसिद्‌ध वैज्ञानिक बन गए लेकिन उन्हें अपने जीवन के वे दिन हमेशा याद रहे जब उनको बेहद कम उन्नत और कम उपकरणों वाली प्रयोगशाला में कामचलाऊ शोध करके संतोष होना पड़ता था। अभावग्रस्त दिनों की याद तथा उस समय के संघर्ष से रामन् को 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्‌यूट' की स्थापना की प्रेरणा मिली। इसकी स्थापना का उद्देश्य आने वाली पीढ़ी को आवश्यक उपकरण और सुविधाएँ उपलब्ध करवाना था, ताकि युवा पीढ़ी अपने मार्ग में ऐसे चीज़ों का सामना न करें। और वे शोध कार्यों के लिए प्रेरित होकर नए रहस्यों का अनुसंधान करें।

उत्तर 2. चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने देश को प्रगतिशील वैज्ञानिक दृष्टि तथा चिंतन प्रदान किया। इस दिशा में पहले उन्होंने स्वयं सांसारिक सुख-सुविधा त्यागकर प्रयोग साधना की। उन्होंने रामन् प्रभाव की खोज करके भारत का नाम ऊँचा किया। फिर उन्होंने बंगलौर में एक शोध संस्थान की स्थापना की। उन्होंने अनुसंधान संबंधी दो पत्रिकाएँ भी चलाई। उन्होंने अनेक नवयुवकों को शोध करने की प्रेरणा दी और मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने संदेश दिया कि हम अपने आसपास की घटनाओं को वैज्ञानिक दृष्टि से निहारने का प्रयास करें। इस प्रकार उन्होंने देश के चिंतन को विज्ञान की दिशा प्रदान की। इसलिए लेखक ने उन्हें वैज्ञानिक चेतना का वाहक कहा है।

उत्तर 3. रामन् द्‌वारा खोजे गए रामन् प्रभाव के कारण उनकी गणना विश्व के श्रेष्ठ वैज्ञानिकों में होने लगी। उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1929 में उन्हें 'सर' की उपाधि दी गई। अगले ही वर्ष उन्हें विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार 'भौतिकी में नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें रोम का मेत्यूसी पदक, रायल सोसाइटी का ह्‌यूज पदक, फिलोडेल्फिया इंस्टीट्‌यूट का फ्रैंकलिन पदक, सोवियत रूस का लेनिन पुरस्कार आदि के साथ ही 1954 में देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया। इस प्रकार उनकी प्रसिद्‌धि और सम्मान अत्यधिक बढ़ चुका था।

उत्तर 4. सरकारी नौकरी से अवकाश के बाद कलकत्ता की बहू बाज़ार स्थित प्रयोगशाला में शोध करते हुए रामन् अपना बिताया करते थे। यहीं पर उनका झुकाव वाद्‌ययंत्रों की ध्वनियों के पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्य की तरफ़ हुआ। रामन् ने देशी और विदेशी दोनों प्रकार के वाद्‌ययंत्रों का अध्ययन किया। उन्होंने अनेक भारतीय यंत्रों जैसे-वीणा, तानपुरा, मृदंगम का गहन अध्ययन किया। इसके अलावा उन्होंने वायलिन और पियानो जैसे विदेशी वाद्‌ययंत्रों को भी अपने शोध का विषय बनाया। वे वाद्‌ययंत्रों के अध्ययन द्‌वारा ध्वनियों के पीछे वैज्ञानिक रहस्य को जानने के अलावा पश्चिमी देशों की उस भ्रांति को भी तोड़ना चाहते थे कि भारतीय वाद्‌ययंत्र विदेशी वाद्‌यों की तुलना में घटिया हैं।

उत्तर 5. चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट' नामक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध-संस्थान की स्थापना की। उन्होंने भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए 'इंडियन जनरल ऑफ फिजिक्स' नामक शोध-पत्रिका की शुरुआत की। विज्ञान के प्रचार-प्रसारण के लिए उन्होंने करेंट साइंस नामक पत्रिका का संपादन भी किया। इसके अलावा रामन् ने अपने जीवन में सैकड़ों शोध छात्रों का मार्गदर्शन किया। इन छात्रों ने आगे आने वाले छात्रों की मदद की। इससे उन्होंने सिर्फ़ अच्छा काम ही नहीं किया बल्कि कई छात्रों ने उच्च पदों को हासिल भी किया।

उत्तर 6. प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने बताया था कि प्रकाश का रूप अति सूक्ष्म परमाणुओं की तीव्र प्रवाहधारा के समान होता है। प्रकाश के कण बुलेट के समान तीव्र प्रवाह से बहते हैं। रामन् की खोज से प्रकाश की प्रकृति के बारे में आइंस्टाइन के विचारों का प्रायोगिक प्रमाण मिल गया। रामन के प्रयोगों ने आइंस्टाइन की धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया, क्योंकि एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन यह साफतौर पर प्रमाणित करता है कि प्रकाश की किरण तीव्रगामी सूक्ष्म कणों के प्रवाह के रूप में व्यवहार करती है। दोनों ने वैज्ञानिक दृष्टि से चीज़ों को निहारने का प्रयास किया लेकिन रामन् की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया, जिसने देश के चिंतन को विज्ञान की दिशा प्रदान की।

उत्तर 7. रामन् की सफलता में उनके पिता का अविस्मरणीय योगदान रहा है। वे भौतिक व गणित के शिक्षक थे। उन्होंने इन दोनों विषयों की शिक्षा रामन् को दी, जिससे इन विषयों में गहरी रुचि एवं वैज्ञानिक बनने की लालसा ने जन्म लिया। रामन् ने वाद्ययंत्रों से संबंधित खोज में गणित और भौतिकी दोनों का उपयोग किया। इसी प्रकार रामन् प्रभाव में भी दोनों विषयों का बराबर प्रयोग किया था। वास्तव में उनके पिता ने उनकी सफलता की नींव रख दी थी। जिसे सफलता का द्योतक चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने अपने चिंतन, प्रयासों और संघर्षों से बनाया।

पाठ–5
शुक्रतारे के समान

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) जिस प्रकार मुकुट में कलगी शीर्ष पर होती है और सबसे भिन्न आभा बिखेरती है, उसी प्रकार नक्षत्र-मंडल में सबसे दीप्तवान तारा शुक्रतारा है जो पूर्व में, कभी सायंकाल में, तो कभी भोर में आकाश में चमकता है। इसे कलगी-रूप कहा गया है।

उत्तर (ii) लेखक ने महादेव की तुलना कलगी कलाम को सलाम-रूप शुक्रतारे से की है। इसलिए कि महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता उषाकाल में अपनी प्रतिभा की आभा से भारत रूपी आकाश को देदीप्यमान कर, देश और दुनिया को मुग्ध कर शुक्रतारे की तरह अस्त हो गए।

उत्तर (iii) महादेव जी अपने मित्रों के बीच अपना परिचय 'हम्माल' के रूप में और कभी-कभी 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने महादेव जी की लेखन प्रतिभा पर प्रकाश डाला है। महादेव जी भाषा के धनी थे। उनकी उच्चकोटि की शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन शैली उन्हें ईश्वरीय देन के रूप में मिली थी। यद्यपि गांधी जी के साथ उन्हें साहित्य-सेवा का समय नहीं मिल पाता। फिर भी कुछ समय निकालकर उन्होंने गांधी जी की आत्मकथा लिखी थी जो बहुत लोकप्रिय हुई थी।

उत्तर (ii) महादेव भाई को उच्चकोटी की शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन शैली ईश्वरीय देन के रूप में मिली थी। इनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण वे गांधी जी के स्नेह पात्र बन गए थे। वे अपनी भाषा से ही सामने वाले को प्रभावित कर लेते थे और वह उनका मुरीद बन जाता था।

उत्तर (iii) महादेव भाई द्वारा रचित 'सत्य का प्रयोग' नामक पुस्तक के अनगिनत संस्करण सारी दुनिया में प्रकाशित हुए और बिके।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) महादेव देसाई देश-विदेश के अग्रगण्य समाचार पत्रों में छपी गांधी जी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर छपी टीका-टिप्पणियों को देखते और उनको आड़े हाथों लेने वाले लेख भी समय-समय पर लिखा करते थे।

उत्तर (ii) महादेव देसाई गांधी जी द्वारा दी गई तालीम के कारण ही देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों के संसार में और एंग्लो इडियन समाचार पत्रों के बीच सबके लाड़ले बन गए थे जबकि गांधी जी के विषय में तीव्र आलोचना-प्रत्यालोचना एवं मतभेदों का कड़ा-से-कड़ा जवाब अपनी शिष्ट संस्कार संपन्न भाषा में देते थे।

उत्तर (iii) गांधी जी की गतिविधियों पर बराबर टीका-टिप्पणी करने वाले देश-विदेश के समाचार-पत्रों को आड़े-हाथों लेने वाला लेख समय-समय पर लिखते थे।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) महादेव देसाई सभाओं में कमेटियों की बैठकों में या दौड़ती रेलगाड़ियों में ऊपर की बर्थ पर बैठकर या तो ताज़े-ताज़े समाचार-पत्रों, मासिक पत्रों व पुस्तकें पढ़ते रहते या 'यंग इंडिया' और नवजीवन नामक समाचार-पत्र के लिए लेख लिखा करते थे।

उत्तर (ii) महादेव जी लगातार चलती यात्राओं, प्रत्येक स्टेशन पर दर्शन के लिए एकत्र लोगों की भीड़, सभाओं, मुलाकातों, बैठकों, चर्चाओं और बातचीत के बीच कब नहाते थे, कब खाते थे, कब सोते थे, कब अपना दैनिक कृत्य करते थे, किसी को इसका पता नहीं चल पाता था।

उत्तर (iii) अपनी सारी व्यवस्थाओं के बीच भी महादेव भाई सूत कातना कभी नहीं भूलते थे।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) यमुना-गंगा उत्तर प्रदेश से बिहार तक हज़ारों मील फैले एवं परम उपकारी अन्य नदियों से बने मैदान इन नदियों के गाद से बने हैं। इन्हें सोने की गाद कहा गया है क्योंकि इन गादों से बने मैदान अन्न उत्पादन के लिए बहुत उपजाऊ हैं।

उत्तर (ii) प्रस्तुत पंक्ति में लेखक ने महादेव देसाई के निर्मल व्यक्ति और प्रखर प्रतिभा का वर्णन किया है। महादेव देसाई प्रखर प्रतिभा के साथ आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक थे। उच्चकोटि की शिष्ट संस्कार युक्त भाषा और आकर्षक व्यक्तित्व सामने वाले पर ऐसी मोहिनी छोड़ते थे कि कई-कई दिनों तक इस मोहिनी का नशा नहीं उतर पाता था।

उत्तर (iii) चंद्र-शुक्र की प्रभा का अर्थ है- शीतल शांत कांतियुक्त व्यक्तित्व।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. अहमदाबाद से निकलने वाले दो साप्ताहिक पत्र-'यंग इंडिया' और 'नव जीवन।'

उत्तर 2. गांधी जी से जुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ बताने के लिए पीड़ितों को दल के दल ग्रामदेवी के मणि भवन पर आते थे।

उत्तर 3. क्रॉनिकल के संपादक हार्नीमैन के देश निकाला मिलने के बाद 'यंग इंडिया' अंग्रेज़ी साप्ताहिक में लिखने वालों की कमी के कारण लेखों में कमी आ गई।

उत्तर 4. महादेव भाई के झोलों में देश-विदेश के साप्ताहिक व दैनिक समाचार-पत्र भरे रहते थे।

उत्तर 5. महादेव भाई अपना परिचय 'हम्माल' या 'पीर बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

उत्तर 6. महादेव भाई दिन में 17-18 घंटे काम करते थे।

उत्तर 7. शुक्र को चंद्रमा का साथी माना गाया है।

उत्तर 8. सायंकाल में या भोर के समय।

उत्तर 9. महादेव देसाई को शुक्रतारे की तरह कहा गया है।

उत्तर 10. शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास ने गांधी जी से 'यंग इंडिया' का संपादक बनने का आग्रह किया।

उत्तर 11. गांधी जी का काम इतना बढ़ गया कि उन्होंने 'यंग इंडिया' को हफ़्ते दो बार प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

उत्तर 12. 'यंग इंडिया' के साथ अहमदाबाद में 'नव जीवन' साप्ताहिक-पत्र प्रकाशित होता था।

उत्तर 13. महादेव देसाई को एम. डी. नाम से भी जाना जाता था।

उत्तर 14. गांधी जी के पास आने से पहले महादेव सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।

उत्तर 15. महादेव देसाई के जिगरी दोस्त का नाम था—नरहरि भाई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जिस प्रकार नक्षत्र मंडल में शुक्रतारे के समान आभा और प्रकृति वाला कोई अन्य तारा नहीं है। इसके समान प्रभा (क्रांति) वाला कोई नक्षत्र नहीं है। ठीक इसी के समान थे महादेव भाई। महादेव भाई प्रतिभा के धनी तो थे ही, उनका व्यक्तित्व भी अप्रतिम था। इनकी शिष्ट संस्कार संपन्न भाषा लोगों पर मोहिनी का प्रभाव डालती थी। इनकी मनोहारी लेखन शैली अद्‌वितीय थी। इतने सर्वगुण संपन्न व्यक्तियों को शुक्रतारे की उपमा देना सही है।

उत्तर 2. महादेव देसाई गांधी जी के निजी सचिव थे। ये गांधी को पुत्र के समान प्रिय थे। ये बेजोड़ प्रतिभा के धनी थे इसीलिए गांधी जी इन्हें अपना उत्तराधिकारी कहते थे। महादेव जी अद्‌भुत ऊर्जावान, अपने दायित्व के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। विनम्रता, सरलता, सज्जनता और सत्यनिष्ठा इनकी विशेषता थी। इन्होंने ने महात्मा जी के साथ रहकर भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में अपना अमूल्य योगदान किया।

उत्तर 3. महादेव भाई के लेख प्रभावोत्पादक होते थे। इनके लेख उस समय सभी पत्र-पत्रिकाओं में छपते थे। 'यंग इंडिया' और 'नव जीवन' में भी इनके लेख छपते थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के यहाँ आए पत्रों के उत्तर, उनपर आई टीका-टिप्पणियों, अलोचनाओं का ज़ोरदार शब्दों में उत्तर महादेव भाई देते थे। अनेक देश-विदेश के समाचार-पत्र इन की विद्‌ता, विचारशीलता के मुरीद बन गए थे। इनकी मनोहारी लेखन शैली के प्रशंसक वायसराय तक थे।

उत्तर 4. महादेव देसाई की मृत्यु से सबसे अधिक क्षति यदि किसी को हुई, वे गांधी जी थे। महादेव भाई के जीवित रहते गांधी जी निश्चिंत रहते थे। महात्मा जी के वे पूरक थे। उनकी मृत्यु के बाद गांधी जी अधूरे से लगने लगे। गांधी जी को आए पत्रों, समाचार-पत्रों पत्रिकाओं में गांधी जी पर लिखे, लेखों, टीका-टिप्पणियाँ का जवाब महादेव जी के ही ज़िम्मे था। इसलिए निधन पर गांधी जी को बहुत दुख हुआ।

उत्तर 5. नरहरि भाई महादेव देसाई के अभिन्न मित्र थे। गांधी जी के पास आने से पहले महादेव जी ने सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी की थी। नरहरि भाई से वहीं इनकी भेंट हुई थी दोनों एक-दूसरे के अभिन्न मित्र बन गए। दोनों ने साथ-साथ अहमदाबाद में वकालत प्रारंभ किया। इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद करना होता है जो महादेव जी के प्रकृति के प्रतिकूल था। इसलिए वे गांधी जी के यहाँ चले आए।

उत्तर 6. महादेव जी एक कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। वे 17—18 घंटे काम करते थे। उनका जीवन बहुत व्यस्त रहता था गांधी जी के साथ रहकर भी अध्ययनशील थे। वे यात्रा के समय भी समाचार-पत्रों एवं अन्य अध्ययन समग्री साथ लेकर चलते थे। इसी बीच 'नव जीवन', 'यंग इंडिया' और साप्ताहिक-पत्र के लिए लेख लिखते। अपने व्यस्ततम जीवन में कब नहाते, खाते, दैनिक कर्म से निवृत्त होते थे, कोई नहीं जान पाता। वे 1 घंटे में चार घंटों का काम निपटाते थे।। इतने कर्मठ थे वे।

उत्तर 7. गांधी जी के जीवन में महादेव भाई का स्थान पुत्रवत था। वे उन्हें अपने पुत्र के समान मानते थे। सन् 1917 में महादेव गांधी जी के पास आए थे तभी उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। सन् 1919 में जब जलियाँवाला बाग के बाद गांधी जी के पंजाब जाते समय उन्हें पलवल में गिरफ़्तार कर लिया गया तभी गांधी जी ने महादेव जी को अपना वारिस कहा था।

उत्तर 8. गांधी जी ने महादेव जी को अपना वारिस सन् 1919 में तब कहा था जब वे जालियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद पंजाब जाते समय रास्ते में ही पलवल में गिरफ़्तार कर लिए गए थे। उसी समय उन्होंने महादेव को अपना वारिस घोषित किया था। सन् 1929 में महादेव भाई दक्षिण से उत्तर तक पूरे भारत के दुलारे बन चुके थे।

उत्तर 9. महादेव भाई अपने व्यस्त जीवन में घमासान लड़ाइयों, आंदोलनों और समाचार-पत्रों की चर्चाओं के भीड़ भरे प्रसंगों के बीच साहित्यिक गतिविधियों के लिए उन्हें समय नहीं मिल जाता था। इसके बावजूद उन्होंने गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का उन्होंने अंग्रेज़ी अनुवाद किया जो प्रत्येक सप्ताह 'यंग इंडिया' में छपता रहा। बाद में पुस्तक के रूप में उसके अनेक संस्करण देश-विदेश में छपे और भारी मात्रा में बिके।

उत्तर 10. महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण उनका अथक परिश्रम था। सन 1934-1935 में गांधी जी वर्धा महिला में और मगनवाड़ी आश्रमों से चलकर सेगाँव चले गए। महादेव भाई, दुर्गा बहन, चि. नारायण के साथ मगनवाड़ी ही रहे और वर्धा की असहाय गरमी में प्रतिदिन प्रात: पैदल चलकर सेवाग्राम जाते थे। दिन भर काम कर शाम को वापस पैदल आते प्रतिदिन 11 मील चिलचिलाती धूप में यात्रा का सिलसिला उनके लिए प्राणघातक बन गया।

उत्तर 11. महादेव भाई की लिखावट तो प्रशंसनीय थी ही, लेखन की शुद्‌धता सर्वोत्कृष्ट थी। उनके लेखन में एक कॉमा तक की त्रुटि भी मिलना असंभव था। इसलिए गांधी जी कहते थे— महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न! और लोग दाँतों तले अँगुली दबा लेते थे।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. महादेव जी उत्कृष्ट चरित्र के स्वामी थे। इनकी वाणी में अपनापन, विनम्रता थी जो बरबस सामने वाले को वश में कर लेती थी। महादेव जी इतने सरल थे कि उन्हें समझ लेने में कठिनाई नहीं होती थी। वे आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक थे और किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। गांधी जी के साथ रहने पर भी अंहकार उन्हें छू तक नहीं गया था। हृदय से निश्छल थे। यही कारण था कि मित्रों के बीच कभी-कभी स्वयं को गांधी जी का 'हम्माल' कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर के रूप में देते थे। उनकी सर्वोकृष्ट विशेषता थी कि वे उच्चकोटि के शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा के धनी थे। उनकी मनोहारी लेखनशैली इतनी सुंदर थी कि उसे देखकर भारत के वायसराय को भी जलन होती थी कि ऐसा लिखने वाला हमें क्यों नहीं मिला।

उत्तर 2. महादेव देसाई की तुलना शुक्रतारे से की गई है। जिस प्रकार नक्षत्र-मंडल में शुक्रतारे की अपनी एक अलग पहचान है। नक्षत्र-मंडल में सबसे प्रभावान तारा शुक्र ही है। शुक्रतारे की आभा-प्रभा का वर्णन करने में कवियों ने कोई कमी नहीं की है। महादेव भाई भी शुक्रतारे के समान अपनी प्रतिभा का जादू कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखेरते रहे। इनका जीवन गांधी जी को समर्पित था और अपने अंतिम समय तक गांधी जी सेवा में और सान्निध्य में थे। इनकी प्रतिभा, विनम्रता, सरलता, सत्यनिष्ठा को पहचान लेने के बाद ही गांधी जी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था। वे इन्हें अपना पुत्र समझते थे।

उत्तर 3. 'यंग इंडिया' के संपादन का कार्य गांधी जी के अपने कंधों पर ले लेने के बाद काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र कम पड़ने लगा। उन्होंने 'यंग इंडिया' को दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया। 'यंग इंडिया' के बाद 'नव जीवन' गांधी जी के पास आया और दोनों साप्ताहिक-पत्र अहमदाबाद से प्रकाशित होने लगे। उसी समय लेखक छह महीनों के लिए साबरमती आश्रम में रहने पहुँचा। शुरू में लेखक को ग्राहकों के हिसाब-किताब की और साप्ताहिकों को डाक में डलवाने की व्यवस्था ज़िम्मे की। परंतु कुछ ही दिनों के बाद संपादन सहित दोनों साप्ताहिकों की और छपाखाने की सारी व्यवस्था लेखक के ज़िम्मे आ गई।

उत्तर 4. महादेव देसाई जी की मृत्यु पर महात्मा गांधी को सबसे बड़ा आघात लगा। वह जब तक जीवित रहे, उन्हें कभी भूल नहीं पाए। उनकी अनुपस्थिति की पीड़ा उन्हें सदैव अनुभूत होती रही। उनके रहते गांधी जी को किसी काम की चिंता नहीं रही। जो काम करने से वह समयाभाव में चूक जाते, उसे महादेव जी पहले ही कर लेते। गांधी जी और महादेव जी के बीच आत्मा का संबंध था जो एक-दूसरे की भावनाओं को बिना कहे ही समझ लेते थे। इसीलिए उनकी याद में गांधी जी भर्तृहरि के एक भजन की यह पंक्ति हमेशा दोहराते थे –'ए रे जखम जोगे नहिं जशे'–अर्थात यह ज़ख्म योग से भी कभी नहीं भरेगा।

उत्तर 5. महादेव देसाई को लोकप्रिय बनाने में उनके आड़े हाथों लेने वाले लेख जो वे गांधी जी के विरुद्ध टीका-टिप्पणी के जवाब में लिखते थे, कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक युक्त विवाद करने की क्षमता आदि गुणों ने तीव्र मदभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से लोकप्रिय हो गए। उनके लोकप्रिय होने का एक कारण उनकी शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन शैली, उनकी सत्य-निष्ठा, सरलता और स्पष्टवादिता भी थी।

उत्तर 6. महादेव जी की स्पष्टवादिता, देश-विदेश के अग्रगण्य समाचार-पत्रों में गांधी के विरुद्ध टीका-टिप्पणियों के विरुद्ध उन्हें आड़े हाथों लेने वाले लेख, बेजोड़ कॉलम, भरपूर चौकसी, ऊँचे से ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने की गांधी जी द्वारा दी गई शिक्षा तथा कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ पूरी सत्य-निष्ठा में उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक युक्त विवाद करने की गांधी जी की शिक्षा ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार पत्रों की दुनिया में तथा एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव (एम.डी.) को सबका लाड़ला बना दिया।

उत्तर 7. महादेव जी की लेखन-शैली अद्‌वितीय रूप में सुंदर थी। उससे भी सराहनीय था उनका भाषा और उसके व्याकरण पर अधिकार। उनकी लिखावट भाषा-व्याकरण की दृष्टि से इतनी शुद्‌ध थी कि एक कोमा की त्रुटि भी मिलना संभव नहीं था। जब मुलाकात के लिए आए हुए लोग अपने घर जाकर सारी बात टाइप करके गांधी जी के पास ओके करवाने पहुँचते तो उनमें भले ही कुछ कमियाँ, खामियाँ मिल जाएँ, लेकिन महादेव की डायरी में या नोट-बही में एक कॉमा तक की भी त्रुटि मिलना नामुमकिन था। इसलिए गांधी जी कहा करते थे– "महादेव के नोट के साथ थोड़ा मिलान कर लेते।" यह विशेषता थी महादेव की लिखावट की।

उत्तर 8. पंजाब में फ़ौजी शासन के दौरान लोगों की पूर्ण स्वतंत्रता समाप्त हो गई थी। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ़्तार करके कानून के अंतर्गत उम्रकैद का दंड देकर कालापानी भेज दिया गया था। लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक कालीनाथ राय को 10 वर्ष की जेल की सज़ा मिली। इस प्रकार पंजाब में स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति का अधिकार समाप्त हो गया था।

स्पर्श : भाग 1 – काव्य खंड

पाठ–6

पद

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) कवि को राम नाम की रट लगी है। प्रस्तुत पद में कवि ने अपने हृदय के भाव को स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया है। रैदास अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। वह अपने आराध्य को स्वयं से बाहर नहीं मानता। उसके आराध्य उसके हृदय में ही विराजमान हैं जिसकी अनुभूति वह बार-बार करता है, परंतु उन्हें पहचान नहीं पाता। इसीलिए कहता है राम नाम की जो रट लगी है अब वह कैसे छूट सकती है? अर्थात नहीं छूट सकती।

उत्तर (ii) सुहागा सोने में मिलता है और उसके सौंदर्य को द्विगुणित कर देता है। कवि ने ईश्वर की तुलना सुहागे से की है और स्वयं को सोना माना है। वह कहता है कि, "हे प्रभु! हमारा आपका मिलन सोने और सुहागे के समान पवित्र है, जैसे सोने में सुहागा मिलने से सोना खरा हो जाता है उसी तरह मैं आपके सान्निध्य में आने से पवित्र हो जाता हूँ।"

उत्तर (iii) रैदास ने स्वयं को ईश्वर का दास माना है। जैसे ईश्वर और भक्त का, सेवक और स्वामी का अटूट रिश्ता होता है, वैसे ही रैदास और ईश्वर का संबंध।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) ईश्वर दीनों पर दया करने वाले दीनानाथ हैं। रैदास ईश्वर की अनुकंपा से अभिभूत हैं। वे कहते हैं, "हे प्रभु! आप गरीब दीन-दुखियों पर दया करने वाले हैं। आप ही ऐसे कृपालु स्वामी हैं जो मुझ जैसे दीन और नीच के सिर पर राजाओं जैसा छत्र रख दिया है। अर्थात् आपने हमें राजाओं जैसा सम्मान प्रदान किया है।"

उत्तर (ii) रैदास के स्वामी गरीब नवाज़ हैं, दीन-हीन दुखियों का उद्धार करने वाले हैं। उनकी कृपा दीन-हीनों पर हरदम बरसती है। वे दीन-दुखियों पर दया करने वाले हैं, रैदास के स्वामी उनके जैसे नीच और अधर्म प्राणी पर भी असीम कृपा कर सम्मान प्रदान किया है।

उत्तर (iii) अछूतों और दीन-हीन प्राणियों पर परम पिता परमेश्वर द्रवित होता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. रैदास ईश्वर के प्रेम में दीपक में बाती (बत्ती) के समान हैं। जैसे दीपक में बत्ती उसके प्रेम में जलती है उसी प्रकार मैंने भी आपके प्रेम में अपने को समर्पित कर दिया है।

उत्तर 2. सोने में सुहागा मिलने से वह खरा विशुद्ध हो जाता है।

उत्तर 3. पद में भक्त-भगवान की तुलना चंदन और पानी से, घन (बादल) और मोर से, दीपक और बाती से, मोती और धागा से, सोने और सुहागा से की है।

उत्तर 4. रैदास की भक्ति में दास्य भाव की प्रधानता है।

उत्तर 5. कवि के स्वामी कवि के सिर पर अपनी कृपा भक्ति रूपी छत्र प्रदान करते हैं।

उत्तर 6. प्रभु का हृदय दीन-हीन दुखियों को देखकर द्रवित होता है।

उत्तर 7. संत रविदास 'रैदास' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

उत्तर 8. इस पंक्ति में संत नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सदन कसाई का उल्लेख है।

उत्तर 9. हरि जी के लिए सब कुछ संभव है। वे कुछ भी करने में समर्थ हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. संत कवि रैदास के प्रभु दीन-हीन और दलित लोगों पर विशेष कृपा रखते हैं। कवि ने प्रस्तुत पद में दृष्टांत स्वरूप कई भक्तों का नाम गिनाया है जो अत्यधिक दीन-हीन होने पर भी उस परम दयालु ईश्वर के कृपापात्र बने हैं। नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सदन कसाई आदि ऐसे ही संत हैं, जिन्हें समाज ने तिरस्कृत किया, पर दीनानाथ दयाल प्रभु ने उन्हें मान-सम्मान प्रदान कर अपनी शरण में स्वीकार कर लिया।

उत्तर 2. कवि राम-नाम की रट को इसलिए नहीं छोड़ पा रहे हैं क्योंकि वह प्रभु में चंदन और पानी की भाँति मिल गए हैं जिससे उनकी भक्ति रूपी सुगंध अंग-अंग से फूट रही है। जैसे बादल के उमड़ने पर मोर नाचने लगता है उसी प्रकार ईश्वर की परम कृपा से कवि का मन मयूर भी प्रसन्न हो गया है। कवि ईश्वर में दीपक और बाती तथा मोती और धागा के समान एक-दूसरे में गुँथ गए हैं, इसीलिए राम की रट को नहीं छोड़ सकता।

उत्तर 3. गरीबों के मसीहा परम कृपालु परमेश्वर हैं। ईश्वर को कवि ने गरीब नवाज़ बताते हुए उनकी महिमा का वर्णन इस प्रकार किया है—वह परम कृपालु परमात्मा ने मुझ जैसे नीच प्राणी के सिर पर अपनी कृपा-रूपी छत्र रखकर राजाओं के समान सम्मान प्रदान किया है। जिसे नीच समझकर जगत ने त्याग दिया उसे दीनदयालु परमेश्वर ने अपनी शरण में लेकर उसका मान बढ़ा दिया है। वही परमपिता नीच को भी ऊँचा करने में समर्थ है। ईश्वर इसी प्रकार नीच, दीन-हीन की सहायता करता है।

उत्तर 4. संतों का नामोल्लेख कर कवि यह बताना चाहता है कि ईश्वर परम कृपालु और दीन-हीन दलितों पर अपनी कृपा बरसाने वाले हैं। वही उनके सखा, गुरु, माता-पिता हैं। उनके यहाँ छोटे-बड़े, गरीब-अमीर का भेदभाव नहीं है। उन्होंने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सदन कसाई जैसे नीच कहलाने वालों को अपनी शरण में लिया और सम्मान प्रदान किया। परम परमेश्वर गरीब नवाज़ हैं।

उत्तर 5. संत कवि रैदास के गोविंद सर्वशक्तिमान हैं। सबकुछ करने में सक्षम और समर्थ हैं। वे राई को पर्वत और पर्वत को राई कर सकते हैं। वे ऊँच को नीच और नीच को ऊँच करने में समर्थ हैं। उन्होंने कबीर, सदन कसाई जैसे नीच और अपार लोगों को अपनी शरण में लेकर उन्हें महिमा-मंडित किया है।

उत्तर 6. रैदास ने अपने स्वामी को गरीब नवाज़, गोसाईं, गोविंद आदि नामों से संबोधित किया है और उनके समक्ष स्वयं को दीन-हीन नीच रूप में प्रस्तुत किया है तथा प्रार्थना करता है कि जैसे आपने कबीर आदि संतों का उद्धार किया है, उसी प्रकार उसपर भी कृपा दृष्टि करो।

उत्तर 7. इस पंक्ति का भाव है कि जैसे चंदन के संपर्क में रहने से पानी में चंदन की सुगंध फैल जाती है, उसी प्रकार एक भक्त के तन-मन में ईश्वर की भक्ति व्याप्त हो गई है। कवि का हृदय ईश्वर की भक्ति से धन्य हो गया है।

उत्तर 8. इस पंक्ति का भाव यह है कि जैसे चकोर पक्षी सदा चंद्रमा की ओर दृष्टि लगाए रहता है, उसी को प्राप्त करने की लालसा में पूरी रात जागता है, उसी प्रकार भक्त भी अपने परम आराध्य का प्रेम सान्निध्य प्राप्त करने के लिए तरसता रहता है।

उत्तर 9. इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि स्वयं को दीपक की बाती मानता है जो दीपक के प्रेम में रात-दिन जलता रहता है, उसी प्रकार कवि भी अपने परम आराध्य के प्रेम में दिन-रात उसका नाम जप किया करता है।

उत्तर 10. इस पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर ही गरीब नवाज़ है। गरीब, दीन-हीन और नीच कहलाने वाले व्यक्ति को अपनी शरण में लेकर सम्मान देने वाला एकमात्र ईश्वर ही है। ईश्वर ही समाज द्वारा ठुकराए जाने वालों को अंगीकार कर सम्मान प्रदान करता है। उनके यहाँ नीच-ऊँच, छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं है। परम दयालु ईश्वर ही उन्हें अपनी शरण में लेकर उच्च स्थान पर पदासीन करते हैं।

उत्तर 11. इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि का गोविंद इतना शक्तिवान है, सामर्थ्यवान है कि वह बिना किसी से डरे भेदभाव रहित, होकर प्रत्येक कार्य करने वाला है। वह नीच को उच्च पद प्रदान करने में समर्थ है। उसकी कृपा होने पर नीच भी ऊँच बनकर सम्मान प्राप्त कर लेता है।

उत्तर 12. रैदास के पहले पद का मूल भाव है कि रैदास परम दयालु परमात्मा के परमभक्त हैं। वे अपने ईश्वर से इस प्रकार घुल-मिल गए हैं, एकाकार हो गए हैं कि उन्हें प्रभु से अलग करके देखा ही नहीं जा सकता। वह चंदन-पानी, घन-मोर, चंद और चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा के समान एक-दूसरे में लीन हो गए हैं। बिना ईश्वर के कवि स्वयं की कल्पना ही नहीं कर सकता।

उत्तर 13. इस पद का केंद्रीय भाव यह है कि कवि के प्रभु सर्वगुण संपन्न हैं। सर्वशक्ति-सामर्थ्यवान हैं। वे परम दयालु और समदर्शी हैं। उनमें भेदभाव का लेशमात्र भी नहीं है। वे गरीबों के रक्षक हैं, उनके रखवाले हैं। वे ही दीन-हीन-दलितों के उद्धार करने वाले हैं। उनमें ही नीच को भी ऊँच बनाने की क्षमता है। जिसपर उनकी कृपा हो गई, उसे बिना भेद भाव के अंगीकार करते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि ईश्वर के साथ चंदन और पानी, घन (बादल) वन और मोर, चंद्र-चकोर, मोती-धागा, दीपक-बाती, सोना-सुहागा की भाँति एकाकार हो गया है। कवि ईश्वर को परमभक्त हो गया है। वह ईश्वर से इस प्रकार एकाकार हो गया है जैसे चंदन के संपर्क में जल के आने से पूरे जल में चंदन की सुगंध व्याप्त हो जाती है, उसी प्रकार ईश्वर भी कवि के रोम-रोम में समा गया है। कवि ईश्वर को काले बादल के समान बताते हुए कहता है कि काले बादलों के आने से जंगल में जैसे मोर आनंदित होकर नाचने लगते हैं, उसी प्रकार ईश्वर की कृपा प्राप्त होने पर उसका मनमयूर प्रसन्नता में नाचने लगा है। कवि चकोर पक्षी की भाँति चंद्रमा-रूपी ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए तरस रहा है। कवि दीपक की बाती की भाँति ईश्वर के प्रेम

में जल रहा है। जैसे मोती को धागे में पिरोया जाता है उसी प्रकार वह भी ईश्वर में पूर्ण रूप से लीन हो गया। इस प्रकार कवि ईश्वर में एकाकार हो गया है।

उत्तर 2. ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण करने वाली भक्ति से ही मनुष्य का कल्याण हो जाता है। कवि ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम व्यक्त करता है। वह ईश्वर के सान्निध्य के लिए कुछ भी कर सकने के लिए तत्पर है। कवि ईश्वर को स्वामी के रूप में और स्वयं को सेवक के रूप मानता है। कवि ईश्वर को सर्वगुण संपन्न, सामर्थ्यवान ओर शक्तिवान मानता है। उसके अनुसार ईश्वर भेदभाव से रहित है। उसके यहाँ छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच का कोई भेदभाव नहीं हैं। वह केवल भक्ति को सर्वश्रेष्ठ मानता है और अपने भक्त का कल्याण करने में पूर्ण समर्थ है। वही एकमात्र दीन-हीन-दलितों को अंगीकार कर उन्हें सम्माननीय बना सकता है।

उत्तर 3. कवि ने अपने परम आराध्य परमात्मा को गरीब नवाज़ कहा है। इसका कारण यह है कि परमपिता परमेश्वर के यहाँ ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा का कोई भेद नहीं है। ईश्वर अपने गरीब, दीन-हीन, दलित भक्तों को परम पद प्रदान करता है। उस परमपिता परमेश्वर के यहाँ भाव की, प्रेम की प्रधानता है। जो उसके प्रति प्रेमभाव रखता है, अंहकार शून्य होकर पूर्ण समर्पण से उसे याद करता है, वह दीनदयाल ईश्वर उसे बिना समाज की परवाह किए समाज में उच्च सम्मान प्रदान करता है।

उत्तर 4. इस पंक्ति का आशय यह है कि यह समाज दीन-हीन दलित लोगों को सम्मान नहीं देता, उनसे दूर रहता है। परंतु परमपिता परमेश्वर सभी तरह के भेदभाव से रहित होकर, इन दीन-हीन-दलित लोगों को गले-से लगाता है। उन्हें समाज में सम्मान, प्रतिष्ठा प्राप्त करने योग्य बनाता है। कवि कहता है कि इस संसार में जिसे कहीं शरण नहीं मिलती वह इसी परम कृपालु परमात्मा की शरण में आता है। इस परम दयालु प्रभु में नीच को भी उच्च करने की सामर्थ्य है। कवि कहता है कि हमारे गोविंद किसी से डरने वाले नहीं है। वे भक्तिभाव के भूखे हैं। उन्हें जहाँ भक्तिभाव से याद किया जाता है, वे वहाँ निश्चित रूप से पहुँच जाते हैं और अपने भक्त का कल्याण करते हैं।

उत्तर 5. रैदास के पाठ में लिए गए पदों का केंद्रीय भाव इस प्रकार है–

पहले पद में कवि अपने प्रभु का अनन्य भक्त है। वह अपने आराध्य को स्मरण करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। कवि का प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद या गुरुद्वारे में नहीं विराजमान है। वह सदैव कवि के ह्दय में निवास करता है। कवि का प्रभु सर्वगुण संपन्न, सर्व सामर्थ्यवान है, वह समदर्शी है इसीलिए कवि ईश्वर में एकाकार एवं पूर्ण रूप से लीन हो गया है।

दूसरे पद में कवि ने ईश्वर की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन किया है। रैदास कहते हैं कि भगवान ने तथाकथित निम्न कुल के भक्तों को भी सहज भाव से अपनाया है, उनपर अपनी कृपा दृष्टि फेरी है और उन्हें समाज में सम्माननीय स्थान दिलाया है।

उत्तर 6. कविता छंदबद्ध रचना है। छंद नाद सौंदर्य की सृष्टि करता है। छंद के द्वारा ही कविता में लय, तुक, गति और प्रवाह आता है। वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से कविता में नाद सौंदर्य और संगीतात्मकता आती है तथा कविता का सौंदर्य बढ़ जाता है।

रैदास के पदों में नाद सौंदर्य है क्योंकि प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों का प्रयोग हुआ है, इसीलिए इसमें नाद सौंदर्य अर्थात ध्वनि का सौंदर्य आ गया है; जैसे–पानी-समानी, मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा आदि।

पाठ–7

दोहे

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) प्रेम की डोर किसी स्वजन से बँधी होती है। कवि रहीम के दोहे अनुभव की कसौटी पर कसे हुए हैं और सत्य पर आधारित हैं। कवि का अनुभव यह है कि प्रीत के धागे को किसी से बाँधने में बहुत त्याग, समर्पण और विश्वास की आवश्यकता होती है। इसलिए कवि कहते हैं कि प्रेम के धागे को बहुत सँभाल के रखना होता है।

उत्तर (ii) रहीमदास जी प्रेम के धागे को न तोड़ने की बात इसलिए कहते हैं क्योंकि प्रेम का धागा बाँधने में बहुत त्याग, परिश्रम और विश्वास बनाना पड़ता है तब कहीं मुश्किल से यह धागा जुड़ता है। इसलिए कवि प्रेम के धागे को न तोड़ने की बात कहता है। जब दो प्रेमियों के बीच विश्वास टूट जाता है तो यह प्रेम का धागा भी टूट जाता है, और यदि फिर जुड़ता है तो उसमें धागे की भाँति गाँठ पड़ जाती है।

उत्तर (iii) धागा जोड़ने से कवि का आशय है–प्रेम संबंध स्थापित करना, आपस में आत्मीयता स्थापित करना।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) एक के साधने का अभिप्राय है एक का ही विश्वास प्राप्त करना, एक ही ईश्वर की आराधना करना। एक ही जगह ध्यान केंद्रित करना। कवि रहीम कहते हैं कि एक के ही साधने से एक परमपिता परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर लेने पर सभी अपने आप ही प्रसन्न हो जाते हैं।

उत्तर (ii) कवि रहीम एक ही ईश्वर की आराधना पर बल देते हैं। इसके लिए दृष्टांतस्वरूप कवि वृक्ष की जड़ की उपमा देते हैं कि वृक्ष के मूल में जल देने से वृक्ष की जड़ों और सभी शाखाओं को जल प्राप्त हो जाता है और अच्छी तरह फल-फूल देते हैं। उसी तरह एक ही परमात्मा की आराधना से उनसे सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं।

उत्तर (iii) कवि कहता है कि वृक्ष के मूल में जल देने से वृक्ष के सभी भागों को प्राप्त हो जाता है।

काव्यांश – 3

उत्तर (i) रहीम कवि कहते हैं कि अवध के राजा राम चित्रकूट में रमण कर रहे हैं चित्रकूट की महिमा अपार है। चित्रकूट वह स्थान है जहाँ अवध के होने वाले राजा राम माता-पिता की आज्ञा से चौदह वर्ष का वनवास गए, तब उनका प्रथम निवास चित्रकूट ही रहा। इस दोहे में रहीमदास कह रहे हैं विपदा के समय ईश्वर के शरण में ही जाना चाहिए, क्योंकि विपदा के समय वन भी राजमहल लगने लगता है, जैसे राम को चित्रकूट में लगा था।

उत्तर (ii) अयोध्या के राजा राम को विपत्ति के समय चित्रकूट जैसे वन में रहना पड़ा था। उसी तरह मनुष्य को विपदा पड़ने पर ईश्वर शरण में जाना चाहिए। वही परम कृपालु विपदा में उसे दूर करने की शक्ति प्रदान करेंगे।

उत्तर (iii) यह दोहा हमें इसलिए प्रभावित करता है क्योंकि कवि विपदा में व्यर्थ इधर-उधर भटकने की बजाय ईश्वर शरण में जाने की बात कहता है।

काव्यांश – 4

उत्तर (i) प्रस्तुत दोहे में पंक जल की तुलना सागर से की गई है। कवि कह रहा है पंक युक्त तालाब या जलाशय सागर के जल से कहीं बहुत अच्छा और महान है क्योंकि है क्योंकि सागर में विशाल जलराशि होने के बावजूद खारा होने के कारण वह व्यर्थ है, क्योंकि उसे पीया नहीं जा सकता, किंतु पंक युक्त सरोवर के थोड़े जल से प्राणियों की प्यास बुझती है।

उत्तर (ii) समुद्र जल इसलिए महान नहीं है क्योंकि खारा होने के कारण ये पेय योग्य नहीं है। वह किसी की प्यास नहीं बुझा सकता।

उत्तर (iii) पंक जल इसलिए अच्छा है क्योंकि वह प्राणियों की प्यास बुझाने में सक्षम है।

काव्यांश – 5

उत्तर (i) प्रस्तुत दोहे के माध्यम से कवि अपने अनुभव एवं जीवन-सत्य का उद्घाटन करते हुए उदाहरण देते हैं कि जब कोई बात एक बार बिगड़ जाती है तब लाख प्रयत्न करने पर भी बनती नहीं। ठीक उसी तरह जैसे फटे हुए दूध को मंथने से मक्खन नहीं निकलता। फटे हुए दूध में घी नहीं बनता। यह जीवन का कठोर सत्य है जिसे मनुष्य को हरदम ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर (ii) कवि ने अपने अनुभव कथन के समर्थन में फटे हुए दूध का उदाहरण दिया है। जिस प्रकार फटे हुए दूध को लाख माथने पर मक्खन नहीं निकलता उसी तरह एक बार बिगड़ी बात लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी नहीं बनती।

उत्तर (iii) दूध जब फट जाता है तब उसमें से मक्खन नहीं निकलता।

काव्यांश – 6

उत्तर **(i)** रहीम के अनुसार जीवन में समय का बहुत महत्व है। समय पड़ने पर मनुष्य को कब किसकी ज़रूरत पड़ जाए, कहा नहीं जा सकता। इसलिए उसे छोटी और बड़ी, हर प्रकार की वस्तु को महत्वपूर्ण समझना चाहिए। बड़े के समक्ष छोटे को कभी भी नहीं त्यागना चाहिए क्योंकि जहाँ जैसी छोटी वस्तु से काम चलना है वहाँ तलवार कुछ सहायता नहीं कर सकती।

उत्तर **(ii)** कवि दोहे में सूई का उल्लेख एक सूक्ष्म वस्तु और उसकी महत्वपूर्ण उपयोगिता के संदर्भ में किया है। कवि यह बताने का प्रयास किया है कि समय के अनुसार जहाँ सूई की सहायता से काम संपन्न होना है वहाँ बड़ी होने पर भी तलवार कोई सहायता नहीं कर सकती।

उत्तर **(iii)** इस दोहे से यह प्रेरणा मिलती है कि छोटी और बड़ी सभी वस्तु का सम्मान करना चाहिए।

काव्यांश – 7

उत्तर (i) रहीम जी को जीवन का विशाल अनुभव था। उन्होंने इस संसार को बहुत निकट से देखा था। उन्होंने देखा था कि विपत्तिकाल मन की व्यथा जानने के बाद भी कोई भी उसे बाँटने का प्रयत्न नहीं करता बल्कि जान लेने में चार लोगों में बाँटकर आनंद उठाते हैं। इसीलिए उन्होंने कहा अपने मन की व्यथा को अपने मन में ही अपने तक ही सीमित रखना चाहिए।

उत्तर (ii) दूसरों के मन की पीड़ा को जान लेने के बाद कोई भी उसे बाँटने का प्रयत्न नहीं करता बल्कि और चार लोगों में बाँटकर मज़ाक उड़ाता और आनंदित होता है। इसीलिए कवि अपने मन की पीड़ा को किसी से कहने के लिए मना करता है।

उत्तर (iii) अठिलैहैं का अर्थ – मज़ाक उड़ाएँगे, इठलाएँगे।

काव्यांश – 8

उत्तर (i) कवि रहीम कहते हैं कि दोहा छंद में यद्यपि अक्षर बहुत कम होते हैं परंतु ये बहुत गंभीर और विशाल अर्थ लिए होते हैं। ठीक उसी तरह जैसे–रस्सी पर करतब दिखाने वाला समर्थ नट कुंडली समेटकर कूदकर रस्सी पर चढ़ जाता है। इस प्रकार इस दोहे का मूल भाव है किसी वस्तु को छोटी नहीं समझनी चाहिए। उसकी उपयोगिता बहुत बड़ी हो सकती है। दूसरा भाव है– दोहा छंद को अक्षर कम होने से छोटा नहीं समझना चाहिए, इसमें गंभीर अर्थ दिया होता है।

उत्तर (ii) कवि ने 'नट' का उदाहरण इसलिए दिया है कि रस्सी पर खेल तमाशे दिखाने वाला अपनी दक्षता से अपने शरीर को सिकोड़कर तंग रास्ते में भी सफलतापूर्वक निकल जाता है या रस्सी पर कूदकर चढ़ जाता है। उसी प्रकार दोहा छंद छोटा होने पर भी बहुत गूढ़ अर्थ लिए होता है।

उत्तर (iii) कवि रहीम के अनुसार दोहे आकार में छोटे होने पर भी गंभीर अर्थवान होते हैं।

काव्यांश – 9

उत्तर (i) रहीम ने उन लोगों को पशु से भी अधर्म बताया है जो लोग कलाकार की कला पर मोहित होकर भी कभी कलामर्मज्ञ उसकी कला का मूल्य नहीं समझता और उसे बिना कुछ दिए उसे खाली हाथ जाने देता है। दूसरों की कला से, उसके सद्व्यवहार से प्रभावित होना भी उसे खाली हाथ जाने देना पाशविक कर्म है। जबकि संगीत की ध्वनि (नाद) से प्रभावित होकर हिरण पशु होकर भी अपने प्राण दे देता है।

उत्तर (ii) कवि रहीम इस दोहे के माध्यम से कहते हैं– हिरण पशु होकर भी संगीत नाद को सुनकर इतना मुग्ध हो जाता है कि उसे अपने प्राण की भी सुध नहीं रहती और शिकारी के हाथों मारा जाता है। वे व्यक्ति तो पशु के समान हैं जो किसी कलाकार की कला पर रीझने के बावजूद कलामर्मज्ञ होकर भी उसे कुछ नहीं देते, उसकी कला का अपमान करते हैं।

उत्तर (iii) मृग नाद (संगीत की शब्द ध्वनि) पर मुग्ध होकर प्राण तक न्योछावर कर देता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. माता-पिता के चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा के कारण अवधनरेश राम को वन जाना पड़ा था।

उत्तर 2. 'नट' अपने संपूर्ण शरीर (कुंडली) को समेट कर संकरे मार्ग में भी कूदकर ऊपर चढ़ जाता है।

उत्तर 3. सागर की बड़ाई इसलिए नहीं होती कि विशाल जलराशि होने पर भी वह किसी की प्यास नहीं बुझा सकता क्योंकि उसका जल खारा होता है।

उत्तर 4. हिरण नाद पर मुग्ध होकर अपने प्राण गँवा बैठता है।

उत्तर 5. रहीम कवि ने सुझाव दिया है कि प्रेम के धागे ऐसा मत तोड़ो की वह टूट ही जाये क्योंकि एक बार टूटने पर जुड़ तो जाता है पर गाँठ पड़ जाती है।

उत्तर 6. किसी के मन की व्यथा जानकर लोगों को बाँटने का प्रयत्न कर सके, जिससे व्यथित व्यक्ति को आराम मिले।

उत्तर 7. अवधनरेश को वनवास के कारण चित्रकूट जाना पड़ा।

उत्तर 8. अवधनरेश शब्द का प्रयोग 'राम' के लिए हुआ है।

उत्तर 9. वे लोग पशु से भी अधम होते हैं जो किसी कला पर रीझकर भी उसे खाली हाथ वापस भेज देते हैं।

उत्तर 10. बिना अपनी संपत्ति के बिगड़े दिनों में कोई साथी-सहयोग नहीं होता।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि ने इसे दो अर्थों में स्पष्ट किया है– पहला अर्थ है–एक शीर्ष व्यक्ति को मना लेने से, राज़ी कर लेने से सभी कार्य संपन्न हो जाते है क्योंकि उसके हाथ में सारे कार्यों का अधिकार होता है। दूसरा अर्थ है– एक परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर लेने के बाद सभी सांसारिक वस्तुएँ स्वत: सिद्ध हो जाती हैं। बिना ईश्वर-कृपा के प्राप्त सांसारिक वस्तुएँ भी किसी काम नहीं आती।

उत्तर 2. कवि के अनुसार– वृक्ष की जड़ में जल देने से ही सर्वांगीण विकास होता है। जड़ सींचने से ही वह शाखित, पल्लवित, पुष्पित होता है और उसमें फल लगने लगते हैं, उसी तरह किसी मुख्य व्यक्ति को पक्ष में कर लेने से सभी काम सिद्ध हो जाते हैं।

उत्तर 3. व्यक्ति किसी को अपना सुहृद जानकर ही अपने मन की व्यथा सुनाता है परंतु वह सुहृद व्यक्ति उसकी व्यथा में किसी प्रकार की मदद करना या उसकी व्यथा को बाँटने का प्रयत्न करना तो दूर, उसे चार लोगों में बाँट कर उसका मज़ाक उड़ाता है।

उत्तर 4. किसी वस्तु को छोटी समझकर उसकी उपेक्षा इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि जहाँ काम छोटी वस्तु से संपन्न होना है वहाँ बड़ी वस्तु कोई सहायता नहीं कर सकती, ठीक उसी तरह जैसे जहाँ काम सूई का है वहाँ तलवार का कोई उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए छोटी वस्तुओं को भी उतना की महत्त्व देना चाहिए जितना बड़ी को।

उत्तर 5. कवि उस तरह के व्यक्ति को पशु से भी बदतर बता रहा है जो किसी कलाकार की कला से मुग्ध होकर भी उसकी कला का मूल्य नहीं देता और खाली हाथ वापस भेज देता है। जबकि पशु होकर भी हिरन संगीत नाद से मुग्ध होकर अपने प्राण दे देता है।

उत्तर 6. हिरण संगीत नाद को सुनकर अपने प्राणों की चिंता किए बिना मुग्ध होकर दौड़ता चला आता है और बहेलिए (शिकारी) का शिकार बन जाता है। उसे अपने प्राण जाने का भय नहीं रह जाता।

उत्तर 7. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य इसलिए नहीं कर पाता क्योंकि कमल की प्यास जल से ही बुझती है। वह जल से ही जीवन पाता है और पुष्प रूप में खिलता है। उसी तरह अपनी संपत्ति के नष्ट होने पर दूसरा व्यक्ति साथ नहीं दे सकता।

उत्तर 8. कवि कहता है कि एक ही मुख्य व्यक्ति को पक्ष में कर लेने पर सारे काम हो जाते हैं अथवा एक ही परमात्मा की साधना कर उसे प्राप्त कर लेने पर सभी सांसारिक कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं रह जाती। ठीक उसी तरह वृक्ष की जड़ में पानी देने से ही वृक्ष का सर्वांगीण विकास होता है और वह शाखित, पल्लवित, पुष्पित होकर फल देने लगता है।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मोती, मानुष, चून के संदर्भ में पानी की उपयोगिता–**मोती** का पानी (आभा) समाप्त हो जाने पर उसकी चमक चली जाती है। ऐसे में मोती महत्वहीन हो जाती है। **मनुष्य** का पानी (चरित्र/मान-सम्मान) चले जाने पर उसकी भी पूछ समाज में नहीं रह जाती। उसका जीवन व्यर्थ प्रतीत होने लगता है। **चून**–चूना में पानी न रहने पर वह मृत हो जाता है। चूने की शक्ति क्षीण हो जाती है। चून का अर्थ आटा से भी लिया गया है। आटा पानी से गूँथ कर ही विभिन्न पकवान बन सकता है परंतु पानी के बिना उसकी उपयोगिता घट जाती है। इस तरह मोती, मनुष्य और चूना/आटा के लिए पानी की बहुत उपयोगिता है।

उत्तर 2. प्रेम रूपी धागा टूटने पर जुड़ तो जाता है परंतु उसमें गाँठ पड़ जाती है। प्रेम परस्पर आपस के विश्वास का परिणाम होता है। परस्पर विश्वास बहुत परिश्रम और त्याग का परिणाम होता है जो बहुत कोमल होता है। जुड़ता तो बहुत त्याग परिश्रम से है परंतु तनिक चूक हुई, तनिक भी स्वार्थ का उदय हुआ कि यह प्रेम रूपी कोमल धागा टूट जाता है। फिर जुड़ तो जाता है परंतु उसमें विश्वास की गाँठ पड़ जाती है। ठीक वैसे ही मानव मन में एक बार संदेह जागृत हो जाए अर्थात प्रेम रूपी धागा टूट जाए तो उसे पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता।

उत्तर 3. प्रेम रूपी धागा मानव संबंधों को एक सूत्र में बाँधता है। यह प्रेम मानव के बीच बहुत विश्वास और परिश्रम से उपजता है। यह प्रेम सूत्र इतना कोमल होता है कि तनिक से स्वार्थ के आते ही विश्वास को डगमगा देता है और यह धागा टूट जाता है। फिर प्रायः तो जुड़ता ही नहीं; और जुड़ता है तो अविश्वास की गाँठ पड़ जाती है। अतः प्रेम संबंध अथक प्रयत्न से बनते हैं जब एक बन जाते हैं तो उन्हें बहुत सावधानी से सँभालना चाहिए। एक बार टूट जाने पर वह मधुरता समाप्त हो जाती है। दोनों पक्षों के मन में दरार पड़ जाती है। चाहकर भी दोनों एक-दूसरे पर विश्वास नहीं कर सकते। ठीक उसी तरह जब मानव मन में एक बार संदेह उत्पन्न हो जाए, अविश्वास आ जाए तो प्रेम का धागा टूट जाता है और जुड़ता नहीं और यदि जुड़ता है तो गाँठ पड़ जाती है।

उत्तर 4. प्रस्तुत दोहे में कवि रहीम अपने मन की पीड़ा दूसरों को नहीं बताने का परामर्श देते हुए कहते हैं– मन के दुख को, मन की व्यथा को मन में ही रखना चाहिए किसी से व्यक्त नहीं करना चाहिए। क्योंकि सभी लोग आप की व्यथा को सुनकर कोई सहायता नहीं करेंगे परंतु आपका मज़ाक अवश्य उड़ाएँगे। कवि अपने अनुभव को बाँटते हुए कह रहे हैं कि कोई किसी के दुख में साथी नहीं होता। दूसरे के दुख में व्यथित होने की या दुख बाँटने की आदत ही नहीं होती बल्कि पीड़ित व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने के अभ्यस्त होते हैं। इसीलिए कवि ने अपने मन की व्यथा किसी से न बताने की सलाह दी है।

उत्तर 5. कवि रहीम ने कहा है–बड़े आदमी की संगति हो जाने या बड़ी वस्तु के प्राप्त होने पर छोटे आदमी का त्याग नहीं करना चाहिए या छोटी वस्तुओं को फेंक नहीं देना चाहिए। कब किसकी आवश्यकता पड़, जाए क्योंकि जहाँ सूई से कार्य हो सकता है, वहाँ तलवार कोई सहायता नहीं कर सकती। सूई का कार्य सूई ही कर सकती है।

पाठ–8

एक फूल की चाह

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) जिस माँ की संतान मर गई हो उसे मृतवत्सा कहते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि सियारामशरण गुप्त ने उस समय का वर्णन किया है जब समाज में छुआछूत का घोर अभिशाप समाज पर प्रभावी था। छोटी जातियों के लोगों का मंदिरों में प्रवेश वर्जित था। उन्हीं दिनों बीमारी का भी प्रकोप गाँवों में आता था और गाँव के गाँव बीमारी को भेंटे चढ़ जाते। उसी समय का वर्णन कवि ने अपनी रचना में किया है, जिसमें अनेक माताएँ अपनी प्रिय संतानों को खो देती थी। उन्हीं के लिए मृतवत्सा शब्द का प्रयोग किया है।

उत्तर (ii) हाहाकार मचने और आँसुओं की झड़ी लगने का कारण था –गाँव में महामारी का प्रकोप। कविता के रचनाकाल के समय ऐसी भयानक बीमारियों का प्रकोप होता था जो गाँव के गाँव को मृत्यु की गोद में सुला जाता था। उस समय गाँवों में चीख-चिल्लाहट और हाहाकार की ध्वनि उठ जाती। सुहृदजनों की आँखों से अश्रु सूख नहीं पाते थे।

उत्तर (iii) यहाँ प्रस्तुत कविता में उस समय के महामारी का वर्णन किया गया है जब सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ था।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) पिता सुखिया को बाहर इसलिए नहीं जाने देना चाहते थे कि गाँव में महामारी फैली हुई थी। सुखिया एक बार बीमारी का शिकार हो चुकी थी, किसी प्रकार उसके प्राण बचे थे। अब दोबारा उसे मृत्यु के जाल में जाता नहीं देखना चाहते थे। इसलिए उसे बाहर खेलने के लिए नहीं जाने देना चाहते थे।

उत्तर (ii) सुखिया पिता के लाख कहने और समझाने पर भी बाहर खेलने के लिए जाने की जिद्द कर रही थी। वह पिता की बात किसी तरह मानने को तैयार नहीं थी। पिता उसकी बाल सुलभ जिद्द से बहुत दुखी थे। वे उसे बहुत प्यार करते थे और किसी भी प्रकार से खोना नहीं चाहते थे इसीलिए बहुत दुखी थे।

उत्तर (iii) उसके पुनः बीमार होने के डर से पिता का हृदय काँप उठता था।

काव्यांश – 3

उत्तर (i) सुखिया के पिता उसकी इच्छा की पूर्ति के लिए देवी जी के मंदिर से देवी पर चढ़ा एक फूल लेने गए थे। वहाँ के सवर्ण लोग एक दलित का मंदिर में प्रवेश करना और देवी की मूर्ति को अपवित्र कर देना बर्दाश्त न कर सके। उसके ऊपर मंदिर को अपवित्र करने और देवी का अपमान करने का आरोप लगाकर सुखिया के पिता को जेल भेजवा दिया। उसका अपराध दलित होकर मंदिर में प्रवेश और देवी का अपमान करना था। जिसका उसे दंड मिला।

उत्तर (ii) सुखिया के पिता के जेल से छूटकर निकलने पर पैर घर की ओर इसलिए नहीं उठ रहे थे कि उनके मन में एक अनजान भय बैठ गया था। वह सोच रहा था कि सुखिया जीवित होगी या नहीं और यही भय उसे घर की ओर जाने से रोक रहा था। उसे क्षण-क्षण सुखिया की बाल सुलभ हाव-भाव याद आ रहे थे और इसी डर से वह घर की ओर जाने से हिचक रहा था।

उत्तर (iii) सुखिया पिता को लेने बाहर इसलिए नहीं आई क्योंकि उसका प्राणांत हो गया था।

काव्यांश – 4

उत्तर (i) सुखिया का पिता मंदिर में उपस्थित भक्त जनों से यह कहना चाहता था कि हमारे मंदिर में आने से देवी कैसे अपमानित हो सकती है जबकि वह पतितपावनी है, पाप हारिणी है तब हमारे आने से उसका गौरव कैसे कम हो सकता है। लेकिन सवर्ण भक्तों ने उसे यह कहने का अवसर नहीं दिया और मारने-पीटने लगे।

उत्तर (ii) भक्तों ने सुखिया के पिता को घेर लिया क्योंकि वह दलित होकर मंदिर में घुस आया था जबकि दलितों का मंदिर में प्रवेश वर्जित था। उनके प्रवेश मात्र से मंदिर की शुचिता नष्ट हो जाती है और देवी-देवता का गौरव नष्ट हो जाता था। जब लोगों ने सुखिया के पिता को देखा तो क्रुद्ध हो गए और उसे घेर लिया।

उत्तर (iii) मंदिर में उसके प्रवेश करने का खोटा विचार काव्यांश में कहा गया है।

काव्यांश – 5

उत्तर (i) सुखिया के पिता को मंदिर में प्रवेश करने और देवी का गौरव नष्ट करने के अपराध में न्यायालय ले जाया गया। उस समय दलितों के मंदिर प्रवेश-निषेध का विधान था जिसके अंतर्गत उसे सात दिनों का कारावास का दंड न्यायालय द्वारा मिला क्योंकि उसने देवी का घोर अपमान किया था।

उत्तर (ii) सुखिया के पिता के हाथों से मंदिर के पुजारी द्वारा दिया गया प्रसाद बिखर गया क्योंकि मंदिर के भक्तों ने उसे घेरकर पकड़ लिया और लात-घूसों से मारकर नीचे गिरा दिया था।

उत्तर (iii) सुखिया के पिता को न्यायालय ने सात दिन की कारावास का दंड दिया था।

काव्यांश – 6

उत्तर (i) सुखिया ने पिता से देवी प्रसाद के रूप में एक पुष्प लाने को कहा था क्योंकि वह तेज़ बुखार में तप रही थी। देवी माँ के प्रति उसकी बाल-सुलभ श्रद्धा के कारण उसे माँ के एक फूल को प्रसाद के रूप में पाने की इच्छा हुई। उसे विश्वास रहा होगा कि देवी के प्रसाद को प्राप्त कर लेने से वह इस बीमारी से मुक्त हो सकती है। इसीलिए उसने पिता से देवी का फूल लाने का आग्रह किया।

उत्तर (ii) सुखिया के पिता को डर था कि जब सुखिया बाहर जाएगी तो बीमार हो जाएगी, इसीलिए उसे बाहर खेलने नहीं जाने देना चाहता था। आखिर वही हुआ। सुखिया बाहर खेलने गई और भयंकर ज्वर में तपती हुई घर आई। आखिर वह सुखिया के बाल-सुलभ जिद्द के सामने हार गया।

उत्तर (iii) 'विह्वल' शब्द का अर्थ है–बेचैन, दुखी।

काव्यांश – 7

उत्तर (i) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने सुखिया के ज्वर-तप्त शरीर को पाकर उसके दुखी पिता की मन:स्थिति का वर्णन करते हुए बताने का प्रयत्न किया। सुखिया के ज्वर से जलता हुआ शरीर और उसके कंठ का सूखना, आवाज़ का मंद पड़ जाना आदि लक्षण देखकर उसके पिता को समझते देर नहीं लगी कि यह महामारी का शिकार हो गई है–यही जानकर सुखिया के पिता के शरीर के सारे अवयव शिथिल हो गए।

उत्तर (ii) इस काव्यांश का मूलभाव यह है कि जब कोई मजबूर पिता अपनी आँखों के सामने अपनी संतान को बीमार, कष्टग्रस्त या विपत्ति आक्रांत देखता है तो उसका मन अपनी विवशता, असहायता पर रो उठता है, वह विह्वल हो उठता है अपनी संतान पर आई विपत्ति का निवारण करने के लिए यथाशक्ति उपाय ढूँढ़नें लगता है।

उत्तर (iii) सुनहरे बादलों में।

काव्यांश – 8

उत्तर (i) सुखिया के पिता को चारों और अंधकार-ही-अंधकार दिखाई दे रहा, सुखिया को बचा लेने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वह अपनी आँखों से देख रहा था कि सुखिया को ग्रसने के लिए महामारी-रूपी भयंकर अंधकार घिर आया था और वह विवश होकर देख रहा था।

उत्तर (ii) ऊपर आसमान में टिमटिमाते तारे सुखिया के पिता को बुखार में तपती बेटी की आँखों की तरह खुलते-बंद होते प्रतीत हो रह थे। इस प्रकार बुखार से तृप्त आँखों को वह उसी प्रकार देख रहा था जैसे आकाश में तारे जगमगाते जलते दिखाई दे रहे थे।

उत्तर (iii) कवि ने काव्यांश में अंगारों शब्द का प्रयोग विशाल आकाश में चमकते तारों से किया है अथवा बच्ची की चिंता से किया गया है जिसकी चमक से पिता की आँखें झुलस गई हैं।

काव्यांश – 9

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में सुखिया के पिता सुखिया को स्वयं उकसाकर यह सुनना चाहते थे कि वह उठकर उनसे कहे कि मुझको देवी का प्रसाद-रूपी एक फूल ही लाकर दे दो। सुखिया के पिता देख रहे थे कि जो चंचल लड़की हरदम अपनी चंचलता में ही प्रसन्न रहती थी वह स्थिर शांत-सी पड़ी है।

उत्तर (ii) सुखिया सुस्थिर हो चुपचाप एवं शांत पड़ी हुई थी क्योंकि उसपर महामारी का प्रकोप हो गया था और तेज बुखार से ग्रस्त हो जाने के कारण चलने में असमर्थ हो गई थी जिससे वह दुर्बलता महसूस कर रही थी। उसकी सारी बाल सुलभ चंचलता गायब हो गई थी।

उत्तर (iii) अटल शांति-सी का अभिप्राय है ऐसी शांति जो दूर होने वाली नहीं है, स्थिर है।

काव्यांश – 10

उत्तर (i) देवी के मंदिर में भक्तगण मधुर कर्णप्रिय स्वर में देवी का भजन गा रहे थे जिसका आशय था–माँ! तुम पतितों का उद्धार करने वाली हो, पापों का हरण करने वाली हो तुम्हारी जय हो, जय हो, जय हो, और मस्ती में झूम रहे थे।

उत्तर (ii) सुखिया के पिता को देवी माँ के आगे बढ़ने का बल भक्तों के भजन से मिला जिसे वे लोग गा रहे थे—माँ, तुम पतित तारिणी हो, पाप हरने वाली हो। जब माँ पतितों का उद्धार करने वाली हैं तो उनकी आराधना और प्रसाद लेने में डर कैसा? इन्हीं विचारों से सुखिया के पिता को देवी के समक्ष आगे बढ़ने का बल मिला।

उत्तर (iii) ढकेला गया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मरघट पहुँचकर सुखिया के पिता ने सुखिया के जले हुए शव का अवशेष देखा।

उत्तर 2. सुखिया के पिता को मंदिर की शुचिता और देवी के गौरव को नष्ट करने के अपराध में सात दिन का कारावास मिला।

उत्तर 3. महामारी का परिणाम सुखिया की मृत्यु के रूप में मिला।

उत्तर 4. मंदिर ऊँचे शैल शिखर पर स्थित था।

उत्तर 5. मंदिर का आँगन मुखरित उत्सव की धारा से आमोदित था।

उत्तर 6. मंदिर के बाहर-भीतर भक्तों का कीर्तन गाता हुआ मधुर स्वर गूँज रहा था।

उत्तर 7. सुखिया के पिता के हाथ से मंदिर के पुजारी ने दीप-फूल लेकर अंबा को अर्पित किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मंदिर में सुखिया के पिता के साथ जो व्यवहार किया गया, उससे समाज छुआछूत की कुप्रथा और दलितों के साथ अत्याचार की कुप्रथा के प्रचलन का पता चलता है। उस समय समाज में व्याप्त यह कुप्रथा समाज में जाति-वर्ग-भेद को बढ़ावा देने में सहायक हुई थी।

उत्तर 2. सुखिया को ज्वर से तप्त, कंठ सूखने और शरीर के सारे अंगों के शिथिल होने से उसे सुखिया के महामारी से ग्रस्त होने के लक्षण दिखने से उसके पिता की आँखों के सामने अंधकार छाने लगा। उसको सर्वत्र मृत्यु का अंधकार छाता हुआ दिखाई देने लगा। वह सुखिया से बहुत दुलार-प्यार करता था।

उत्तर 3. सुखिया का शरीर तीव्र ज्वर से तप्त हो रहा था, शरीर शिथिल हो गया था, कंठ सूख रहे थे, इसे देख पिता के समक्ष महामारी रूपी तिमिर की छाया देख उसे सर्वत्र अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगा। उसे विशाल आकाश में जगमग करते तारे जलते हुए अंगारे के समान लग रहे थे जिससे उसकी आँखें झुलस रही थी।

उत्तर 4. सुखिया के पिता सुखिया के मुँह से देवी का प्रसाद रूपी फूल लाने कहने की बात सुनना चाह रहे थे और इसी के लिए उसे बीमार होने की स्थिति में भी बार-बार उकसा रहे थे जिससे वह कुछ बोले, कुछ कहे। उस चंचल बालिका के मुँह से कुछ सुनना चाहते थे।

उत्तर 5. महामारी के ज्वर से ग्रस्त होने के कारण सुखिया अचल, स्थिर बिस्तर पर पड़ी थी मानों वह अटल-शांति धारण कर ली है। वह बालिका जो एक क्षण भी शांत बैठने वाली नहीं थी, आज वह एकदम शांत, स्थिर बिस्तर पर पड़ी थी।

उत्तर 6. सुखिया के पिता के साथ मंदिर में सवर्ण भक्तों ने जो व्यवहार किया, वह नितांत अशोभनीय और गलत था। यद्यपि उस समय का विधान था कि कोई अछूत मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकता था। यदि करता है तो दंड का भागी होगा। उसी दंड विधान के अंतर्गत उसे सात दिन का दंड मिला परंतु सवर्ण भक्तों का उसे मारना-पीटना अशोभनीय और मानवता के प्रतिकूल था। जब देवी पतित तारिणी और पाप हारिणी हैं तो उनके दरबार में एक दलित का प्रवेश करना गलत कैसे हो सकता है।

उत्तर 7. बीमार बच्ची ने अपने पिता से देवी प्रसाद के रूप में एक फूल लाने को कहा, जैसा कि पिता बिस्तर पर पड़ी उस असहाय बालिका से अपेक्षा कर रहा था कि वह कुछ बोले और मंदिर से एक फूल लाने को कहे। उनकी यह इच्छा आखिर बालिका ने सच कर दिया और देवी प्रसाद के रूप में एक फूल लाने को कहा।

उत्तर 8. सुखिया के पिता को मंदिर की शुचिता नष्ट करने और देवी का गौरव नष्ट करने के अपराध में दंडित किया गया क्योंकि सुखिया के पिता दलित समाज से जुड़े होने पर भी मंदिर में प्रवेशकर दीप-फूल देवी जी को चढ़ाने के लिए पुजारी जी को दिया। इसी अपराध के लिए वह दंडित किया गया।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. सुखिया के पिता को दिन-रात का आभास इसलिए नहीं हुआ कि उसकी परम प्रिय बेटी सुखिया का बदन ज्वर से तप रहा था और उसमें महामारी के लक्षण प्रकट होने लगे थे। बिटिया की यह दशा देख वह विह्वल हो उठा था। गरीबी की विवशता

उसके पैरों की ज़ंजीर बनी थी। वह बैठे-बैठे उसके उपचार का उपाय ढूँढ़नें में चिंतामग्न हो गया था। उसके मन में उसके उपचार के नए-नए उपाय ढूँढने की एवं अपनी असहायता की चिंता में कब प्रभात हुआ, कब दोपहर हुई और कब रात, इसका आभास ही नहीं रहा।

उत्तर 2. मंदिर में उपस्थित सवर्ण भक्तों ने सुखिया के पिता के साथ बहुत अभद्र और अमानवीय व्यवहार किया। जब देवी माँ पतित तारिणी और पाप हारिणी हैं तो सुखिया का पिता भी उस समय की सामाजिक और जातीय प्रथा के अनुसार एक पतित जाति से संबद्ध था, सबसे बड़ी बात थी, बेटी पर आई विपत्ति के कारण बहुत दुखी था और रुग्ण-शैया पर पड़ी सुखिया की इच्छापूर्ति के लिए देवी के प्रसाद स्वरूप एक फूल लेने ही आया था। परंतु हां! उस समय की सामाजिक व्यवस्था की एक पतित जाति के परिवार को भगवान-भगवती के दरबार में भी कोई स्थान नहीं था। आदमी तो अछूत कहकर उन्हें तिरस्कृत कर दिया था, भगवान के दरबार में भी सुखिया के पिता को तिरस्कार ही मिला। सवर्ण भक्तों ने सुखिया के पिता के अछूत होने के कारण उसकी कोई बात नहीं सुनी, उसे मारा-पीटा और न्यायालय पहुँचा दिया।

उत्तर 3. पद्य में प्रयुक्त शब्द 'पतित तारिणी' और 'पाप हारिणी' शब्द का प्रयोग देवी के लिए किया गया है। देवी माँ की कल्पना हमारे धर्मग्रंथों में माँ-स्वरूप की गई है और यह भी कहा गया है कि पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए परंतु माँ कुमाता कभी नहीं हो सकती। माँ का हृदय अपने सभी पुत्रों के लिए, चाहे वे अच्छे आचरण वाले हों या बुरे आचरण वाले हों, ममतापूर्ण होते हैं। माँ के हृदय में नीच-ऊँच, अच्छे-बुरे का भेद नहीं होता। इसीलिए देवी माँ को शास्त्रों में पतित तारिणी और पाप हारिणी कहा गया है। परंतु मंदिर में उपस्थित भक्त माँ का यही भजन गाते हुए भी मंदिर में एक पतित की उपस्थिति सहन नहीं कर सके और उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया।

उत्तर 4. सियारामशरण गुप्त द्वारा रचित यह 'एक फूल की चाह' कविता में समाज में व्याप्त अस्पृश्यता की कुरीति का ही परिणाम था जिसका दंड सुखिया के पिता को भुगतना पड़ा था। इस कुप्रथा के चलते किसी अस्पृश्य जाति से संबद्ध व्यक्ति को हिंदू धार्मिक संस्थानों में, मंदिरों में प्रवेश करना, धर्मग्रंथों का अध्ययन करना, पूजा-पाठ करना वर्जित था तथा ऐसा करने पर दंड का विधान था। इसी कुप्रथा के प्रभाव के कारण मंदिर में उपस्थित भक्तजन सुखिया के पिता को पहचानते ही भड़क उठे–अरे! यह अछूत मंदिर में कैसे प्रवेश किया.... पकड़ लो, भागने न पाए.... और लोगों ने पकड़ के मारा-पीटा और उसे न्यायालय के समक्ष भेज दिया। अछूत-प्रथा समाज का एक अभिशाप थी जिसके चलते हिंदू समाज में जबरदस्त बिखराव था।

उत्तर 5. 'एक फूल की चाह' कविता में कवि सियारामशरण गुप्त जी ने प्रस्तुत कविता में समाज में व्याप्त जातिगत छुआछूत की भयानक और अमानवीय प्रथा को सार्वजनिक रूप से उजागर करने का प्रयत्न किया है। मृत्यु-शैया पर पड़ी एक दलित-अछूत बालिका के मन में देवी के चरणों में अर्पित एक फूल पाने की चाहत है। परंतु इस कुप्रथा से गुप्त समाज अपनी जातिगत श्रेष्ठता के अंहकार से ग्रस्त हो एक अबोध रुग्ण बालिका के भावों को समझ पाने के लिए तैयार ही नहीं होता, जबकि देवी की अराधना में बड़े गर्व से गाता है–पतित-तारिणी पाप-हारिणी माता, तेरी जय-जय-जय। कवि ने इस कविता के माध्यम से इस कुप्रथा को उजागर कर लोगों के मन में इसके प्रभाव से जन्मी अमानवीयता के विषय में विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

उत्तर 6. **(क)** 'एक फूल की चाह' कविता के इस काव्यांश का आशय यह है कि अपनी रुग्ण-शैया पर पड़ी बीमार बेटी से सात दिन दूर रहकर भी उसकी यादों में लगातार रोता रहा फिर भी उसकी आँखों के आँसू नहीं सूख सके अर्थात आँसुओं का कोष समाप्त नहीं हो सका। उसकी पीड़ा अनवरत आँखों से आँसू के रूप में झरती रही।

अर्थ-सौंदर्य– इस कविता में कवि ने एक दुखी पिता की मनोदशा का मार्मिक वर्णन किया है। उसकी दशा इतनी दयनीय है कि उसकी दशा को देख पाषाण हृदय भी पिघल जाए, परंतु उसे इस दशा तक पहुँचाने वालों में विरुद्ध प्रबल आक्रोश था।

(ख) उपर्युक्त काव्यांश का आशय है कि सात दिन का दंड भुगतकर जब सुखिया का पिता घर लौटा तो यह देखकर स्तब्ध रह गया कि उसकी बेटी मर चुकी है और उसकी चिता भी ठंडी पड़ गई है। यह हृदयविदारक दृश्य देखकर पिता के हृदय में दुख और पीड़ा की चिता दहकने लगी। वह बहुत दुखी हो गया।

अर्थ-सौंदर्य–इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने बताना चाहा है कि बेटी की चिता तो ठंडी पड़ चुकी थी परंतु पिता का हृदय दुख और पीड़ा की ज्वाला से धधक रहा था।

उत्तर 7. **(क)** प्रस्तुत काव्यांश में कवि रुग्ण बालिका की दया का वर्णन करते हुए कह रहा है–जो बालिका एक क्षण भी घर में नहीं रह सकती थी आज वही स्थिर बिना कोई अंग हिलाए ज्वर ग्रस्त बिस्तर पर लेटी पड़ी थी।

अर्थ-सौंदर्य–यहाँ कवि यह बताना चाहता है कि हरदम भागने-दौड़ने वाली चंचल वह बालिका गतिहीन होकर चुपचाप अटल और शांत बिस्तर पर पड़ी है।

(ख) उपर्युक्त पद्यांश में कवि समाज में व्याप्त अछूत कुप्रथा का दृश्य व्यक्त करते हुए कहता है कि भक्त-गण मंदिर में उपस्थित सुखिया के पिता को देखकर चीख उठे—उस अछूत पापी ने मंदिर में प्रवेशकर घोर अनर्थ किया है।

अर्थ-सौंदर्य—कवि कहना चाहता है कि जिस व्यक्ति ने सच्चे मन से, श्रद्धा भाव से आराधना की और शुद्ध मन से एक अबोध बच्ची की इच्छा पूरी करना चाहा, उसे अंहकारी लोगों ने पापी कहा।

उत्तर 8. सुखिया के बाहर जाने पर उसके पिता का हृदय इसलिए काँप उठता था क्योंकि इस समय उसके आस-पास चारों ओर महामारी का भीषण प्रकोप था। चारों ओर चीखते-चिल्लाते लोगों का करुण क्रंदन सुनाई पड़ता था। सुखिया स्वभाव से बहुत चंचल थी। वह घर में एक क्षण भी रहना पसंद नहीं करती थी। बालिका थी और अपने हमजोलियों के बीच खेलने निकल जाया करती थी। महामारी छुआछूत की बीमारी थी जो हवा में फैले जीवाणुओं से एक गाँव से दूसरे गाँव में फैलती थी। उसका पिता इसी से डरता था कि कहीं वह भी इस बीमारी का शिकारी न बन जाए। इसीलिए वह बार-बार सुखिया को बाहर जाने से रोकता था। लेकिन वह इतनी जिद्दी थी कि उसका कहा मानती ही नहीं थी।

उत्तर 9. पर्वत की चोटी पर स्थित एक देवी का विशाल मंदिर था। उस मंदिर की शोभा अनुपम थी। मंदिर के शीर्ष पर लगे सोने के कलश सूर्य की किरणों के पड़ने से ऐसे चमक रहे थे जैसे स्वर्ण कमल खिले हुए हों। मंदिर के आँगन में सर्वत्र धूप एवं धुएँ की सुगंध फैली हुई थी। मंदिर के बाहर और भीतर, चारों ओर उत्सव का वातावरण व्याप्त था। मंदिर में चारों ओर देवी का जयगान मुखरित हो रहा था। सर्वत्र भक्तिमय वातावरण व्याप्त था।

उत्तर 10. मंदिर के पुजारी से प्रसाद के रूप में फूल पाने के बाद सुखिया का पिता आनंदातिरेक से पूर्ण हो गया। उसे पुजारी से प्रसाद लेने की भी सुध नहीं रही। वह शीघ्रतापूर्वक देवी जी के इस प्रसाद रूपी फूल को सुखिया को देना चाहता था इसलिए वह मंदिर से शीघ्रातिशीघ्र घर पहुँचाना चाहता था। इस प्रकार उसकी मनोदशा में तीव्र परिवर्तन आया जब उसने मंदिर से प्रसाद रूप में सुखिया का मनचाहा फूल प्राप्त कर लिया।

पाठ–9

गीत-अगीत

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में नदी के बहने से जो दृश्य उत्पन्न होता है उसका कवि ने मनोहारी वर्णन किया है।

उत्तर (ii) नदी किसी के बिछड़ने के दु:ख में दुखी है। वह किनारों को अपना दु:ख कहती हुए बड़ी तेज़ी से बह रही है। गुलाब मौन होकर किनारे खड़ा है और यह सब देख रहा है।

उत्तर (iii) यदि विधाता ने इन्हें भी स्वर की शक्ति दी होती, तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाते।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुंदर वर्णन किया है।

उत्तर (ii) पत्तों से छनकर आती सूर्य की आभा जब तोते के पंखों का स्पर्श करती है, तो वह गाना गाने लगता है।

उत्तर (iii) तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। इसलिए कवि के मन में प्रश्न उमड़ता है कि मेरे द्वारा गाया गया गीत सुंदर है या प्रकृति द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुंदर है?

काव्यांश – 3

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने वन में रहने वाले दो प्रेमियों का वर्णन किया है।

उत्तर (ii) संध्या के समय प्रेमी द्वारा गीत गाने पर प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह छिपकर अपने प्रेमी का गाना सुनती है।

उत्तर (iii) प्रेमिका मन-ही-मन सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती, क्योंकि जब प्रेमी गाता है तो प्रेमिका का मन प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. गुलाब के हृदय में कसक है कि विधाता ने उसको स्वर क्यों नहीं दिया।

उत्तर 2. तोते के स्वर से पूरा वन मुखरित हो जाता है।

उत्तर 3. शुकी का गीत अगीत है।

उत्तर 4. प्रेमिका नीम की छाया में छिपकर सोचती है कि वह गीत की कड़ी क्यों नहीं बन पाई।

उत्तर 5. प्रेमी आल्हा गाता है।

उत्तर 6. कवि की दुविधा है कि वह अगीत सुंदर है जो गाया नहीं जा सका या ग्वाल-बाल द्वारा गाया जाने वाला गीत सुंदर है।

उत्तर 7. प्रकृति के सौंदर्य, जीव-जंतुओं के ममत्व, मानवीय राग और प्रेमभाव का चित्रण है।

उत्तर 8. 'गीत-अगीत' कविता रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखी गई है।

उत्तर 9. नदी तट से अपने मन की व्यथा कहना चाहती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'गीत-अगीत' में प्राकृतिक सौंदर्य, जीव-जंतुओं का ममत्व और मानवीय प्रेम के मुखरित और मौन रूपों का चित्रण किया गया है। इस कविता में एक ओर नदी, शुक और प्रेमी के माध्यम से प्रेम का मुखर रूप गीत और उसका प्रभाव दिखाया गया है तो दूसरी ओर गुलाब, शुकी और प्रेमिका के माध्यम से मौन रूपी अगीत। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण है।

उत्तर 2. कविता में नदी को एक विरहिणी नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। वह किसी के बिछड़ने के दु:ख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेज़ी से बह रही है। वह विरह भरे गीतों को किनारों को सुनाते हुए बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दु:ख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। और अपना जी हलका करती है।

उत्तर 3. संध्या होते ही प्रेमी उमंग भरे स्वर में आल्हा का गायन कर अपने प्रेम को अभिव्यंजित करता है। उसका यह प्रेम 'गीत' बन जाता है। वहीं उस गीत को सुनकर उसकी प्रेमिका आकृष्ट हो जाती है और भाव-विभोर हो उस गीत को सुनने लगती है। उस समय उसके मन में भी प्रेम भरे गीत उमड़ते हैं, परंतु वह उन्हें स्वर नहीं दे पाती है। उसका प्रेम 'अगीत' बनकर रह जाता है।

उत्तर 4. जब पेड़ की घनी डाल पर बैठा शुक सूर्य की आभा के स्पर्श से पुलकित होकर गीत गाने लगा। तब उसी पेड़ के घोंसले में बैठी शुकी अंडे से रही थी। शुक का गीत सुनकर शुकी भावविभोर हो गई। उसके पंख फूल गए। शुकी के मन में भी प्रेम भरे गीत उमड़ने लगे, लेकिन वह उन गीतों को स्वर दे नहीं पाती। ऐसे में शुकी के गीत अगीत बनकर रह गए।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत रचित कविता 'गीत-अगीत' में प्राकृतिक सौंदर्य, जीव-जंतुओं का ममत्व और मानवीय राग का सुंदर चित्रण है। कविता में तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है। भाषा अत्यंत प्रवाहपूर्ण, ओजस्वी और सरल है। खड़ी बोली का प्रयोग है जिसमें सरसता और लयात्मकता है। काव्य में आए अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश और मानवीकरण अलंकार इसके सौंदर्य में वृद्धि करते हैं। भाषा में चित्रात्मक है, जगह-जगह शृंगार रस मधुरता है।

उत्तर 2. मनुष्य और प्रकृति का अत्यंत घनिष्ठ संबंध होता है। प्रकृति अपने भिन्न-भिन्न क्रिया-कलापों से मनुष्य को आंदोलित करती है। बहती नदी को देखकर लगता है कि वह अपने मन की व्यथा को गाकर किनारे स्थित पेड़-पौधों को सुना रही है। शुक पेड़ की घनी डाल पर सूर्य की किरणों के स्पर्श से उल्लासित हो गीत गाता है, जो शुकी को भावविभोर कर देता है। आल्हा गाता ग्वाल-बाल अपनी गीत में मद-मस्त है जिससे आकृष्ट हो नायिका रोमांचित हो उठती है। अंतत: प्रकृति में घटने वाले गीत-अगीत का गायन मनुष्य को अत्यंत प्रभावित करता है।

उत्तर 3. कविता में कवि द्वारा गीत और अगीत दोनों का वर्णन साथ-साथ किया गया है। पहले शोभायमान गुलाब के माध्यम से बताया कि वह सोचता है कि यदि विधाता उसे भी स्वर देते तो वह अपने सपनों का गीत सबको सुनाता। ठीक इसी तरह शुक का गीत सुनकर शुकी भावविभोर हो जाती है, लेकिन वह उसे अभिव्यक्त नहीं कर पाती। इस तरह उसका गीत अगीत बनकर रह जाता है। अंत में ग्वाल-बाल का आल्हा लोक गीत सुनने उसकी प्रेमिका आती है, वह उसे नीम के पेड़ की ओट में छिपकर सुनकर रह जाती है। प्रिय के लिए उसके भाव मन में ही रह जाते हैं। इस प्रकार कविता में कई स्थानों पर अगीत का वर्णन हुआ है।

उत्तर 4. प्रेमी संध्या के समय कोई गीत (आल्हा) गाता है तो उसकी प्रेमिका उस गीत से आकृष्ट हो बरबस ही उसे सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह छिपकर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं है। जब प्रेमी गाता है तो प्रेमिका का मन प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है। यह सब देखकर कवि

सोचता है—गाया गया गीत सुंदर है या न गा सकने वाला अगीत? यहाँ कवि ने प्रत्यक्ष भावना और अप्रत्यक्ष भावना के विषय में बताने का प्रयास किया है। यहाँ प्रेम के मुखर और मौन दोनों तरह की अभिव्यंजना को सुंदर बतलाया गया है, क्योंकि गीत की गूँज सुनने में जितनी अच्छी लगती है वहीं अगीत की अनुभूति भी हृदयग्राह्य है।

पाठ—10

अग्नि पथ

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने प्रस्तुत कविता 'अग्नि पथ' में लोगों को जागरूक करते हुए कहने का प्रयत्न किया कि स्वावलंबी बनो। जीवन जीने के लिए अपने पर भरोसा करो। किसी का आश्रय मत लो। किसी प्रकार की सहायता किसी से मत माँगो। कवि कहता है—यह जीवन अग्नि पथ है। इसके जीने में छाया की अपेक्षा मत करो।

उत्तर (ii) कवि ने छाँह माँगने से इसलिए मना किया है कि यह जीवन अग्नि पथ है। वह मनुष्य से कहता है कि इस पक्ष में किसी से भी छाया की अपेक्षा मत करो क्योंकि यह जीवन संघर्षशील है। वही व्यक्ति इस अग्नि पथ को पार करने में सफल हो जाता है जो स्वावलंबी बनकर जीवन से संघर्ष करता है। इसीलिए कवि छाँह माँगने के लिए मना करता है।

उत्तर (iii) कवि किसी से भी छाँह अर्थात आश्रय, या सहारा न लेने के लिए शपथ दिलाता है।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) कवि ने जीवन को अग्नि पथ बताते हुए कहा है कि यह कठिनाई से भरा हुआ संघर्षमय पथ है। जीवन के इस संघर्षशील पथ पर कर्मशील और आत्मबल से युक्त मनुष्य ही कठिनाइयों का सामना कर विजयी होने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

उत्तर (ii) मनुष्य को अपने लक्ष्य की ओर सतत आगे बढ़ने के लिए कवि प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते हुए कहता है कि अपने इस संघर्ष और कठिनाई भरे जीवन पथ पर सतत आगे बढ़ते जाना है, थकना नहीं है और न मार्ग में कहीं विराम लेना है और न ही कठिनाइयों से घबराकर तुम्हें वापस लौटना है। इसके लिए तुम्हें शपथ बद्ध होकर आगे बढ़ना है।

उत्तर (iii) शपथ का अर्थ है— दृढ़ प्रतिज्ञा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. आँसू, पसीना और रक्त से लथपथ होना मनुष्य की कर्मठता और संघर्षशीलता को व्यक्त करता है।

उत्तर 2. अग्नि पथ कविता में कवि मनुष्य को संबोधित कर रहे हैं।

उत्तर 3. 'अग्नि पथ' कविता के माध्यम से कवि मनुष्य को संदेश देता है कि इस कठिनाई भरे जीवन-पथ पर संघर्ष और कर्मशीलता के बल पर आगे बढ़ा जा सकता है।

उत्तर 4. कविता में 'घने वृक्ष' का आशय है—आश्रय, सहारा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मनुष्य को अपने इस संघर्षशील, कठिनाइयों से भरे जीवन पथ पर यह शपथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए कि वह कभी इस मार्ग पर चलते हुए थकेगा नहीं, कहीं विश्राम नहीं लेगा और न ही कठिनाइयों से घबराकर वापस मुड़ेगा। इस शपथ के बाद ही वह जीवन पथ पर लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेगा।

उत्तर 2. कवि मनुष्य को जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए किसी से सहायता या किसी का आश्रय लेने के लिए इसलिए मना करता है क्योंकि आश्रय, सहायता की उम्मीद मनुष्य के कर्मशील होने में बाधक होती है। जीवन के इस कठिन पथ पर स्वावलंबन और आत्मबल के सहारे ही आगे बढ़ा जा सकता है। किसी की सहायता के बल पर नहीं।

उत्तर 3. कवि ने जीवन पथ को अग्नि पथ इसलिए कहा है, क्योंकि जीवन का पथ कठिनाइयों से भरा हुआ है। इस पथ पर वही व्यक्ति आगे बढ़ने में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसमें कर्मशीलता, आत्मबल और स्वावलंबन की भावना भरी होगी। आश्रय और सहायता की आशा रखने वाला व्यक्ति इस पथ पर आगे बढ़ने में सक्षम होगा।

उत्तर 4. कवि ने संसार के इस कठिनाइयों से भरे जीवन पथ पर संघर्ष करते हुआ आगे बढ़ रहे मनुष्य को दर्शाया है जो आँसू, पसीने और रक्त से लथपथ हैं फिर भी वह आगे बढ़ता जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। यह कितना महान और अद्भुत दृश्य है। अश्रु उसकी पीड़ा, पसीना उसकी कर्मशीलता और रक्त उसके साहस का परिचायक है।

उत्तर 5. इस पंक्ति का आशय है—मनुष्य जीवन के संघर्षमय पथ पर अद्भुत साहस के साथ आगे बढ़ते हुए महान दृश्य उपस्थित कर रहा है। वह जीवन के अग्नि पथ पर पीड़ा या कष्ट को झेलते हुए कर्मशील होकर साहस के साथ आगे बढ़ रहा है।

उत्तर 6. कवि का अग्नि पथ से तात्पर्य है आग स्वरूप कठिनाइयों और संघर्ष से पूर्ण रास्ता। इस प्रकार कवि ने अग्नि पथ को संघर्षशील मनुष्य के जीवन के प्रतीक स्वरूप चित्रित किया है। इस प्रतीक के द्वारा कवि यह समझाना चाहता है कि जीवन के प्रत्येक पग पर संघर्ष करना पड़ता है। कर्मशील मनुष्य समस्त कठिनाइयों को झेलकर विजयी होता है।

उत्तर 7. प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्पर्श-भाग-1 के 'अग्नि पथ' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पाठ के रचनाकार डॉ. हरिवंशराय बच्चन जी हैं। वे जीवन के संघर्षमय पथ पर आगे बढ़ते हुए आदमी को प्रेरणा प्रदान करने के लिए कहते हैं—जीवन पथ पर आगे बढ़ते चलो। किसी से सहायता की अपेक्षा मत करो भले ही मार्ग में अवलंब हेतु वृक्ष खड़े हों, चाहे कितने भी सघन और बड़े हों पर उनकी छाया की अपेक्षा मत करो।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. प्रस्तुत कविता अग्नि पथ में डॉ. हरिवंशराय बच्चन जी ने संघर्षमय जीवन को अग्नि पथ कहा है और यह संदेश दिया है कि इस अग्नि पथ या कठिनाइयों से भरे पथ में सुख रूपी बाँह की चाह न कर अपनी मंज़िल पर बिना रुके, बिना थके और कठिनाइयों से बिना भयभीत हुए कर्मठता पूर्वक बढ़ते चलो। प्रस्तुत कविता में शब्दों की पुनरावृत्ति कैसे मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

उत्तर 2. प्रस्तुत कविता अग्नि पथ में कवि ने कठिनाइयों से भरे जीवन का वर्णन बड़े सशक्त शब्दों में किया है। उन्होंने जीवन को संघर्षमय बताया है और संघर्षमय पथ पर आगे बढ़ते मनुष्य को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि मार्ग में उपस्थित कठिनाइयों को संघर्षपूर्वक पार करने के लिए सुख की परवाह मत करो चाहे तुम्हारे मार्ग में सुख रूपी छाँव हो परंतु उसकी अपेक्षा मत करो, भले ही मार्ग में घने पत्तों वाले सघन वृक्ष खड़े हों, परंतु उनके एक पत्ते भर छाँव की आशा मत करो और बिना थके, रुके और डरे आगे बढ़ते चलो। इसी में तुम्हारा कल्याण है।

उत्तर 3. कवि ने कविता में 'कभी न थमने' और 'कभी न मुड़ने' की बात इसलिए कही है क्योंकि यह जीवन अग्नि पथ है, अत्यधिक कठिनाइयों से भरा हुआ एवं संघर्षपूर्ण है। इन कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष करना कठिन है। इसके लिए साहस, आत्मबल और स्वावलंबन की आवश्यकता पड़ती है। जीवन पथ पर संघर्ष करते हुए बढ़ते समय मन की इच्छाएँ बहुत बाधक होती हैं। कवि इन शब्दों द्वारा कर्मशील मनुष्य को प्रेरणा और साहस का उद्बोध करते हुए कहता है कि इन कठिनाइयों से डरकर बीच में कहीं भी रुकना नहीं, कहीं भी विश्राम नहीं लेना है और न ही डरकर वापस लौटना है।

उत्तर 4. कविता में शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति काव्य-सौंदर्य का सृजन करती है और जिन शब्दों की पुनरावृत्ति होती है, वे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इस कविता में भी उपर्युक्त शब्दों की पुनरावृत्ति द्वारा ऐसा ही काम लिया है। कवि यह बताना चाहता है कि संघर्ष करने वाले मनुष्य को सुख-सुविधाओं की न तो भिक्षा माँगनी चाहिए और न ही अपेक्षा करनी चाहिए, क्योंकि सुख-सुविधाएँ जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए बाधा स्वरूप होती हैं और मनुष्य को संघर्ष पथ से भटका देती हैं। इसके लिए कवि चित्त को दृढ़ करने के लिए बार-बार शपथ लेने की प्रेरणा देता है और रक्त से लथपथ शब्दों के द्वारा मनुष्य की संघर्षशीलता की ओर संकेत करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उपर्युक्त शब्दों के बार-बार प्रयोग से काव्य-सौंदर्य में वृद्धि हुई है।

उत्तर 5. **(क)** कविता की उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि जीवन के संघर्षशील पथ पर आगे बढ़ते समय होने वाले कष्ट से डरकर कभी रुकना नहीं चाहिए और न कठिनाइयों के दूर होने की आशा में ही रुकना चाहिए। उन कठिनाइयों से डरकर वापस मुड़ना अर्थात कठिनाइयों से भागना नहीं चाहिए।

(ख) उपर्युक्त काव्यांश का अर्थ है—मनुष्य जीवन के संघर्षमय पथ पर धीरतापूर्वक सारी कठिनाइयों के कष्टों को साहस पूर्वक कर्मठता के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रहा है। यह कितना महान दृश्य है कि वह बिना थके, बिना रुके और बिना डरे अनवरत आगे बढ़ रहा है।

पाठ–11 (1)

नए इलाके में

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) कवि का घर एक मंज़िला था जिसमें बिना रंग-रोगन का लोहे का फाटक लगा था। यह मकान मोड़ से दो मकान बाद था। कवि का यह मकान एक नए बसते इलाके में बना था जहाँ रोज़ नए-नए मकान बन रहे थे और क्षेत्र का स्वरूप बदल रहा था, जिससे जब कवि अपने घर पर आता अकसर रास्ता भूल जाता।

उत्तर (ii) पुराने निशान धोखा इसलिए दे जाते हैं कि वहाँ प्रतिदिन नए-नए मकान बन रहे हैं, इलाके का स्वरूप समय के साथ-साथ परिवर्तित हो रहा था। पुराने निशान के स्थान पर नवनिर्माण स्थान ले रहा था। कवि ने जो निशान अपने मन में बिठा रखे थे, अब उनका नामोनिशान नहीं रह गया है, और उसे अपने घर पर पहुँचने में भटकना पड़ता है।

उत्तर (iii) नवीन बसते इलाके में प्रतिदिन नवीन परिवर्तन (निर्माण) के कारण कवि को अपने घर का रास्ता ढूँढ़ने मे परेशानी होती है।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) कवि को अपनी स्मृति पर भरोसा इसलिए नहीं है क्योंकि यहाँ प्रतिदिन नवनिर्माण होने के कारण नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। वह जो देखकर अपने स्मृति पटल पर अंकित करके जाता है, पुनः लौटकर आने पर उस स्मृति का कोई अंश-अवशेष नहीं रहता, सब कुछ नया, बदला हुआ मिलता है। इसलिए कवि को अपनी स्मृति पर भरोसा नहीं है।

उत्तर (ii) 'पुरानी पड़ जाती है दुनिया' से कवि का आशय है कि यह संसार प्रतिक्षण परिवर्तनशील है। जो अभी इस समय नवीन प्रतीत हो रही है, एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे वसंत ऋतु का गया पतझड़ में लौटा है या बैसाख का गया व्यक्ति उसी स्थान पर सावन में लौटा हो और उसे जो परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है, वही परिवर्तन उस इलाके में हुआ है जहाँ कवि का घर है।

उत्तर (iii) क्योंकि वहाँ घोर परिवर्तन हुआ है। सब कुछ बदल गया है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि अपने घर के लिए जहाँ से मुड़ता था, वहाँ मोड़ के पहले एक खाली ज़मीन का टुकड़ा था।

उत्तर 2. कवि का मकान एक मंज़िला था जिसमें बिना रंग का लोहे का फाटक था।

उत्तर 3. कवि उस नए बसते हुए इलाके में अपने घर का रास्ता भूल जाता है।

उत्तर 4. कवि नए बसते इलाके में अपना मकान ढूँढ़ने के लिए अपने स्मृति पटल पर एक निशान अंकित कर लेता था।

उत्तर 5. 'नए इलाके' कविता के रचनाकार हैं—श्री अरुण कमल।

उत्तर 6. कवि अपने घर का रास्ता ढूँढ़ने के लिए ढहा हुआ घर और खाली ज़मीन का टुकड़ा ढूँढ़ता है।

उत्तर 7. बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला घर एक मंज़िला का था।

उत्तर 8. उस नए-नए बसते हुए इलाके में नए-नए मकान बन रहे थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. नए बसते इलाके में कवि रास्ता इसलिए भूल जाता है क्योंकि उस नए इलाके में प्रतिदिन नए-नए निर्माण हो जाने से नवीन परिवर्तन हो रहा है। कवि जाते समय इलाके का जो दृश्य वह अपने स्मृति पटल पर लेकर जाता है, पुनः लौटने पर कुछ भी वैसा नहीं मिलता जैसा उसने पहले देखा था। इसलिए वह अपने घर का रास्ता भूल जाता था।

उत्तर 2. कवि ने इस कविता के माध्यम से विकास के चलते होने वाले परिवर्तन की ओर संकेत किया है। वह विकास के नाम पर होने वाले नित नवीन परिवर्तन से परेशान है। यहाँ प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया हो रहा है जिससे पहले वाला दृश्य खो जाता है जिसे स्मृतियों के सहारे नहीं ढूँढ़ा जा सकता। देखते-देखते दुनिया पुरानी पड़ जाती है।

उत्तर 3. 'नए इलाके में' कविता के माध्यम से कवि ने संसार के क्षण-क्षण में होने वाले परिवर्तन की ओर इशारा किया है। इस परिवर्तनशील संसार में आदमी भी विकास की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए तेज़ी से भाग रहा है। उसे एक क्षण के लिए भी फुरसत नहीं है कि वह किसी के सुख-दुख का भागी हो सके।

उत्तर 4. 'नए इलाके में' कविता में 'पुराने निशानों के धोखा देने से' कवि का अभिप्राय यह है कि इस प्रतिक्षण परिवर्तनशील संसार में मनुष्य प्रगति के पथ पर इतनी तेज़ी से भाग रहा है कि उसे पुरानी चीज़ें, पुराने लोग मात्र स्मृतिशेष लगते हैं। विकास के युग में प्राचीन रीति, परंपरा सब बदल जाती हैं। उनका कहीं नामोनिशान नहीं रह जाता।

उत्तर 5. कविता में निम्नलिखित पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है—

(i) पीपल का पेड़

(ii) एक खंडहर हुआ ढहा घर

(iii) ज़मीन का खाली टुकड़ा

(iv) दो मकानों के बाद एकमंज़िला मकान जिसमें बिना रंगा हुआ रंगीन लोहे का फाटक लगा है।

उत्तर 6. कवि अपने घर जब-जब आता है, अपने घर का रास्ता भूल जाता है। इसका कारण है उस नए बसते इलाके में होने वाला तेज़ी से परिवर्तन। वहाँ प्रतिदिन नए-नए निर्माण कार्य हो रहे हैं, नए-नए मकान बन रहे हैं। लौटते समय अपनी स्मृति में जो निशान लेकर जाता है, पुनः आने पर उसमें भारी बदलाव पाता है और अपने मकान तक पहुँचने के लिए एक घर पीछे या दो घर आगे चला जाता है।

उत्तर 7. 'वसंत का गया पतझड़ को लौटा' और 'बैसाख का गया भादो को लौटा' परिवर्तन का संकेत है। इसका अभिप्राय है—वसंत और पतझड़ के बीच एक लंबा समय बीत चुका है। उसी तरह बैसाख का गया भादो के बीच भी लंबा समय बीत गया है। लंबे अंतराल के कारण बहुत परिवर्तन हो गया है। कवि के स्मृति में वसंत के जो चिह्न थे, उसके स्थान पर पतझड़ ने स्थान ले लिए हैं। इस प्रकार समय और परिस्थितियों में बहुत परिवर्तन आ गया है।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि कहता है कि इस परिवर्तनशील युग में क्षण-क्षण बदलाव आ रहा है। कल जो था आज उसके स्वरूप में भारी परिवर्तन हो गया है। इसलिए केवल स्मृतियों के सहारे जीवन नहीं जिया जा सकता। जीवन में समय के परिवर्तन के साथ परिस्थितियों में तीव्र गति से परिवर्तन होते रहने से स्मृतियाँ धोखा दे देती हैं। बसंत के बाद पतझड़ या बैसाख के बाद भादो आने पर हमने जो परिदृश्य बसंत या बैसाख में देखा था और उसे स्मृति में रख लिया था वह पतझड़ और भादो में एकदम बदल गया है। वसंत और बैसाख का कोई निशान शेष नहीं बचा है।

उत्तर 2. 'नए इलाके में' कविता का केंद्रीय भाव यह है—इस कविता के माध्यम से कवि एक ऐसी दुनिया में प्रवेश का आमंत्रण देता है, जो सतत परिवर्तनशील है और एक दिन में ही पुरानी पड़ जाती है। यह कविता इस बात का बोध कराती है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। इस क्षण-क्षण परिवर्तित होती हुई दुनिया में स्मृतियों के भरोसे ही नहीं जिया जा सकता।

उत्तर 3. इस कविता में कवि ने शहरों में होने वाले परिवर्तन की विडंबना की ओर संकेत किया है। शहरों में इतनी तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है कि जब हम उस स्थान से जहाँ से गए थे, दोबारा वापस आते हैं तो वहाँ इतना परिवर्तन हो गया होता है कि अपने अपेक्षित स्थान पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है। स्थिति यह हो जाती है कि पास के सभी घरों के दरवाज़े खटखटाने की ज़रूरत पड़ जाती है कि शायद कोई पहचाना व्यक्ति खिड़की से या ऊपर से देखकर पहचान ले और बुला ले। आज शहरों की यही विडंबना हो गई है।

उत्तर 4. इस कविता के माध्यम से कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि आज के आधुनिक मनुष्य के पास समय का बहुत अभाव है। इस तेज़ी से होने वाले परिवर्तन के युग में बदलते संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में लगा है। सबके पास समय का नितांत अभाव है। किसी को कुछ बताने या जवाब देने का अवकाश नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उलझा हुआ है। तीव्र परिवर्तन के कारण जीवन की गति तीव्र हो गई है। ऐसे में कवि आशा करता है कि समय के अभाव में शायद कोई परिचित व्यक्ति उसे देख पुकार लेगा।

उत्तर 5. **(क)** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि इस बदलाव के युग में अब मात्र याददाश्त पर ही भरोसा नहीं किया जा सकता। इसका कारण है- तीव्र परिवर्तन प्रतिदिन नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं। हम कल जो देखकर आए थे आज वहाँ बहुत बदलाव हो गया है। अब केवल स्मृति के भरोसे हम उस स्थान की पहचान नहीं कर सकते।

(ख) आज इस परिवर्तनशील युग की भागम-भाग ज़िंदगी में किसी को किसी के पहचानने की या उसे सही मार्ग बताने के लिए अवकाश नहीं हैं। तेज़ी से बदलते जीवन की भागदौड़ की ज़िंदगी से संवेदनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। समय का बोझ इतना है मानों अभी आकाश सिर पर गिर पड़ेगा। इस स्थिति में केवल इतनी ही आशा शेष है कि शायद कोई पहचान ले और बुला ले।

(2) खुशबू रचते हैं हाथ

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश – 1

उत्तर (i) खुशबू रचने वाले हाथ कई नालों के पार, कूड़े-कड़कट के ढेर के बाद कई गलियों के बीच बदबू से फटते जाते इस टोले के अंदर वे लोग रहते हैं जिनके हाथ खुशबू रचते हैं अर्थात अगरबत्तियाँ, धूप आदि सुगंधित पदार्थ रचते हैं।

उत्तर (ii) 'खुशबू रचते हैं हाथ' से कवि का आशय अगरबत्ती बनाने वाले गरीब तबके के लोगों से हैं। जो बदबू से फटते जाते टोले के अंदर खुशबू रचते हैं।

उत्तर (iii) श्रमिकों के नन्हें बच्चों के हाथ पीपल के नए पत्तों की तरह कोमल होते हैं।

काव्यांश – 2

उत्तर (i) 'कटे-पिटे हाथ' से तात्पर्य है, वे परिश्रमी हाथ जो अगरबत्तियाँ बनाते समय अत्यधिक परिश्रम के कारण कट-फट गए हैं। वे परिश्रमी लोग अपने इन्हीं घायल, कटे-फटे हाथों से घरों, महलों, देवालयों आदि को सुगंधित करने वाली धूप, अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं।

उत्तर (ii) 'पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ' का प्रयोग उन हाथों के लिए किया गया है जो पीपल के पत्ते की भाँति बहुत कोमल है अर्थात बालकों के हाथ हैं। यह मज़दूर वर्ग अपने पूरे परिवार-बाल-वृद्ध-युवा स्त्री-पुरुष सभी मिलकर संसार को खुशबूदार बनाने का प्रयत्न करने में लगे हैं।

उत्तर (iii) 'जूही की डाल से खुशबूदार हाथ' श्रमिक महिलाओं के हाथों के विषय में कहा गया है।

काव्यांश – 3

उत्तर (i) कवि अरुण कमल की रचना 'खुशबू रचते हैं हाथ' समाज और शासन के साथ परिस्थितियों, आर्थिक विषमताओं के प्रति एक करारा व्यंग्य है। रचनाकार कहते हैं कि कूड़ा-कड़कट के ढेर के पास जहाँ कई गंदे नाले बहते हैं उनके पास गंदी गलियों में रहने वाले बाल-वृद्ध-युवा देवालयों, पूजा-घरों, महलों, कोठों-अटारियों को सुगंधित पदार्थ बनाते हैं।

उत्तर (ii) 'रातरानी' एक पुष्प का नाम है जो रात में खिलता है और बहुत सुगंध बिखेरता है। उसी रातरानी की सुगंध वाली अगरबत्तियों का निर्माण इन गंदी, बदबूदार गलियों, मोहल्लों में रहने वाले लोग करते हैं।

उत्तर (iii) कवि यह बताना चाहता है कि परिश्रमी लोग विपरीत परिस्थितियों में भी अपने श्रम की सुगंध बिखेरते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. गंदे मुहल्ले के गंदे लोग परिश्रमी मज़दूर श्रमिक होते हैं।

उत्तर 2. प्रस्तुत कविता में कवि ने सामाजिक-आर्थिक विषमता को उजागर किया है।

उत्तर 3. कविता में उभरी नसों वाले, घिसे नाखून वाला, पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ, जूही की डाल से, गंदे कटे-फटे हाथों की चर्चा हुई है।

उत्तर 4. वहाँ का वातावरण बहुत गंदा और बदबूदार होता है।

उत्तर 5. 'पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ' मज़दूरों के बच्चों के कोमल हाथ के लिए कहा गया है।

उत्तर 6. अगरबत्तियाँ बनाते समय हाथ में ज़ख्म हो जाते हैं क्योंकि अगरबत्तियाँ अनेक वस्तुओं के योग से बनती है।

उत्तर 7. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के रचनाकार कवि अरुण कमल हैं।

उत्तर 8. ये खुशबूदार हाथ अपनी गरीबी और आर्थिक अभाव के कारण गंदे स्थानों पर रहने के लिए विवश हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. ये खुशबू रचने वाले हाथ कई प्रकार के हैं। इस प्रकार अगरबत्तियाँ बनाने वाले हाथ हैं–उभरी नसों वाले हाथ, घिसे नाखूनों वाले हाथ, पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ, जूही के डाल से खुशबूदार हाथ, गंदे कटे-फटे हाथ, ज़ख्म से फटे हुए हाथ अर्थात बाल, स्त्री, पुरुष, वृद्ध, युवा के कटे-फटे हाथों के सहयोग से खुशबू रची जाती है।

उत्तर 2. अगरबत्तियाँ बनाने वाले लोग अत्यंत निर्धन और असहाय लोग हैं। अपने आर्थिक अभाव के धनी और परिश्रमी लोग हुनरमंद होने पर भी इस प्रकार का गंदगीपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश हैं। ये आर्थिक रूप से कमज़ोर हैं परंतु आत्मा से धनी। इन्हें अपने परिश्रम का भरोसा है, छल-प्रपंच, चोरी-बेईमानी पर नहीं।

उत्तर 3. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता यह संदेश देती है कि जीवन में खुशबू भरने वालों का जीवन, अपने परिश्रम के द्वारा जीवन को खुशहाल बनाने वाले लोगों का जीवन कितना नाटकीय और कष्टपूर्ण है। कवि समाज और शासन दोनों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करना चाहता है जिससे उनका जीवन स्तर उठ सके।

उत्तर 4. कवि ने सामाजिक-आर्थिक विषमताओं पर व्यंग्य करते हुए कहा है-'खुशबू रचते हैं हाथ'। ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ये वे लोग हैं जो अपना जीवन दुर्गंधमय और गंदे वातावरण में बिताते हैं, इन मलिन स्थानों में रहते हैं, अपने हाथों से खुशबू रचते हैं, अगरबत्तियाँ बनाते हैं। महलों, कोठों-अटारियों, देवालयों-मंदिरों को सुगंधित करने के लिए।

उत्तर 5. कवि प्रस्तुत कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि ये खुशबू रचाने वाले हाथ गंदी, बदबूदार मलिन बस्तियों में रहते हैं, जो गंदे नालों और कूड़ों के ढेर के पास रहकर अपने कठोर श्रम से सर्वत्र खुशबू बिखेरने वाले पदार्थ बनाते हैं।

उत्तर 6. कवि अरुण कमल ने हाथों के लिए उभरी नसों वाला, घिसे नाखूनों वाले, पीपल के पत्ते-से नए-नए, जूही की डाल से खुशबूदार और गंदे कटे-फटे, ज़ख्म से फटे हुए आदि विशेषणों का प्रयोग बहुत सुंदर ढंग से किया है। इन हाथों में बालक-युवा-वृद्ध, स्त्रियों सबके मिले-जुले हाथ हैं जो अधिक परिश्रम के कारण कटे-फटे और ज़ख्मी हो गए हैं।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. खुशबू रचते हाथों के प्रति समाज की उदासीनता और उपेक्षा के दर्शन होते हैं। इन खुशबू भरे हाथों के कठोर श्रम का ही परिणाम समाज और देश की उन्नति है और इसी वर्ग को समाज द्वारा तिरस्कार का दंश झेलना पड़ता है, उन्हें उपेक्षा का अपमान सहन करना पड़ता है। यह ठीक उसी तरह है जैसे पूरे समाज में खुशबू बिखेरने वाले पदार्थों के निर्माता सड़ती गलियों वाली मलिन बस्तियों में जीवन व्यतीत करने के लिए विवश है। समाज अपना घर, ईश्वर, अपना देवालय सुगंधित तो करना चाहता है परंतु इन सुगंधित पदार्थों—अगरबत्तियों के निर्माता के जीवन से उन्हें कुछ भी लेना-देना नहीं है।

उत्तर 2. कवि ने प्रस्तुत कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' के माध्यम से समाज में व्याप्त विषमताओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है। यह किसकी और कैसी कारस्तानी है कि जो वर्ग समाज में सौंदर्य की सृष्टि कर रहा है और उसे खुशहाल बना रहा है, आज वही वर्ग अभावग्रस्त जीवन के लिए गंदी, बदबूदार गलियों में अपना जीवन बसर कर रहा है। लोगों के जीवन में सुगंध बिखेरने वाले हाथ, भयावह और दुर्दशापूर्ण स्थितियों में अपना जीवन जीने के लिए विवश है। क्या विडंबना है कि खुशबू रचने वाले हाथ दूर दराज के सबसे गंदे और बदबूदार इलाकों में जीवन बिता रहे हैं। स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान करने वाले ये लोग उपेक्षित हैं। आखिर कब तक?

उत्तर 3. ये खुशबू रचने वाले हाथ कूड़ा-करकट के ढेर के पास गंदी, बदबूदार मलिन बस्तियों में रहकर ही संसार को सुगंधित करने वाले पदार्थ का निर्माण करते हैं इसीलिए इन्हें 'गंदे मुहल्ले के गंदे लोग' की संज्ञा दी जाती है। यह उक्ति समाज की विकृत मनोदशा का द्योतक है। समाज यह भूल जाता है कि स्वच्छ, सुगंधमय वस्तु बनाने के लिए हाथों को, वस्त्रों को गंदा करना पड़ता है किंतु इन्हें गंदे मुहल्ले में पहुँचाने के लिए यह समाज ही ज़िम्मेदार है। यह समाज का दायित्व और कर्तव्य दोनों हैं कि इन खुशबू रचने वालों को उन गंदी, मलिन बस्तियों से बाहर निकाले।

उत्तर 4. जहाँ सुगंध बिखेरने वाली अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का वातावरण बहुत दुर्गंधपूर्ण है। ये अगरबत्तियाँ बनाने वाले लोग कई नालों के पार कूड़े-करकट के ढेरों के बाद बदबू से फटते जाती सँकरी गलियों में रहकर अपने अथक परिश्रम से महलों को सुगंधित करने वाली अगरबत्तियों को बनाते हैं। ये खुशबूदार अगरबत्तियों के रचनाकार श्रमिक ऐसे अस्वच्छ और दुर्गंधपूर्ण वातावरण में रहकर, अनेक विवशताओं और मजबूरियों को झेलते हुए जीवन को सुगंधित करने वाली अगरबत्तियों की रचना करते हैं।

उत्तर 5. इस कविता को लिखने का कवि का मूल उद्देश्य है— समाज को आईना दिखाना। जिससे वह समाज द्वारा की जाने वाली श्रमिकों के प्रति उपेक्षा और तिरस्कार की सच्चाई को जान सके, जो समाज को उन्नतिशील बनाने में अपना अभूतपूर्व योगदान करते हैं। सर्वत्र सुगंध बिखेरने का जो सामान तैयार करने में अपना खून-पसीना लगा देते हैं। कवि समाज में मानवीयता का भाव जागृत करना चाहता है जिससे उनकी मानवता इन श्रमिकों के प्रति जागृत हो सके और समाज उन्हें उनके संपूर्ण अधिकार, और सुविधा प्रदान करे।

उत्तर 6. **(क)** कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से समाज का ध्यान उन गरीब और मज़दूरों की ओर खींचने का प्रयास किया है जो अस्वच्छ वातावरण में रहने के लिए विवश हैं। इनके पीपल के पत्ते के सामान नए हाथ भी हैं अर्थात बच्चे भी हैं जो मजबूरी वश मज़दूरी करने को विवश हैं। इसी प्रकार जूही की डाल के समान खूबसूरत महिलाओं के भी हाथ हैं जिन्हें कठोर परिश्रम करना पड़ रहा है। यह समय और समाज की भयानक विडंबना है।

(ख) उपर्युक्त पंक्तियाँ उस सच्चाई का पर्दाफाश करती है जिसमें दुनिया भर में खुशबू फैलाने वाले लोग गंदगी और अस्वच्छ वातावरण में समाज से उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश हैं। इसके बावजूद समाज इन पर रहम नहीं करता और इनका शोषणकर इन्हें पीड़ित किया जाता है।

उत्तर 7. कवि ने इस कविता में गलियों, नालों, गंदे हाथों, नाखूनों, मुहल्लों, अगरबत्तियों व गंदे लोग इत्यादि बहुवचन शब्दों का प्रयोग किया है। इसका कारण है—कवि किसी एक मज़दूर या किसी एक मुहल्ले की बात नहीं करता। हमारे देश में ऐसे मोहल्ले हज़ारों की संख्या में हैं जहाँ लाखों मज़दूर उपेक्षित, पीड़ित और शोषित जीवन बिताने के लिए मजबूर है। यह समस्या किसी एक ही स्थान की नहीं हैं। इसी सच्चाई की अभिव्यक्ति के लिए इस कविता में बहुवचन का अधिक प्रयोग किया गया है।

संचयन : भाग–1

पाठ–1

गिल्लू

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. एक दिन एक गिलहरी का नवजात बच्चा अपने घोंसले से नीचे गिर पड़ा जिसपर दो कौवे अपना आहार बनाने के उद्देश्य से चोंच प्रहार करने लगे कि लेखिका की नज़र उस बच्चे पर पड़ी। वे उसे उठाकर घर के अंदर लाई, उसका समुचित उपचार किया और कौवों के चोंच से घायल वह गिलहरी का बच्चा दो दिनों बाद लगभग स्वस्थ हो गया। लेखिका ने उस बच्चे का नामकरण 'गिल्लू' किया।

उत्तर 2. गिल्लू भूख लगने पर चिक-चिक करके अपने भूखे होने की सूचना लेखिका को देता। लेखिका यह आवाज़ सुनते ही समझ जाती थी कि गिल्लू भूखा है। उसका प्रिय भोजन काजू था। बिस्कुट से भी उसकी भूख शांत हो जाती थी।

उत्तर 3. जब लेखिका घर से बाहर चली जाती तब गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली के रास्ते बाहर चला जाता। वह दिनभर अपनी बिरादरी यानी गिलहरियों का नेता बना घूमता, इस डाल से उस डाल पर उछल-कूद मचाता, परंतु ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

उत्तर 4. लेखिका को अस्पताल में रहना पड़ा। इसका कारण था– उनका मोटर दुर्घटना में आहत होना। वे मोटर दुर्घटना से चोटग्रस्त हो गई जिससे उन्हें कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब लेखिका के कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तीव्रता से अपने झूले या घोंसले पर जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते पर वह कभी खाया नहीं। इसका पता लेखिका को अस्पताल से लौटकर झूले की सफ़ाई करते समय चला, जब वहाँ काजू मिले।

उत्तर 5. लेखिका को प्राणियों से बहुत प्यार था। यही कारण था कि उनके सान्निध्य में कई प्राणी थे परंतु उनमें गिल्लू सबसे भिन्न था। छोटे-से प्राणी गिल्लू ने अपने हाव-भाव और क्रियाकलाप से यह सिद्ध कर दिया था कि उसमें भी संवेदनाएँ हैं, अपनापन है और मनुष्यों के भावों-विचारों को समझने का सामर्थ्य है। यह सब बातें लेखिका को गिल्लू के अपनत्व, कृतज्ञता जताने, लेखिका के अस्पताल में रहते समय दुखी होने के कारण काजू के न खाने से ज्ञात हुई। इस प्रकार सभी पशु-पक्षियों में गिल्लू सबसे भिन्न था।

उत्तर 6. गिल्लू लेखिका के अस्वस्थ होने पर बिस्तर पर लेटने के बाद तकिए के सहारे सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके सिर और बालों को इतनी सौम्यता से सहलाता रहता मानो कोई परिचारिका लेखिका के सिर और बालों को सहला रही हो। गिल्लू का इस प्रकार लेखिका का सिर सहलाना उसे बहुत अच्छा लगता था।

उत्तर 7. लेखिका को गिल्लू उनके कमरे के बरामदे के पास पड़े एक गमले के पास घायल दशा में मिला। जिसे दो कौवे अपने चोंच प्रहार से मारने का प्रयास कर रहे थे और यह छोटा-सा जीव गमले के पास की दीवार की संधि में छिपने का प्रयत्न कर रहा था। जब वह निकट गई तो उन्हें छोटा-सा गिलहरी का बच्चा मिला जो संभवतः अपने घोंसले से गिर गया था और कौवे उसे अपना आहार बनाने की सोच में आक्रमण कर रहे थे।

उत्तर 8. हमारे शास्त्रों के अनुसार हमारे पुरखे हंस, मयूर आदि के रूप में नहीं, पितृपक्ष में कौवे के रूप में ही आकर भोजन ग्रहण करते हैं। उन्हें और दूसरे प्राणी का स्वरूप नहीं पसंद है। यह हमारे शास्त्रों की मान्यता है। इसके पीछे कौन-सा दर्शन है, यह ज्ञात नहीं है।

उत्तर 9. लेखिका के काकपुराण में बाधा तब पड़ी जब उनकी दृष्टि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर पड़ी। लेखिका जब गमले के निकट गई तो देखा कि एक छोटा-सा गिलहरी का बच्चा था। जो शायद घोंसले से गिर पड़ा था और कौवे उसे अपना भोजन बनाने के फिराक में थे।

उत्तर 10. लेखिका ने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई बिछाकर उसे एक तार के सहारे खिड़की से लटका दिया। यही गिल्लू का घर था। गिल्लू का जब मन होता, अपने घर को स्वयं हिलाए झूले का काम ले लेता। अपने घर में से वह शीशे के मनकों जैसी चमकदार आँखों द्वारा खिड़की से बाहर का नज़ारा देखता।

उत्तर 11. सोनजुही की लता में एक पीली कली लगी देखकर लेखिका को उस छोटे-से जीव का स्मरण हो आया, जो इसी सोनजुही की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर लेखिका के निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर अब उस लघुप्राण की खोज है।

उत्तर 12. लेखिका कौवे के द्वारा उनके चोंच से घायल उस छोटे से गिलहरी के बच्चे को उठाकर घर के अंदर लाई। उन्होंने कौवे के चोंच से हुए घाव को रुई से पोंछा, उसपर पेंसिलिन का मरहम लगाया। इसके बाद लेखिका ने रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई। कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका।

उत्तर 13. सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि दी गई है क्योंकि गिल्लू को वह लता सबसे अधिक प्रिय था। इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पिताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, लेखिका को संतोष देता है।

उत्तर 14. लेखिका बताती हैं कि हमारे शास्त्रों में कौवे को समादरित और अनादरित दोनों प्रकार का प्राणी कहा गया है। समादरित, इस रूप में कहा गया है कि हमारे पितृगण गरुण, मयूर के रूप में या हंस के रूप में नहीं आ सकते, वे पितृ पक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही आते हैं। प्रियजनों को आने की सूचना भी काक ही कर्कश स्वर में देते हैं। दूसरी ओर, हम कौवे के काँव-काँव करने को अवमानना के रूप में ही प्रयुक्त करते हैं।

उत्तर 15. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू ने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। वह लेखिका के पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से नीचे उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. लेखिका ने कौवे की दो प्रकार की विशेषताएँ बताई हैं—समादरित और अनादरित। अति सम्मानित और अति अवमानित। उसकी समादरित विशेषताएँ हैं—हमारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के रूप में। उन्हें पितृ पक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। दूसरी विशेषता है—दूरस्थ प्रियजन के आगमन का मधुर संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। कौए को अनादरित प्राणी इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये काँव-काँव करते हैं और यह उनकी कटु आवाज़ किसी को पसंद नहीं आती।

उत्तर 2. उस छोटे से जीव गिल्लू को बचाने के लिए लेखिका को उसके उपचार के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा। लेखिका कौवों के चोंच से घायल गिलहरी के बच्चे को कमरे में ले आईं और रुई से उसकी चोट के रक्त को साफ़ किया और उस पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। इसके बाद उन्होंने रुई की बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें मुँह से लगाई परंतु उसका मुँह न खुला। लेखिका निराश नहीं हुई। अपने प्रयास में लगी रही। फिर कई घंटे के उपचार के बाद उसके मुँह में एक बूँद पानी डालने में सफल हुई।

उत्तर 3. गिल्लू की निम्न वर्णित चेष्टाएँ गिल्लू के अंत समय का संकेत करने लगी थीं। गरमी के दिन थे। लेखिका जब दोपहर में काम करती रहती, गिल्लू बाहर न जाकर अपने झूले में रहता था लेखिका के निकट रखी सुराही पर लेट जाता। इस तरह वह लेखिका के समीप भी रहता और गरमी से भी बच जाता। अपने जीवन के अंतिम दिन उसने दिनभर कुछ नहीं खाया और न ही बाहर गया। रात में मृत्यु की यातना में भी गिल्लू अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आया और अपने ठंडे पंजों से लेखिका की अंगुली पकड़कर चिपक गया जिसे बचपन में उसने मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

उत्तर 4. लेखिका ने गिल्लू में प्रथम वसंत के आगमन को इस प्रकार पहचाना कि लेखिका को नीम-चमेली की गंध की अनुभूति अपने कमरे में धीरे-धीरे होने लगीं। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या गिल्लू से बतियाने लगीं, न जाने क्या कहने लगी। लेखिका ने गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखा तो उसे लगा कि अब गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है और उन्होंने जाली के एक कोने से कीलें निकालकर एक कोना खोल दिया।

उत्तर 5. प्रश्न में दी गई उपर्युक्त पंक्ति का आशय यह है कि गिल्लू ने प्रातःकाल की पहली किरण के स्पर्श के साथ ही किसी नए जीवन को धारण करने के लिए, नया जन्म लेने के लिए इस जन्म से विदा ली अर्थात उसके प्राण पखेरु उड़ गए। यद्यपि लेखिका ने गिल्लू की प्राण रक्षा के लिए बहुत प्रयास किए। उसके पंजे की शीतलता की अनुभूति होने पर लेखिका ने हीटर चलाकर गरमी प्रदान करने का प्रयत्न किया, परंतु मृत्यु का कोई उपचार नहीं है। अंततः गिल्लू ने प्रातःकाल होते ही दूसरे लोक को प्रस्थान किया।

उत्तर 6. गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता इसलिए समझी गई जब लेखिका ने देखा कि उसकी बिरादरी की गिलहरियाँ जाली के पास आकर चिक-चिक करती हुई गिल्लू से न जाने क्या बातें करने लगी थीं। गिल्लू भी जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकने लगा था। यह देख लेखिका को अनुभूति हुई कि गिल्लू के जीवन में भी वसंत का आगमन हो गया है। उसने कील निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से बाहर जाकर गिल्लू ने उन्मुक्त साँस ली।

पाठ–2

स्मृति

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में इसलिए ढेला फेंकती थी कि सूखे कुएँ में एक भयंकर साँप था जो ढेला फेंकने पर बहुत तेज़ी से फुफकारता था और बच्चे उसकी फुसकार सुनकर बहुत प्रसन्न होते थे। गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से गाँव लौटते समय बच्चों का प्रतिदिन का यह क्रम हो गया था।

उत्तर 2. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने कई युक्तियाँ अपनाईं। उसने पहले साँप पर मिट्टी गिराई। साँप के पास से चिट्ठियाँ हटाने के लिए डंडे का प्रयोग किया। मिट्टी फेंककर साँप को उसके आसन से हटाया, युक्तिपूर्वक साँप का हमला लाठी पर करवाया आदि।

उत्तर 3. लेखक जब बड़े भाई द्वारा दी गई चिट्ठियाँ डाकखाने ले जा रहा था, तब वह सूखा कुआँ रास्ते में मिला। लेखक प्रतिदिन के क्रम के अनुसार कुएँ में झाँककर देखने और ढेला फेंकने की अपनी जिज्ञासा न रोक सका और कुएँ के पास जा पहुँचा क्योंकि प्रतिदिन की भाँति आज भी साँप को फुसकार करवाना था। उसने कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और टोपी उतारने के साथ ढेला कुएँ में गिरा दिया, परंतु उसी समय टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में जा गिरी।

उत्तर 4. साँप को चक्षु:श्रवा कहा जाता है अर्थात आँखों से सुनने वाला। इस समय लेखक की स्थिति भी चक्षु:श्रवा जैसी ही थी। वह साँप के फन पर ही आँखें गड़ाए हुआ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो शरीर की सारी इंद्रियाँ सहानुभूति से अपनी संपूर्ण शक्ति आँखों को ही प्रदान कर दी हो। उसकी दृष्टि साँप के फन पर ही लगी थी कि वह कब किस तरफ़ आक्रमण करता है।

उत्तर 5. चिट्ठियाँ कुएँ में गिरने के बाद लेखक को बिजली–सी लगी। उस समय लेखक की स्थिति ऐसी हुई जैसे घास चरते हुए हिरन को अकस्मात् गोली लगने से उसके प्राण निकल जाते हैं और वह तड़पता रह जाता है, उसी तरह टोपी में रखी चिट्ठियाँ क्या निकल गईं, लेखक की जान ही निकल गई।

उत्तर 6. घर से विद्यालय जाते समय लेखक अपनी टोली के साथ उस पुराने कच्चे कुएँ के पास रुकता और प्रतिदिन कुएँ में ढेले डालते। लेखक यह कार्य करने के लिए अपनी टोली से पहले ही पहुँच जाता और सिर पर पहनी टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था। यह सभी लड़कों की प्रतिदिन की आदत हो गई थी। उस समय साँप से फुसकार करवा लेना बच्चों को बहुत बड़ी सफलता की अनुभूति कराती थी।

उत्तर 7. कुएँ में घुसते समय लेखक को तनिक भी भय महसूस नहीं हुआ क्योंकि वह अब तक बहुत से साँपों को मार चुका था। यद्यपि कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ वापस लेने का निर्णय बहुत भयानक था फिर भी उसे कुएँ में पड़े साँप से तनिक भी भय नहीं था क्योंकि उसे अपने डंडे पर पूरा विश्वास था। वह सोच रहा था, कुएँ में उतरते ही पहले उसे मार देगा फिर चिट्ठियाँ उठा लेगा।

उत्तर 8. लेखक ने कुएँ वाली घटना सन् 1915 में अपनी माँ को सुनाई जब वह मैट्रीक्युलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण कर लिया। माँ ने यह रोमांचकारी घटना सुनकर द्रवित हो गई और सजल नेत्रों से उसे अपनी गोद में ऐसे बिठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को पंख के नीचे छुपा लेती है।

उत्तर 9. लेखक पर बड़े भाई से पिटने का डर और ज़िम्मेदारी की दुधारी तलवार लटक रही थी। उसे भय था कि यदि वह घर लौटकर पत्र की सच्चाई बताता है तो उसकी रुई की भाँति धुनाई होगी। इस प्रकार माँ के भय से शरीर ही नहीं आत्मा तक काँप जाती और वह झूठ बोलने पर चिट्ठियों के न पहुँचने की ज़िम्मेदारी के बोझ से दबा हुआ था।

उत्तर 10. लेखक कुएँ के धरातल से चार–पाँच गज की दूरी पर था उसने ध्यान से नीचे देखा तो उसकी अक्ल चकरा गई। साँप फन फैलाए कुएँ के धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। साँप की पूँछ और उससे सटा भाग ज़मीन पर था और आधा अग्रभाग ऊपर उठा हुआ लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था।

उत्तर 11. भाई के बुलाने पर लेखक के मन में भाई साहब द्वारा मारने का डर था इसलिए वह घर जा तो रहा था, परंतु बहुत डरा और सहमा हुआ था। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसने कौन–सी गलती की है। डरते–डरते वह घर में घुसा। उसे भय था कि बेर खाने के अपराध में ही उसकी भाई साहब के सामने पेशी है।

उत्तर 12. लेखक द्वारा कुएँ में ढेला फेंकते समय भाई द्वारा डाकखाने में डालने के लिए दिए गए पत्रों के कुएँ में गिर जाने के बाद लेखक इतना भयभीत हो गया मानों उसकी टोपी से चिट्ठियाँ क्या निकल गई, उसका प्राण ही निकल गया है। लेखक को ढेला फेंकने के बाद यह भी एहसास नहीं हुआ कि ढेला गिरने के बाद साँप ने फुसकार छोड़ी या नहीं।

उत्तर 13. लेखक द्वारा कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय लेने के दो कारण थे। पहला कारण था–भाई साहब को चिट्ठियों के बारे में सत्य बोलने पर रुई की भाँति धुनाई होना। दूसरा कारण था–झूठ बोल देने पर चिट्ठियों के गंतव्य पर न पहुँचने की ज़िम्मेदारी। इन दोनों के बीच अंततः उसे चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लेना पड़ा।

उत्तर 14. लेखक का छोटा भाई चिट्ठियाँ कुएँ में गिरने के कारण ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा क्योंकि चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने के कारण उन्हें बड़े भाई से बुरी तरह पिटने का डर था। इसलिए किसी भी प्रकार मार खाने से न बचने की निराशा, पिटने का भय और उद्वेग से ज़ोर-ज़ोर से रोने का उफ़ान आता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. लेखक ने चिट्ठियों को टोपी में रख लिया क्योंकि लेखक के कुरते में जेबें न थीं। दोनों भाई उछलते-कूदते एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गए जिसमें अति भयंकर साँप पड़ा हुआ था। कुएँ में कुछ भी गिरने पर वह बड़ी तेज़ी से फुफकारता था। लेखक और उसके साथी प्रतिदिन साँप की फुसकार सुनने के लिए उसमें ढेले फेंकते थे। लेखक ढेले फेंकने का लोभ आज भी संवरण न कर सका। लेखक ने कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और कुएँ में फेंका, परंतु उसी समय टोपी हाथ में लेते समय उसमें रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर पड़ी।

उत्तर 2. लेखक ने अपने जीवन की घटी घटना का जिक्र किया है, उस समय रायफल-बंदूक आदि का प्रचलन नहीं था। डंडा ही रायफल के स्थान पर प्रमुख आयुध था। इन परिस्थितियों में लेखक ने लाठी के बल पर जो साँप का शिकार किया, वह किसी रायफल के द्वारा शिकार से कम नहीं हैं। प्रश्न में दी गई उक्ति लेखक द्वारा डंडे के बल पर कुएँ में पड़े भयंकर साँप पर विजय प्राप्त करने के संदर्भ में कही गई है।

उत्तर 3. लेखक ने साँप को मारने का निर्णय इसलिए लिया कि लेखक द्वारा डाकखाने में छोड़ने के लिए ले जाई जाने वाली चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई जिसमें एक भयंकर साँप था। चिट्ठी डाकखाने में डाला जाना आवश्यक था अन्यथा बड़े भाई से पिटने का डर था। लेखक के पास कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए साँप को मारने के सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं था। इसीलिए उन्होंने साँप को मारने का निर्णय लिया।

उत्तर 4. कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए लेखक ने बहुत साहसिक कदम उठाए। लेखक ने अपने छोटे भाई की धोती, कानों में बँधी हुई धोती को एक में बाँधकर उसके सहारे कुएँ में उतरने का निर्णय लिया। जब वे कुएँ के धरातल से चार-पाँच गज ऊपर था तब उसने साँप को चिट्ठियों के पास फन उठाए बैठा देखा। धरातल पर इतनी जगह नहीं थी जिससे डंडे से साँप को मारा जा सके। साँप कुएँ के बीच में ही फन उठाए खड़ा था। लेखक ने साँप का ध्यान डंडे के माध्यम से व मिट्टी फेंककर साँप को चिट्ठियों से दूर किया और उन्हें उठाने में सफल हुआ।

उत्तर 5. लेखक समझ गया था कि डंडे से साँप को मारा नहीं जा सकता तब उसने सोचा कि चिट्ठियों को डंडे के द्वारा साँप से दूर सरकाया जाए। लेखक ने डंडे को ज्यों ही साँप की दायीं ओर पड़ी चिट्ठी की ओर बढ़ाया साँप का फन पीछे की ओर हुआ। धीरे-धीरे लेखक ने डंडे को चिट्ठी की ओर बढ़ाया। ज्यों ही डंडा चिट्ठी के पास पहुँचा कि साँप ने डंडे पर बड़ी तेज़ी से फन से प्रहार किया लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। लेखक ने देखा डंडे पर पीव जैसा तरल कई स्थान पर लगा था। साँप ने डंडे पर अपना विष-रूपी प्रमाण पत्र अंकित कर दिया। लेखक उसकी इस योग्यता से पहले से ही परिचित था।

उत्तर 6. इस पाठ के आधार पर अनेक बाल-सुलभ शरारतों के विषय में ज्ञात होता है जो केवल शरारती बालक ही करते हैं। ऐसी शरारतें बड़े लोग नहीं करते। वे शरारतें इस प्रकार हैं—कुएँ में स्थित साँप को परेशान करने और उसकी फुसकर सुनने के लिए प्रतिदिन सुबह-शाम कुएँ में ढेला फेंकना, प्राणघातक जीवों से ज़बरदस्ती छेड़छाड़ करना, अनावश्यक खतरे उठाना, किसी को परेशान करने के लिए नई-नई युक्तियाँ ढूँढ़ना और उन्हें क्रियान्वित करना आदि।

उत्तर 7. लेखक के हाथ से चिट्ठियों के कुएँ में गिर जाने के बाद यह जानते हुए कि कुएँ में एक भयंकर साँप हैं, कई धोतियों को जोड़कर कुएँ में उतरने का निर्णय बहुत जोखिम भरा था। कुएँ के धरातल पर इतनी जगह नहीं थी कि वह उसे डंडे से मार सकता फिर भी कुएँ में उतरकर युक्तिपूर्वक चिट्ठियों को निकाल लेना बहुत साहसिक कदम था। साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने साँप पर मिट्टी गिराई, चिट्ठियाँ खिसकाने के लिए डंडे का प्रयोग किया, साँप को उसके आसन से हटाया, उसके हमले लाठी पर करवाया आदि बहुत साहसिक कदम था।

उत्तर 8. कभी-कभी मनुष्य भविष्य के बारे में अनुमान पर आधारित भविष्य की योजनाएँ बनाता है, परंतु वे इतनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं कि मनुष्य की आशाओं पर पानी फिर जाता है। जब वह उनपर अमल करने लग जाता है तो ज्ञात होता है कि उनका अनुमान कितना गलत था। उसकी सोच के अनुसार उसका भविष्य वैसा नहीं हैं। उसकी सारी योजनाएँ व्यर्थ हो जाती हैं।

उत्तर 9. पाठ के संदर्भ में उपर्युक्त पंक्ति का आशय है कि कर्म करना तो मनुष्य के अधीन है परंतु उसका फल प्राप्त करना मनुष्य के अधीन नहीं है। वह अपने कार्य में सफल भी और असफल भी हो सकता है या कर्म का फल अनुकूल भी हो सकता है और प्रतिकूल भी। सफलता-असफलता सब ईश्वर पर निर्भर है। लेखक कुएँ में उतरने पर साँप के दंश से मर भी सकता था परंतु ऐसा नहीं हुआ।

उत्तर 10. यह लेखक के विषय में कहा गया है जब वह कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लेकर ऊपर आने का प्रयत्न करता है। उसके (बालक) हाथ ज्यों 15-20 फुट तक ही केवल हाथों के बल ऊपर जा सकते थे, 36 फुट ऊपर चढ़ना बहुत दुष्कर था। परंतु जीवन-मृत्यु के बीच संघर्ष में मनुष्य में इतनी शक्ति आ जाती है। मनुष्य कुछ भी करके मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है। यदि ऊपर चढ़ते समय लेखक का हाथ छूट जाता तो उसकी मौत सुनिश्चित थी।

पाठ–3

कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. लेखक 'ऑन द रोड' टीवी सीरियल की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा राज्य गया था। जब वह उनाकोटी में शूटिंग कर रहा था तभी अचानक बादल घिर आए। जब तक कि लेखक अपना सारा सामान समेटता तब तक बादल ज़ोर-ज़ोर से गरजने लगे और तांडव शुरू हो गया। तीन साल बाद ठीक यही तांडव और गर्जना उसने दिल्ली में देखा-सुना तो उसे उनाकोटी की याद आ गई। इस प्रकार ध्वनि ने लेखक को दूसरे समय-संदर्भ में पहुँचा दिया।

उत्तर 2. लेखक सूर्योदय के समय उठता है और खुद ही चाय बनाता है। उसके बाद वह चाय और हाथ में अखबार लेकर अलसाई सुबह का आनंद लेता है जबकि कुछ लोग चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक सुबह की सैर के लिए तैयार होकर लोदी गार्डन पहुँच जाते हैं और मेम साहबों के साथ लंबी सैर के लिए निकल जाते हैं।

उत्तर 3. लेखक जब गहरी नींद में था तब अचानक उसने तोप दगने और बम फटने जैसी कानफोड़ देने वाली आवाज़ सुनी। हालाँकि यह स्वर्ग में चलने वाला देवताओं का एक खेल था, जिसकी झलक बिजलियों की चमक और बादलों की गरज में सुनने को मिली और यह लेखक के नींद में बाधा बनी।

उत्तर 4. त्रिपुरा का एक भाग बांग्लादेश से घिरा हुआ है और शेष का दुर्गम जुड़ाव भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा से लगे मिजोरम और असम के साथ है। यहाँ पर बांग्लादेश के लोगों की जबरदस्त आवाजाही है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का प्रवास यहाँ होता रहता है। इस तरह कि अनियंत्रित भारी आवक ने जनसंख्या संतुलन को स्थानीय आदिवासियों के खिलाफ़ ला खड़ा किया। त्रिपुरा राज्य में आदिवासियों के असंतोष का मुख्य कारण यही है।

उत्तर 5. स्थानीय आदिवासियों का कहना है कि उनाकोटी की शिव मूर्तियों का निर्माणकर्ता कल्लू कुम्हार है। वह भगवान शिव और माता पार्वती का भक्त था। वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। लेकिन भगवान शिव ने शर्त रखी कि वह एक रात में एक करोड़ शिव मूर्तियों का निर्माण करे। कल्लू इस काम में जुट गया लेकिन सुबह होने तक एक मूर्ति कम निकली। इस वजह से शिव ने उसे वहीं छोड़ दिया। इसी मान्यता के कारण कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया।

उत्तर 6. लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा दिसंबर 1999 में की। वह 'आन दि रोड' शीर्षक से बनने वाले टीवी धारावाहिक की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया। इस यात्रा का उद्देश्य था त्रिपुरा की पूरी यात्रा कराने वाले राजमार्ग 44 से यात्रा करना तथा त्रिपुरा की विकास संबंधी गतिविधियों की जानकारी देना।

उत्तर 7. जिलाधिकारी द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के साथ लेखक अपनी टीम सहित नौ बजे तक उनाकोटी पहुँच गया, लेकिन यह स्थान खास ऊँचे पहाड़ों से घिरा है, इससे यहाँ सूर्य की रोशनी दस बजे तक ही पहुँच पाती है। रोशनी के अभाव में शूटिंग करना संभव न था, इसलिए लेखक को शूटिंग के लिए इंतज़ार करना पड़ा।

उत्तर 8. त्रिपुरा स्थित उनाकोटी दस हज़ार वर्ग किलोमीटर से कुछ ज़्यादा इलाके में फैला हुआ एक धार्मिक स्थल है। यह भारत का सबसे बड़ा तो नहीं, पर सबसे बड़े शैव स्थलों में एक है। संसार के इस हिस्से में स्थानीय आदिवासी धर्म फलते-फूलते रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई, वे कोकबारोक बोली में गाते हैं और यहाँ के प्रसिद्ध लोकगायक हैं। लेखक ने उनसे एक गीत सुनाने का अनुरोध किया। लेखक के अनुरोध को स्वीकारते हुए उन्होंने धरती पर बहती नदियों, ताजगी और शांति का गीत सुनाया। जिससे वे अत्यंत प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त उन्होंने मंजु ऋषिदास से दो गीत सुने, और उनके दो गीतों की शूटिंग भी की।

उत्तर 2. लेखक के. विक्रम को एक धारावाहिक की शूटिंग के लिए त्रिपुरा जाना पड़ा। यहाँ बाहरी लोगों की अनियंत्रित आवक के कारण स्थानीय लोगों में गहरा असंतोष है। इसकी वजह से यह क्षेत्र हिंसा की चपेट में आ जाता है। इस हिंसाग्रस्त भाग में लगभग 83 कि.मी. की लंबी यात्रा में लेखक को सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में काफ़िले के रूप में चलना पड़ा। मौत के भय से लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई थी।

इससे पर्यटन उद्यम भारी तौर पर चरमरा जाता है। साथ ही अन्य उद्योग धंधों का विकास भी नहीं हो पाता, जिसका सीधा दुष्प्रभाव राज्य की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। इन परिस्थितियों को रोकने के लिए या काबू पाने के लिए सरकार को असंतुष्ट लोगों से मिलकर बातचीत करनी चाहिए, उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए तथा उनके निवारण हेतु कारगर प्रयास किया जाना चाहिए।

उत्तर 3. त्रिपुरा राज्य में स्थित उनाकोटी नामक जगह पर गंगावतरण की पूरी पौराणिक कथा को पत्थरों पर उकेरा गया है। यहाँ एक विशाल चट्टान पर भागीरथ को तपस्या करते हुए दिखाया गया है तो दूसरी चट्टान पर भगवान शिव के चेहरे को बनाया गया है, जहाँ उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। इसे साल भर बहने वाला जल प्रपात कहा जाता है जिसे गंगा के समान ही पवित्र माना जाता है।

ऐसे स्थलों की यात्रा करने के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- वहाँ आस-पास किसी भी तरह की गंदगी न फैलाएँ।
- अपनी आवश्यक वस्तुएँ स्वयं ले जाएँ और बिना छोड़े लेकर वापस आएँ।
- पेड़ों, चट्टानों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं पर अपना नाम लिखकर या कोई प्रतीक चिह्न बनाकर उसकी सुंदरता को नष्ट न करें।
- ऐसे स्थानों की पवित्रता का विशेष रूप से ध्यान रखें।

उत्तर 4. उनाकोटी का अर्थ है–एक कोटी अर्थात एक करोड़ से एक कम। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ भगवान शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। भगवान शिव की इतनी सारी मूर्तियों का एक ही स्थान पर होने के कारण यह स्थान प्रसिद्ध है।

इस जगह की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

- एक विशाल चट्टान पर भागीरथ को तपस्या करते दिखाया है तो दूसरी चट्टान पर शिव के चेहरे को बनाया गया है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं।
- यहाँ सालभर बहने वाला जल प्रपात है जिसका जल गंगा जितना ही पवित्र है।
- गंगावतरण की संपूर्ण कथा को पत्थरों पर उकेरा गया है।

उत्तर 5. त्रिपुरा भारत के सबसे छोटे राज्यों में से है। चौतींस प्रतिशत से ज़्यादा की इसकी जनसंख्या वृद्धि दर भी खासी ऊँची है। यहाँ लगातार बाहरी लोगों के आने से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं लेकिन यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण भी बना है। त्रिपुरा के लोकगीत पारंपरिक कोकबारोक बोली में गाए जाते हैं, जोकि त्रिपुरा की कबीलाई बोलियों में से एक है। इन लोकगीतों को गाने का समय झूम खेती, कोई उत्सव या अनुष्ठान होता है। राज्य के आदिवासी और गैर-आदिवासी लोगों की लोक संस्कृति त्रिपुरा की सांस्कृतिक परंपरा की रीढ़ है। अतः कह सकते हैं कि जनजातीय रीति-रिवाज, लोककथाएँ व लोकगीत यहाँ की संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

पाठ–4

मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

उत्तर 1. लेखक ने अर्धमृत्यु की हालत में घर के शयनकक्ष में रहने की जगह उस कमरे में रहने की ज़िद की जहाँ उसकी हज़ारों किताबें रखी थीं। डॉक्टर ने उसे चलना, बोलना, पढ़ना इत्यादि गतिविधि के लिए मना किया था, इसलिए वह अपने इस छोटे-से निजी पुस्तकालय को देखते रहना चाहते थे।

उत्तर 2. लेखक को 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय समझ में नहीं आते थे। लेकिन फिर भी उसे पढ़ने में उन्हें काफ़ी मज़ा आता था।

उत्तर 3. जब लेखक बीमार थे तब उन्होंने अपने निजी पुस्तकालय में रहने के लिए ज़िद किया जिसके बाद उन्हें उस कमरे में लिटा दिया गया। उस कमरे में हज़ारों पुस्तकें रखीं हुई थीं। इस कमरे में लेटे-लेटे वह बाई ओर की खिड़की के सामने झुलते सुपारी के झालरदार पत्ते देखते थे। इस दृश्य से नज़र हटते ही वह अपने कमरे में ठसाठस भरी पुस्तकों को वापिस देखने लगते।

उत्तर 4. लेखक को पुरस्कार स्वरूप जो दो पुस्तकें मिली थीं, उनमें से एक का कथ्य था दो छोटे बच्चों का घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकना और इसी बहाने पक्षियों की बोली, जातियों और आदतों को जानना तथा दूसरी पुस्तक का कथ्य था-पानी के जहाज़ों से जुड़ी जानकारी एवं नाविकों की जानकारी व शार्क-ह्वेल के बारे में ज्ञान कराना।

उत्तर 5. लेखक को अपनी पढ़ाई के लिए एक संस्था से कुछ पैसे मिल जाया करते थे। वह इन पैसों से आधे दाम में सेकंड हैंड की पुस्तकें खरीद लिया करता था। इसके अलावा वह सहपाठियों की पुस्तकें लेकर पढ़ता और नोट्स बना लेता था। इस तरह वह अपनी पढ़ाई की व्यवस्था कर लिया करता था। विद्यार्थी जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य कड़ी मेहनत, अध्ययन करना और ज्ञान प्राप्त करना है क्योंकि वह जीवन का ऐसा समय होता है जो मानव जीवन के बीज बोता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. लेखक को रोचक कहानियों को पढ़ना बेहद पसंद था तब उनके पिता ने उन्हें अनार का शरबत पिलाते हुए कहा कि वायदा करो कि पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी इतने ध्यान से पढ़ोगे और अपनी माँ की चिंता को दूर करोगे। पिता से वचन के बाद लेखक ने जी-तोड़ परिश्रम किया इससे तीसरी और चौथी कक्षा में अच्छे अंक आए और पाँचवीं कक्षा में वह अव्वल दर्जे से पास हुआ। यह देख उसकी माँ को बहुत खुशी हुई। इस तरह लेखक ने अपने पिता से किया हुआ वायदा निभाया। इससे हमें सीख मिलती है कि हमें हमेशा मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए, अपने माता-पिता का हमेशा कहना मानना चाहिए और दूसरों से किए गए वायदों को पूरी निष्ठा के साथ पूरा करना चाहिए।

उत्तर 2. लेखक की माँ को चिंता थी कि यदि उनका पुत्र कक्षा की किताबें नहीं पढ़ेगा तो कैसे उत्तीर्ण होगा, क्योंकि उसे अन्य किताबों में रुचि थी, परंतु कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में नहीं। लेखक को जब तीसरे दर्जे में भरती कराया गया तो उसने मन लगाकर पढ़ना प्रारंभ किया। तीसरी और चौथी कक्षा में उसे अच्छे अंक प्राप्त हुए और पाँचवी में प्रथम आया। इस तरह उसकी माँ की चिंता दूर हो गई।

उत्तर 3. पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी और सच्ची मित्र होती हैं। यह ज्ञान का भंडार होता है। पुस्तकें ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाने का साधन हैं। ये हमारे सुख-दुख की साथी बनती है। पाठ में लेखक भी अपने आखिरी समय में उनके साथ और उनके बीच रहने के लिए ज़िद करता है। इस प्रकार आज के विद्यार्थियों को पाठ से निम्नलिखित प्रेरणाएँ लेनी चाहिए–

- पुस्तकों को अपना सच्चा मित्र मानना चाहिए।
- पुस्तकों के प्रति प्रेम एवं लगाव रखना चाहिए।
- पुस्तकों को कभी भी किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।
- पुस्तकों को फाड़कर या जलाकर नष्ट नहीं करना चाहिए।
- पुस्तकों को पढ़ने की आदत एक अच्छी आदत है जिसे सभी विद्याथियों को अपने अंदर डालनी चाहिए।
- किसी कीमती वस्तुओं की बजाय उपहार में पुस्तकों का लेन-देन व्यवहार में लाना चाहिए।

उत्तर 4. 'स्वामी दयानंद की एक जीवनी' पुस्तक लेखक की प्रिय पुस्तक थी। यह पुस्तक बहुत ही मनोरंजक शैली में लिखी हुई थी, अनेक चित्रों से सज्जी हुई। स्वामी दयानंद उस समय के दिखावों और ढोंगों के विरुद्ध ऐसा अद्भुत साहस दिखाने वाले अनुपम व्यक्तित्व थे जिन्हें दबाया न जा सकता था। कितनी ही अद्भुत घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो लेखक को बहुत प्रभावित करती थीं।

उत्तर 5. जब लेखक का ऑपरेशन सफल हो गया था तब मराठी के एक बड़े कवि विंदा करंदीकर लेखक से मिलने आए थे। उन्होंने लेखक से कहा था कि, "भारती, ये सैकड़ों महापुरुष जो पुस्तक-रूप में तुम्हारे चारों ओर उपस्थित हैं, इन्हीं के आशीर्वाद से तुम बचे हो। इन्होंने तुम्हें दोबारा जीवन दिया है।" लेखक ने मन-ही-मन सभी को प्रणाम किया-विंदा को भी, इन महापुरुषों को भी। यहाँ लेखक भी मानता था कि उसके द्वारा एकत्रित की गई पुस्तकों में उसकी जान बसती है।

उत्तर 6. लेखक के पास 'हरि भवन' पुस्तकालय का सदस्य बनने भर के लिए पैसे न थे, इस कारण वह पुस्तकालय से पुस्तकें इश्यू कराकर घर नहीं ला सकता था। लेखक ने बहुत से उपन्यास पढ़े। लेखक को हिंदी के ही माध्यम से सारी दुनिया के

कथा-पात्रों को जानना बहुत अधिक आकर्षक लगता था। इसलिए जैसे ही लाइब्रेरी खुलती थी वह पुस्तकालय पहुँच जाता था। किंतु पुस्तकालय में पढ़ते हुए कोई कहानी या पुस्तक पूरी हो या न हो, लाइब्रेरी बंद होने के समय उसे उठ जाना ही पड़ता था, जबकि उसका मन लाइब्रेरी से जाना नहीं चाहता था। ऐसे में उसे अनिच्छापूर्वक उठना पड़ता था।

विद्यार्थी के लिए पुस्तकालय का बहुत महत्व है क्योंकि पुस्तकों से ज्ञान-विज्ञान, व्यवहार और सदाचार का विस्तार होता है। विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के लिए पुस्तकालयों का उच्च योगदान है। अतः पुस्तकालय का विद्यार्थी जीवन में प्रभावकारी महत्व होता है।